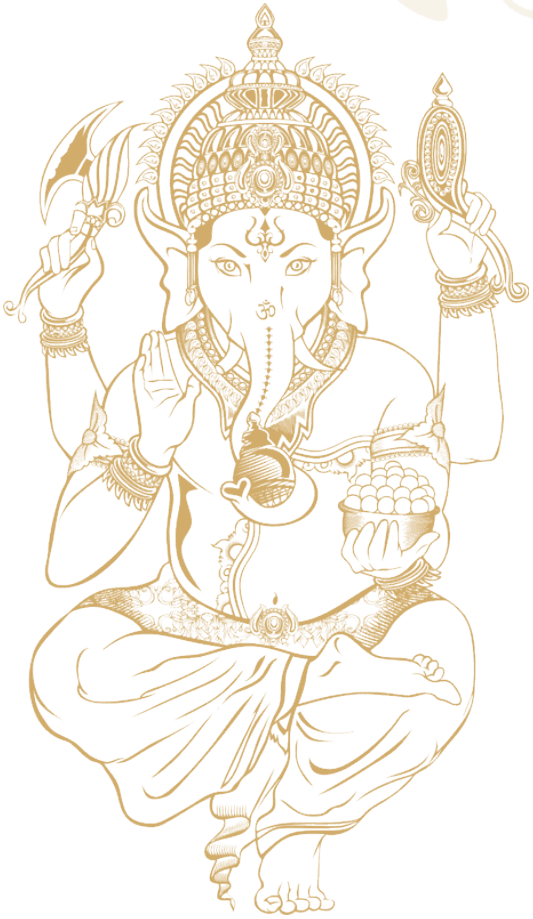

Mr. Mukesh shakya

15 Aug 1965

05:00 PM

Farrukhabad

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119848501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**15/08/1965**
दिन	रविवार
जन्म समय	**17:00:00 घंटे**
इष्ट	28:14:09 घटी
स्थान	**Farrukhabad**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	27:23:00 उत्तर
रेखांश	79:35:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:11:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:48:20 घंटे
वेलान्तर	-00:04:29 घंटे
साम्पातिक काल	14:23:00 घंटे
सूर्योदय	05:42:20 घंटे
सूर्यास्त	18:49:33 घंटे
दिनमान	13:07:13 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	29:02:23 कर्क
लग्न के अंश	28:44:46 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	धनु - गुरु
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उ०भाद्रपद - 1**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	सुकर्मा
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दू-दूधेश्वर
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1887	श्रावण	24
पंजाबी	संवत : 2022	श्रावण	31
बंगाली	सन् : 1372	श्रावण	30
तमिल	संवत : 2022	आदी	31
केरल	कोल्लम : 1140	कर्कदम	31
नेपाली	संवत : 2022	श्रावण	31
चैत्रादि	संवत : 2022	भाद्रपद	कृष्ण 3
कार्तिकादि	संवत : 2022	श्रावण	कृष्ण 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 19:32:41
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 16:00:28 घंटे
जन्म योग _____: उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग ___: सुकर्मा
योग समाप्ति काल _____: 17:49:21 घंटे
जन्म योग _____: सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण ___: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 06:46:52 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 02:28:48
भभोग _____: 64:48:19
भोग्य दशा काल _____: शनि 18 वर्ष 3 मा 10 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

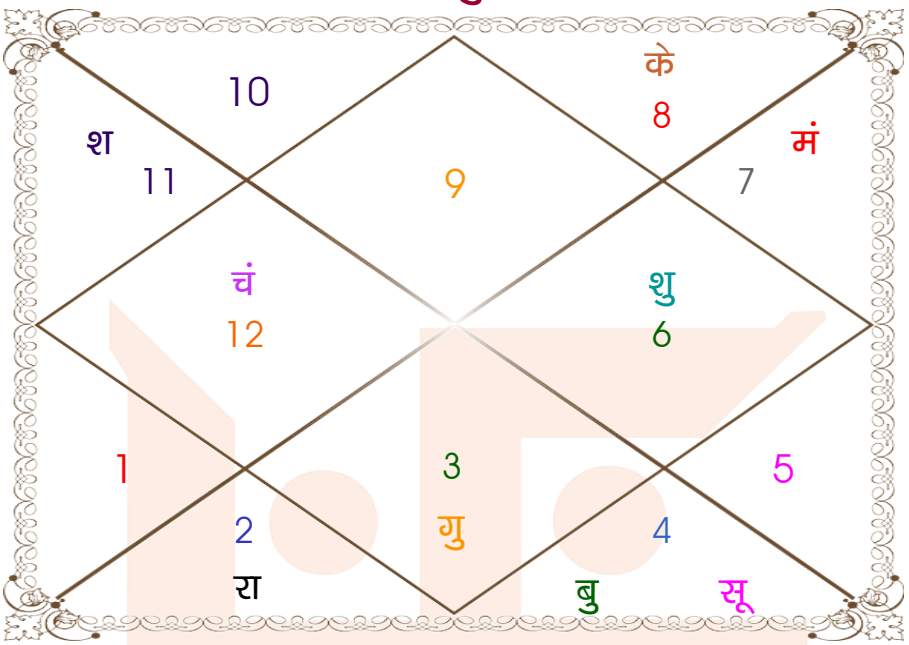

चन्द्र कुंडली

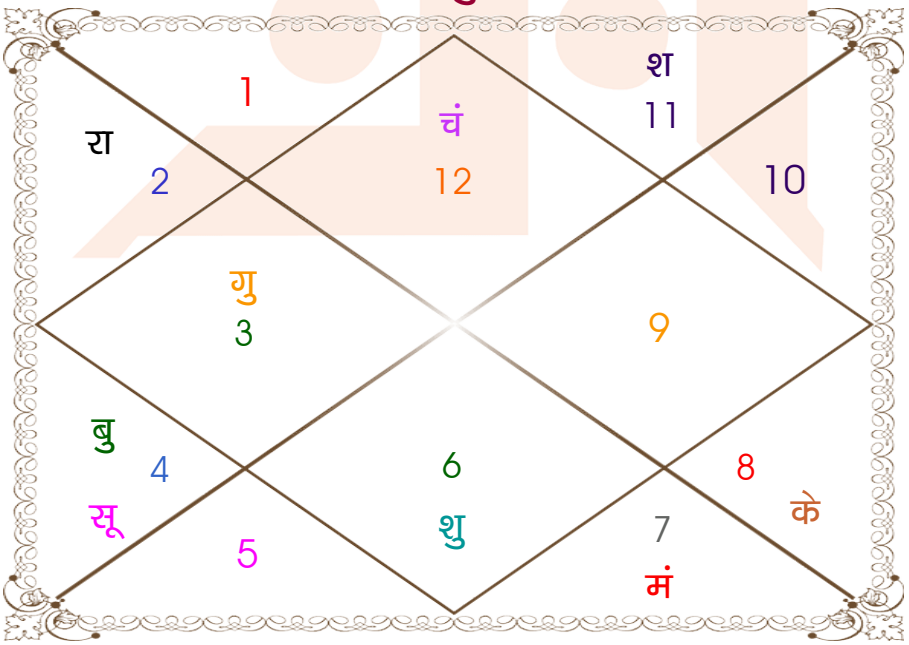

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

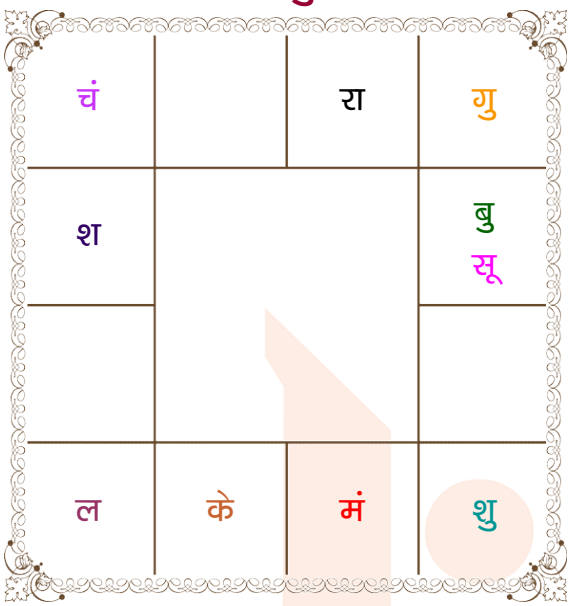

लग्न कुंडली

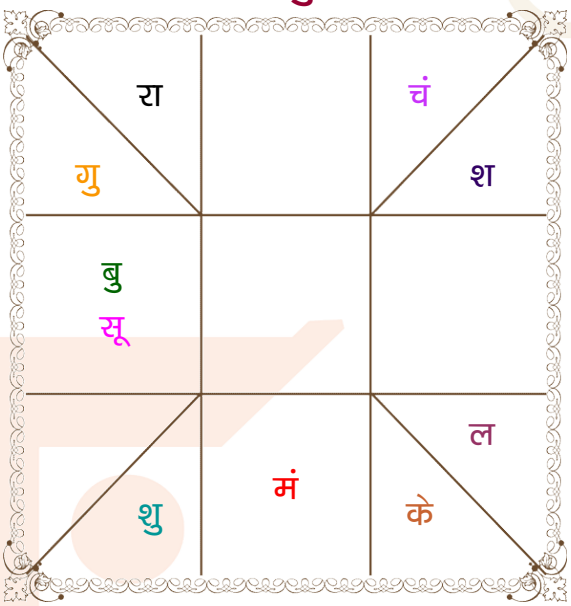

विंशोत्तरी
शनि 18वर्ष 3मा 10दि

शनि

15/08/1965

24/11/2084

शनि	25/11/1983
बुध	24/11/2000
केतु	25/11/2007
शुक्र	25/11/2027
सूर्य	25/11/2033
चन्द्र	25/11/2043
मंगल	25/11/2050
राहु	24/11/2068
गुरु	24/11/2084

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 9मा 21दि

संकटा

07/06/2019

07/06/2027

संकटा	18/03/2021
मंगला	07/06/2021
पिंगला	16/11/2021
धान्या	18/07/2022
भ्रामरी	07/06/2023
भद्रिका	17/07/2024
उल्का	16/11/2025
सिद्धा	07/06/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	28:44:46	375:19:17	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	---
सूर्य			कर्क	29:02:23	00:57:39	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र			मीन	03:50:25	12:15:56	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
मंगल			तुला	03:28:32	00:37:17	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	सम राशि
बुध	व	अ	कर्क	29:36:52	00:50:14	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
गुरु			मिथु	01:43:23	00:10:16	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	01:45:28	01:11:55	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	नीच राशि
शनि	व		कुंभ	22:04:27	00:04:01	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	स्वराशि
राहु	व		वृष	17:25:45	00:10:09	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	शनि	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	17:25:45	00:10:09	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	मित्र राशि
हर्ष			सिंह	20:23:49	00:03:35	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	---
नेप			तुला	23:56:06	00:00:32	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
प्लूटो			सिंह	21:52:24	00:02:00	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			तुला	14:44:42	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:22:22

लग्न-चलित

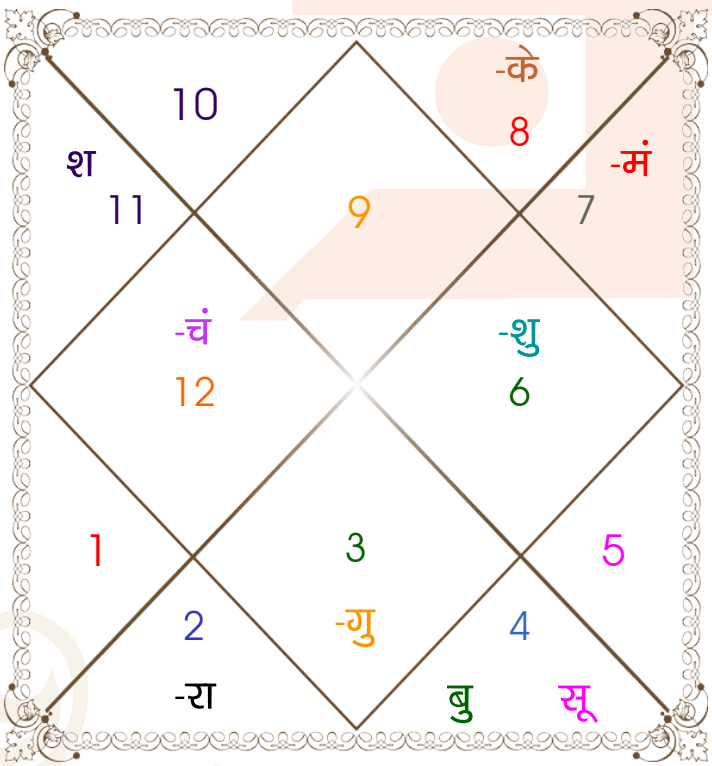

चन्द्र कुंडली

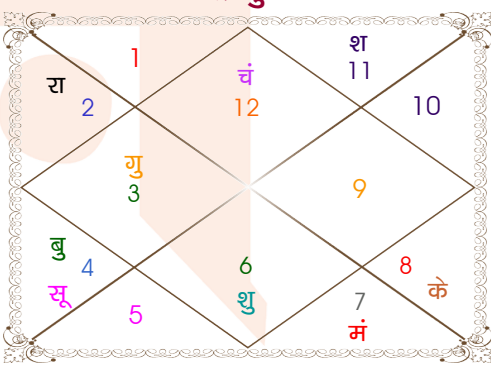

नवमांश कुंडली

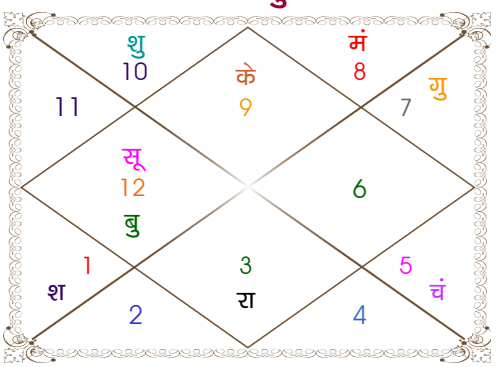

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	धनु	16:24:45	धनु	28:44:46
2	मकर	16:24:45	कुम्भ	04:04:45
3	कुम्भ	21:44:44	मीन	09:24:43
4	मीन	27:04:42	मेष	14:44:42
5	मेष	27:04:42	वृष	09:24:43
6	वृष	21:44:44	मिथुन	04:04:45
7	मिथुन	16:24:45	मिथुन	28:44:46
8	कर्क	16:24:45	सिंह	04:04:45
9	सिंह	21:44:44	कन्या	09:24:43
10	कन्या	27:04:42	तुला	14:44:42
11	तुला	27:04:42	वृश्चिक	09:24:43
12	वृश्चिक	21:44:44	धनु	04:04:45

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	28:44:46
2	कुम्भ	06:11:01
3	मीन	13:23:34
4	मेष	14:44:42
5	वृष	10:33:46
6	मिथुन	03:58:08
7	मिथुन	28:44:46
8	सिंह	06:11:01
9	कन्या	13:23:34
10	तुला	14:44:42
11	वृश्चिक	10:33:46
12	धनु	03:58:08

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

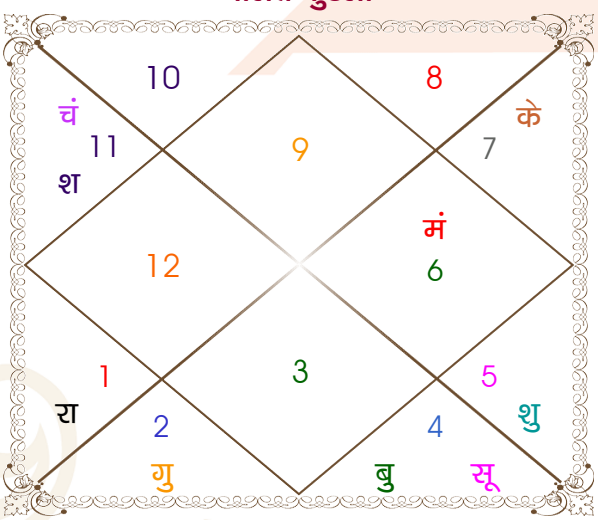

भाव कुंडली

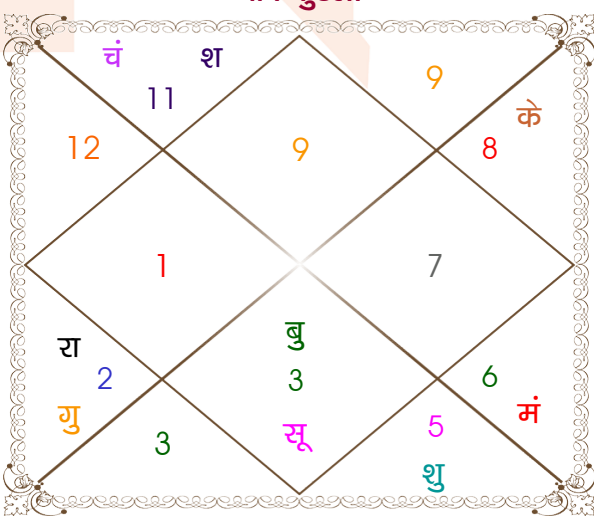

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	मुदित	निद्रा	3.94	43 %
चंद्र	मातृ	मातृ	मृत	शक्त	कौतुक	7.25	43 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	बाल	निपीदित	नेत्रपाणि	2.18	57 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	विकल	नेत्रपाणि	0.00	31 %
गुरु	कलत्र	धन	बाल	खल	प्रकाश	5.71	43 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत	भीत	नेत्रपाणि	1.50	47 %
शनि	भ्रातृ	आयु	वृद्ध	स्वस्थ	प्रकाश	2.41	73 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	नेत्रपाणि	0.00	34 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	मुदित	नेत्रपाणि	0.00	34 %
कुल						22.99	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

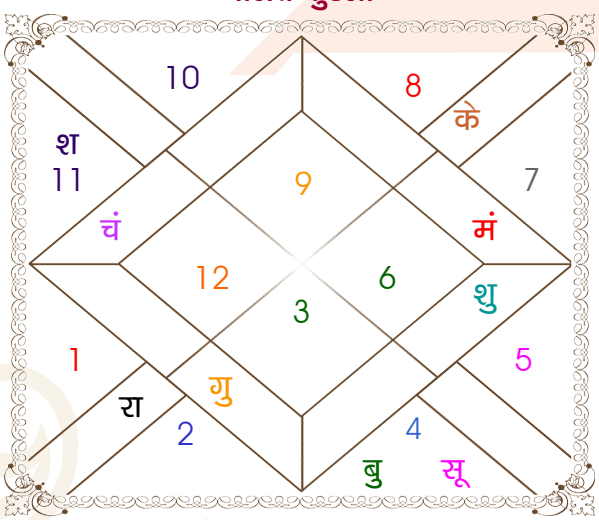

लग्न-चलित

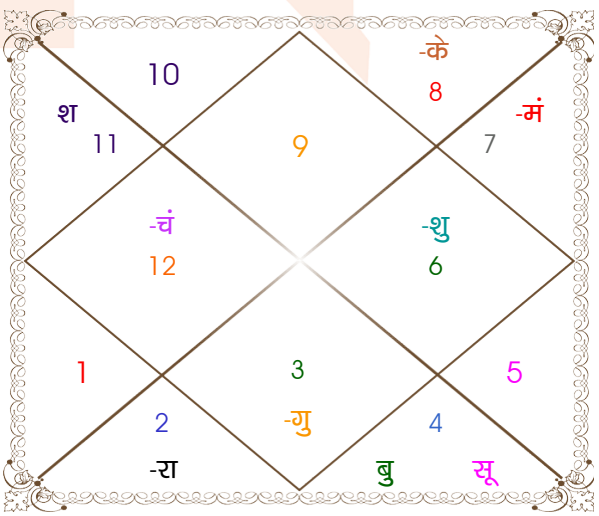

सुदर्शन चक्र

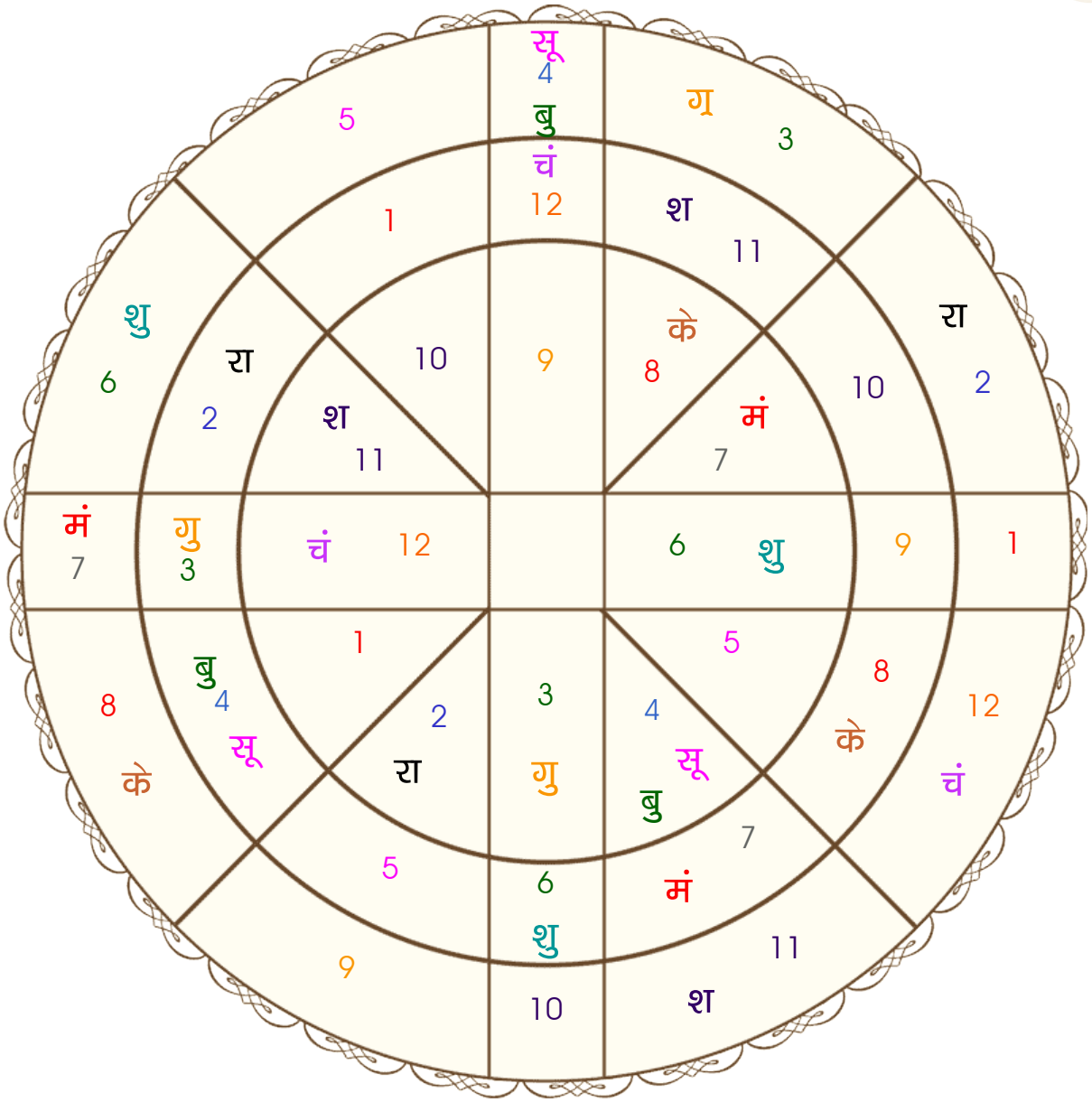

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शनि 18 वर्ष 1 मास 20 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	29:08:13	चंद्र	बुध	शनि	चंद्र
चंद्र		मीन	03:56:15	गुरु	शनि	शनि	बुध
मंगल		तुला	03:34:23	शुक्र	मंगलशुक्र		राहु
बुध	व	कर्क	29:42:42	चंद्र	बुध	शनि	राहु
गुरु		मिथु	01:49:13	बुध	मंगलबुध		शनि
शुक्र		कन्या	01:51:19	बुध	सूर्य	गुरु	बुध
शनि	व	कुंभ	22:10:18	शनि	गुरु	शनि	बुध
राहु	व	वृष	17:31:35	शुक्र	चंद्र	शनि	गुरु
केतु	व	वृश्चि	17:31:35	मंगलबुध	बुध		चंद्र
हर्ष		सिंह	20:29:39	सूर्य	शुक्र	गुरु	शनि
नेप		तुला	24:01:57	शुक्र	गुरु	बुध	बुध
प्लूटो		सिंह	21:58:14	सूर्य	शुक्र	शनि	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	28:50:37	गुरु	सूर्य	मंगलबुध	
2	कुंभ	06:16:51	शनि	मंगलचंद्र	बुध	
3	मीन	13:29:24	गुरु	शनि	राहु	शनि
4	मेष	14:50:32	मंगलशुक्र	शुक्र	शनि	
5	वृष	10:39:36	शुक्र	चंद्र	चंद्र	बुध
6	मिथु	04:03:59	बुध	मंगलशुक्र	गुरु	
7	मिथु	28:50:37	बुध	गुरु	सूर्य	चंद्र
8	सिंह	06:16:51	सूर्य	केतु	राहु	शनि
9	कन्या	13:29:24	बुध	चंद्र	राहु	शुक्र
10	तुला	14:50:32	शुक्र	राहु	केतु	राहु
11	वृश्चि	10:39:36	मंगलशनि	सूर्य	शनि	
12	धनु	04:03:59	गुरु	केतु	चंद्र	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:16:31

फॉरच्युना : सिंह 03:38:39

लग्न कुंडली

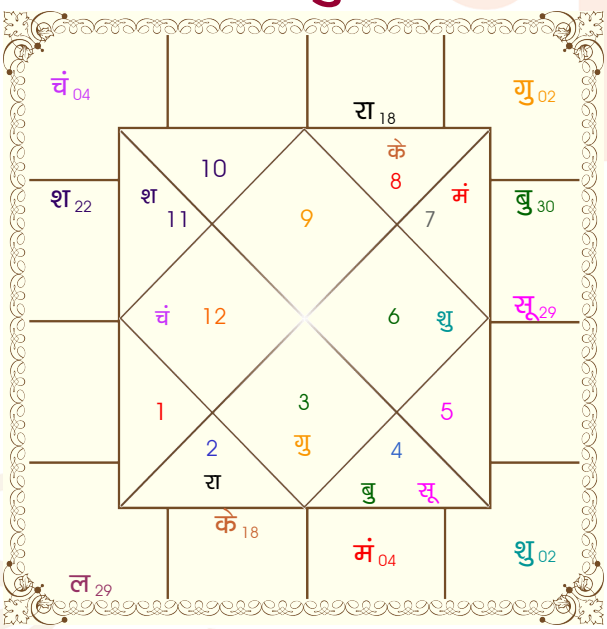

भाव कुंडली

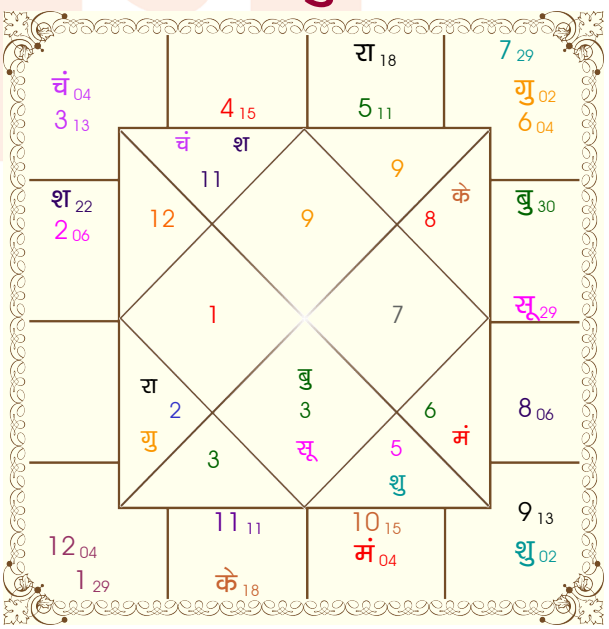

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	गुरु- शनि-
2	चंद्र+ शनि, राहु,
3	गुरु- शनि-
4	मंगल, गुरु-
5	गुरु, शुक्र- शनि, राहु,
6	सूर्य- बुध, केतु-
7	सूर्य+ बुध+ शुक्र, केतु+
8	सूर्य- शुक्र+
9	सूर्य- मंगल+ बुध, गुरु, केतु-
10	शुक्र-
11	मंगल, गुरु- केतु,
12	गुरु- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6- 7+ 8- 9-
चंद्र	2+
मंगल	4, 9+ 11,
बुध	6, 7+ 9,
गुरु	1- 3- 4- 5, 9, 11- 12-
शुक्र	5- 7, 8+ 10-
शनि	1- 2, 3- 5, 12-
राहु	2, 5,
केतु	6- 7+ 9- 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	मंगल
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	श	गु
2	चं रा	चं श	चं	श
3	--	--	श	गु
4	--	--	मं गु	मं
5	श	गु रा	--	शु
6	--	--	सू बु के	बु
7	सू बु शु के	सू बु	सू बु के	बु
8	--	शु	शु	सू
9	मं गु	मं	सू बु के	बु
10	--	--	--	शु
11	--	के	मं गु	मं
12	--	--	श	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	8	1	कर्क	7
चंद्र	---	5,9	मीन	2
मंगल	4,11	2,6	तुला	9
बुध	6,7,9	---	कर्क	7
गुरु	1,3,12	7	मिथुन	5
शुक्र	5,10	4	कन्या	8
शनि	2	3,11	कुम्भ	2
राहु	---	10	वृष	5
केतु	---	8,12	वृश्चिक	11

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	6,7,9	---	7	2	3,11	2
चंद्र	2	3,11	2	2	3,11	2
मंगल	4,11	2,6	9	5,10	4	8
बुध	6,7,9	---	7	2	3,11	2
गुरु	4,11	2,6	9	6,7,9	---	7
शुक्र	8	1	7	1,3,12	7	5
शनि	1,3,12	7	5	2	3,11	2
राहु	---	5,9	2	2	3,11	2
केतु	6,7,9	---	7	6,7,9	---	7

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	119.04	333.84	183.48	119.61	61.72	151.76	322.07	47.43	227.43	140.40	203.94	141.87
सूर्य	--	--	तृती	युति	--	--	--	--	--	--	चतु	--
119.04	0.00	0.00	1.19	9.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.70	0.00
चंद्र	--	--	--	--	चतु	सप्त	युति	--	--	सप्त	--	सप्त
333.84	0.00	0.00	0.00	0.00	2.55	9.76	3.32	0.00	0.00	1.62	0.00	3.12
मंगल	--	षष्ठ	--	--	--	--	--	8वां	--	--	--	--
183.48	0.00	0.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.09	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	चतु	--
119.61	9.98	0.00	1.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.25	0.00
गुरु	तृती	--	5वां	तृती	--	चतु	--	युति	सप्त	--	--	--
61.72	2.29	0.00	9.83	2.55	0.00	3.00	0.00	0.74	0.74	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति	--	युति
151.76	0.00	9.76	0.00	0.00	0.00	0.00	5.28	0.00	0.00	3.72	0.00	5.10
शनि	--	युति	--	--	--	सप्त	--	चतु	10वा	सप्त	--	सप्त
322.07	0.00	3.32	0.00	0.00	0.00	5.28	0.00	1.04	8.84	9.85	0.00	10.00
राहु	पंचा	--	--	पंचा	युति	--	--	--	सप्त	चतु	--	चतु
47.43	0.82	0.00	0.00	0.96	0.74	0.00	0.00	0.00	10.00	2.14	0.00	1.19
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	चतु	सप्त	--	--	--	--
227.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.74	0.00	1.04	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	सप्त	--	--	--	युति	सप्त	--	चतु	--	तृती	युति
140.40	0.00	1.62	0.00	0.00	0.00	3.72	9.85	0.00	2.14	0.00	1.80	9.88
नेप	--	--	--	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--
203.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	युति	सप्त	--	चतु	युति	तृती	--
141.87	0.00	3.12	0.00	0.00	0.00	5.10	10.00	0.00	1.19	9.88	2.57	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	268.75	304.08	339.41	14.74	39.41	64.08	88.75	124.08	159.41	194.74	219.41	244.08
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	पंच
119.04	0.00	8.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.64	0.83	0.00	0.00	0.75
चंद्र	--	--	युति	नवां	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
333.84	0.00	0.00	8.35	0.15	0.34	2.99	0.70	0.93	8.35	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
183.48	8.80	2.96	0.00	3.81	8.13	0.00	0.00	0.00	0.00	3.81	0.00	2.96
बुध	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	पंच
119.61	0.21	8.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.93	0.95	0.00	0.00	1.17
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	--	5वां	--	सप्त
61.72	0.00	9.70	0.00	0.00	0.00	9.70	0.00	2.45	0.00	2.06	0.00	9.70
शुक्र	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु
151.76	2.11	0.00	6.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.96	0.00	0.00	2.46
शनि	--	--	--	3रा	--	--	--	--	--	--	10वा	10वा
322.07	0.00	0.00	0.00	7.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.42	3.09
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
47.43	0.00	0.00	0.00	0.00	6.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.68	0.00
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
227.43	0.00	0.00	0.00	0.00	6.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.68	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
140.40	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	तृती	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	नवां
203.94	0.92	0.00	0.73	5.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.72	0.00	0.97
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
141.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	268.75	306.18	343.39	14.74	40.56	63.97	88.75	126.18	163.39	194.74	220.56	243.97
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	पंच
119.04	0.00	7.33	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.33	0.53	0.00	0.00	0.83
चंद्र	--	--	युति	नवां	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
333.84	0.00	0.00	5.40	0.15	0.00	3.00	0.70	0.00	5.40	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
183.48	8.80	2.28	0.00	3.81	7.37	0.00	0.00	0.00	0.00	3.81	0.00	2.98
बुध	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच
119.61	0.21	7.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.73	0.00	0.00	0.00	1.25
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	--	5वां	--	सप्त
61.72	0.00	8.93	0.00	0.00	0.00	9.72	0.00	1.18	0.00	2.06	0.00	9.72
शुक्र	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु
151.76	2.11	0.00	3.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.45	0.00	0.00	2.51
शनि	--	--	--	3रा	--	--	--	--	--	--	10वा	10वा
322.07	0.00	0.00	0.00	7.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.57	3.19
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--
47.43	0.00	0.00	0.00	0.00	7.52	0.00	0.00	0.00	1.48	0.00	7.52	0.00
केतु	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
227.43	0.00	0.00	1.48	0.00	7.52	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.52	0.00
हर्ष	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
140.40	0.00	0.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.82	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	तृती	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	नवां
203.94	0.92	0.00	0.00	5.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.72	0.00	1.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
141.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

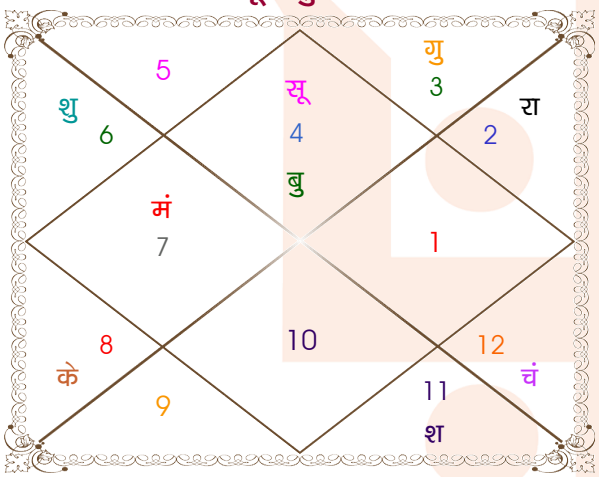

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

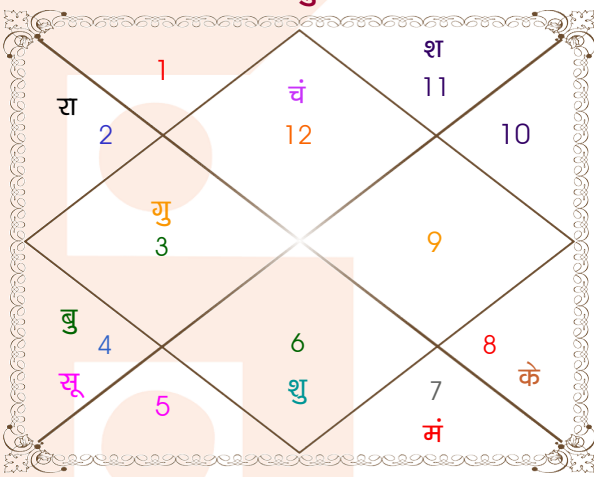

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

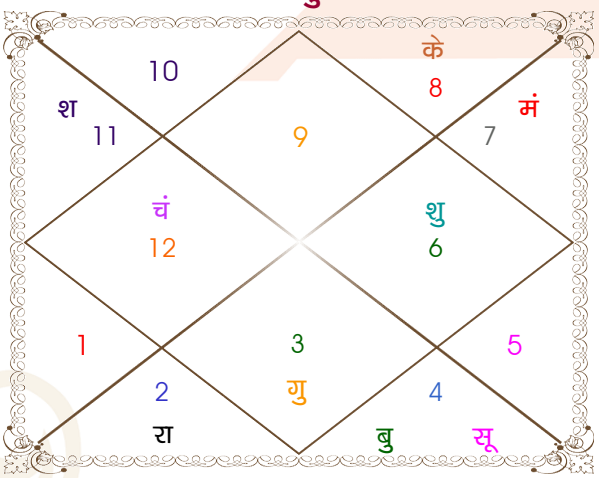

देह विचारः

होरा कुंडली

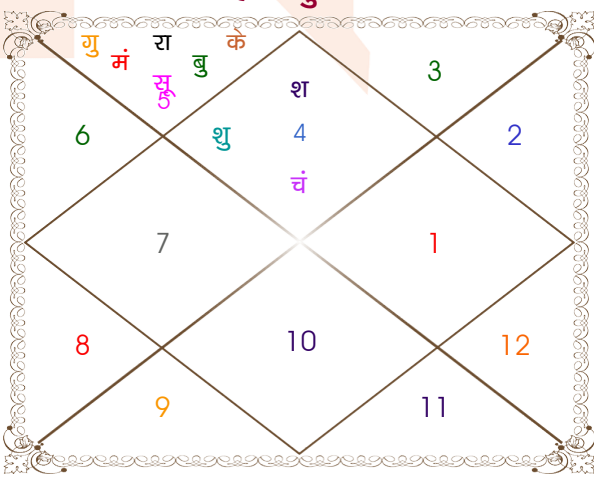

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

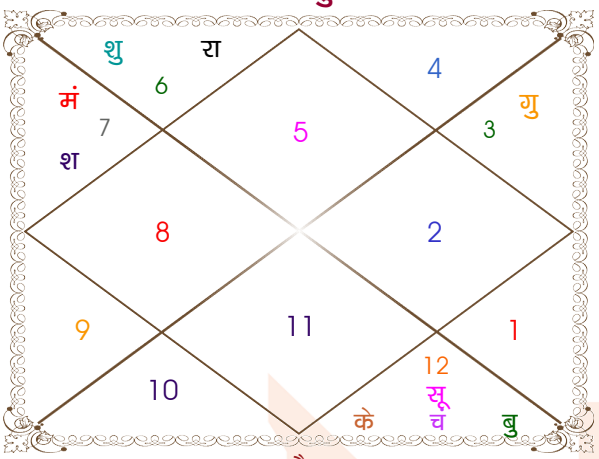

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

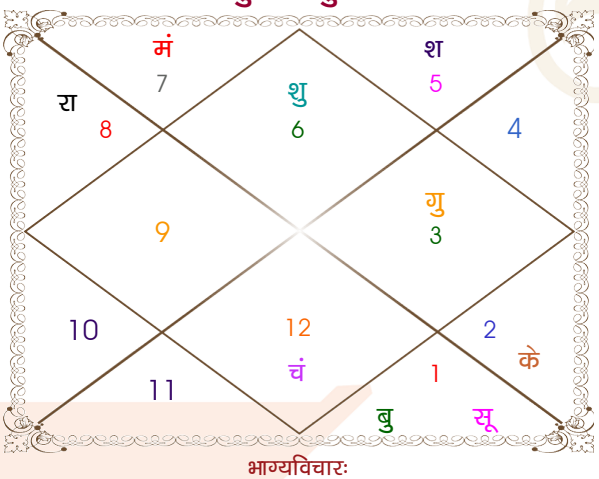

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

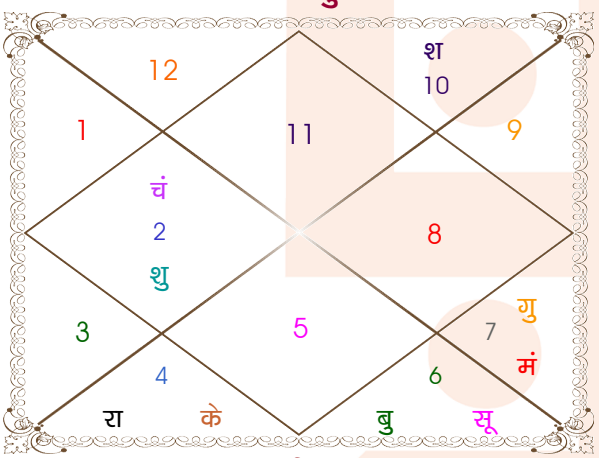

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

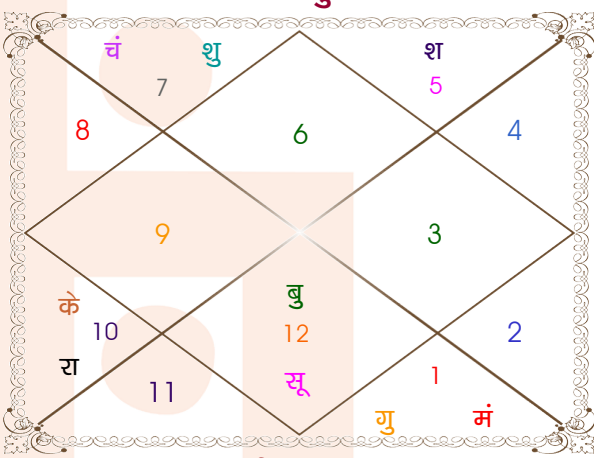

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

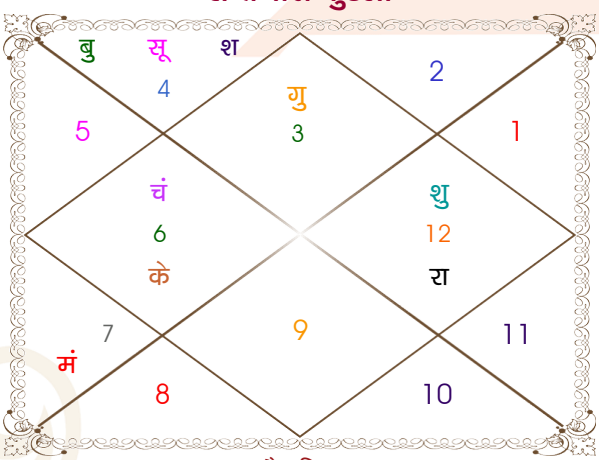

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

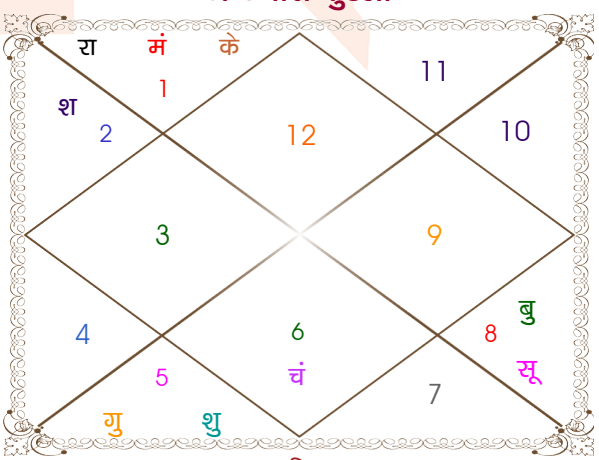

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

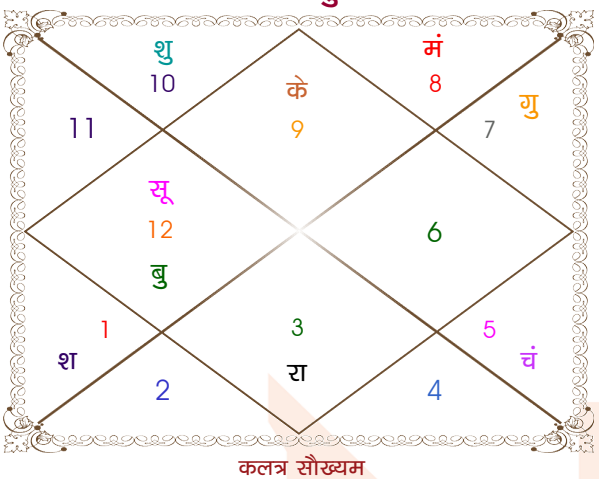

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

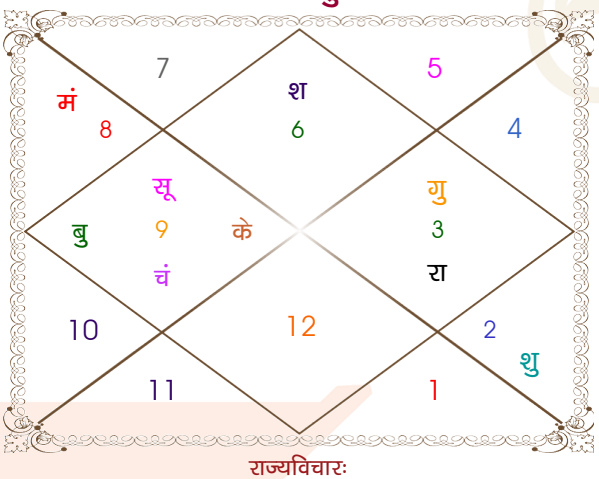

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

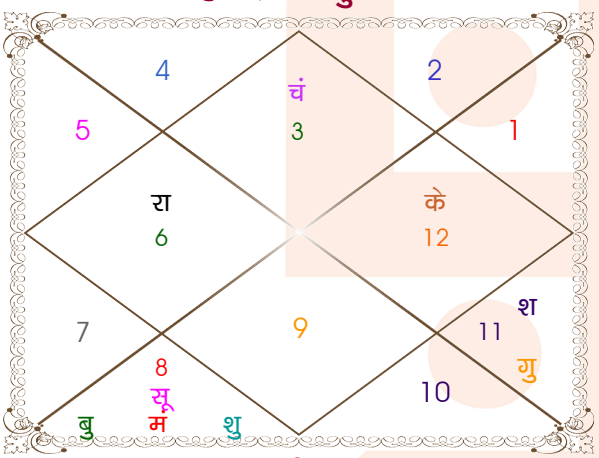

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

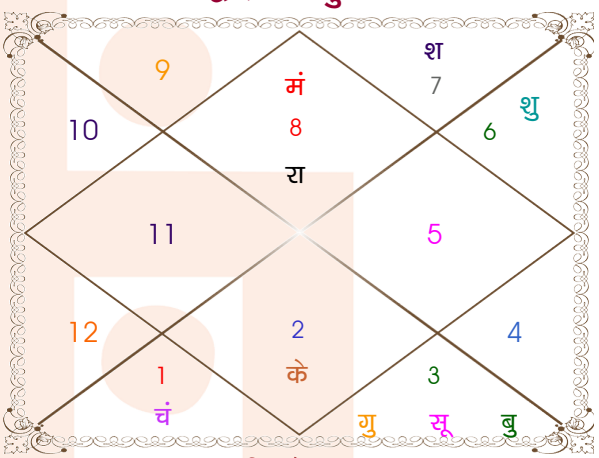

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

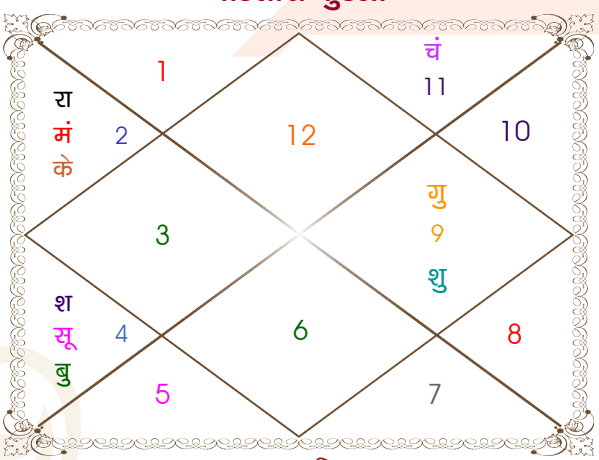

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

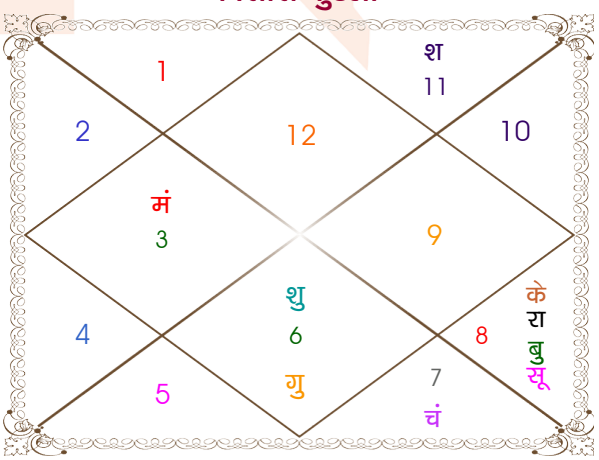

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

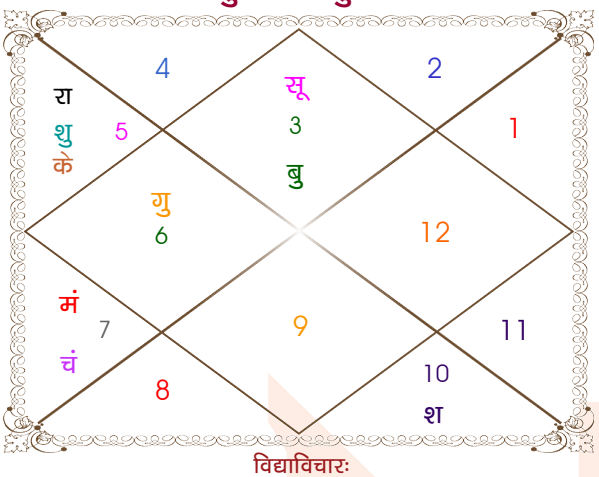

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

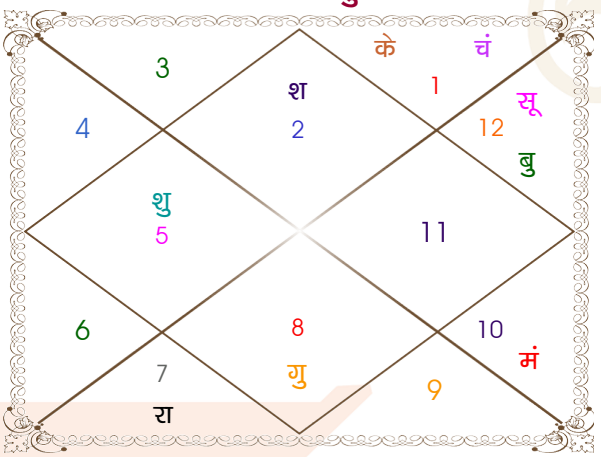

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

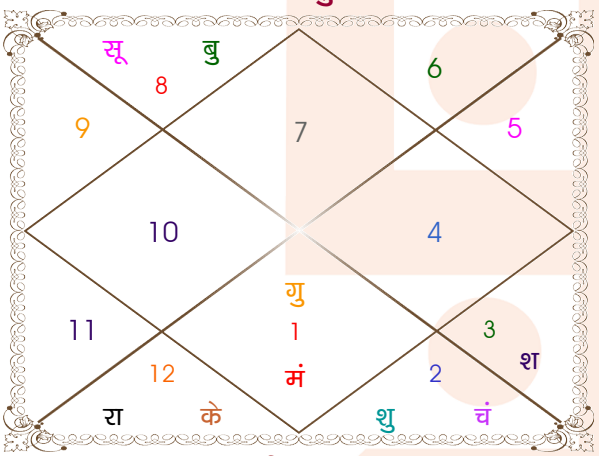

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

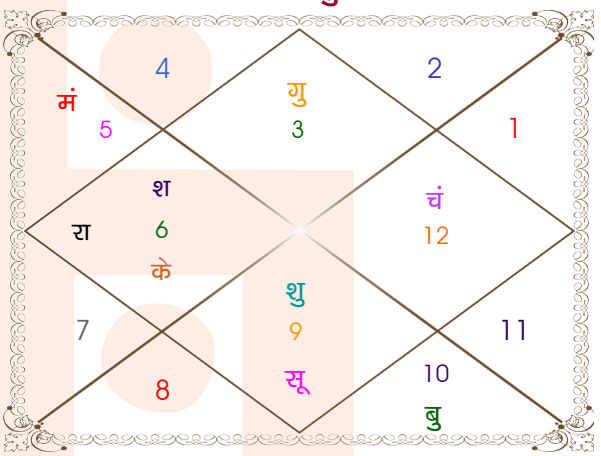

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

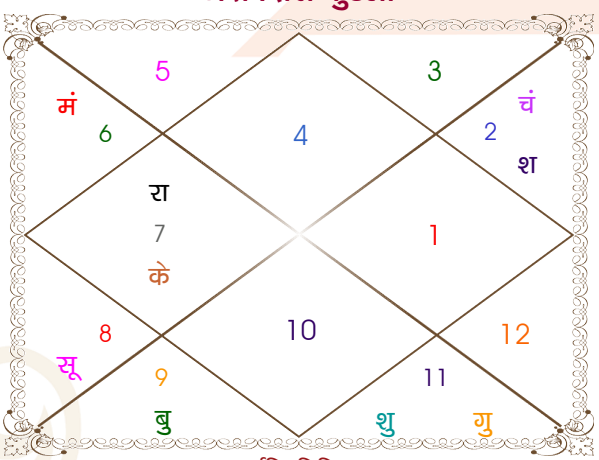

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

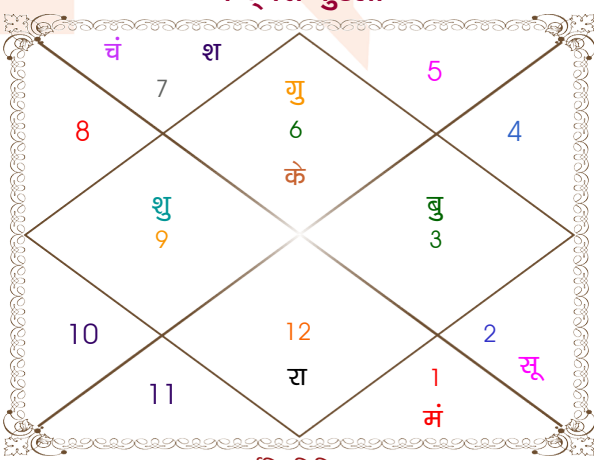

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	धनु	कर्क	मीन	तुला	कर्क	मिथु	कन्या	कुंभ	वृष	वृश्चि
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	सिंह	मीन	मीन	तुला	मीन	मिथु	कन्या	तुला	कन्या	मीन
चतुर्थांश	कन्या	मेष	मीन	तुला	मेष	मिथु	कन्या	सिंह	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	मिथु	कर्क	कन्या	तुला	कर्क	मिथु	मीन	कर्क	मीन	कन्या
नवमांश	धनु	मीन	सिंह	वृश्चि	मीन	तुला	मक	मेष	मिथु	धनु
दशमांश	कन्या	धनु	धनु	वृश्चि	धनु	मिथु	वृष	कन्या	मिथु	धनु
द्वादशांश	वृश्चि	मिथु	मेष	वृश्चि	मिथु	मिथु	कन्या	तुला	वृश्चि	वृष
षोडशांश	मीन	कर्क	कुंभ	वृष	कर्क	धनु	धनु	कर्क	वृष	वृष
विंशांश	मीन	वृश्चि	तुला	मिथु	वृश्चि	कन्या	कन्या	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	मिथु	मिथु	तुला	तुला	मिथु	कन्या	सिंह	मक	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	वृष	मीन	मेष	मक	मीन	वृश्चि	सिंह	वृष	तुला	मेष
त्रिंशांश	तुला	वृश्चि	वृष	मेष	वृश्चि	मेष	वृष	मिथु	मीन	मीन
खवेदांश	मिथु	धनु	मीन	सिंह	मक	मिथु	धनु	कन्या	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	कर्क	वृश्चि	वृष	कन्या	धनु	कुंभ	कुंभ	वृष	तुला	तुला
षष्ट्यंश	कन्या	वृष	तुला	मेष	मिथु	कन्या	धनु	तुला	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	3 व्यंजन	3 व्यंजन	5 सिंहान	6 केरल
बुध	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
गुरु	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
शुक्र	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
शनि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
केतु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.70	13.05	17.30	12.00	10.80	14.80	11.75	12.00	11.20
सप्तवर्ग	14.10	12.55	17.18	11.25	10.80	14.63	11.38	12.25	10.65
दशवर्ग	12.93	11.43	17.98	13.25	11.35	15.53	11.13	12.75	10.15
षोडशवर्ग	13.55	11.38	17.03	12.80	11.33	14.65	11.38	12.25	11.25

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	24	40	22	45	49	8	19
सप्तवर्गज बल	116	83	158	86	68	122	84
ओजयुग्मक बल	0	15	15	0	30	30	30
केन्द्र बल	30	60	30	30	60	60	15
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	15	0	0
कुल स्थान बल	170	198	239	161	221	220	149
कुल दिग्बल	35	46	56	10	9	14	18
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	12	97	12	12	48	48	12
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	97	31	16	48	60	33	38
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	190	152	82	135	205	117	193
कुल चेष्टाबल	0	0	29	48	22	22	53
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	1	-3	7	0	-7	11	-5
कुल षट्बल	455	444	430	380	484	428	416
रूप षट्बल	7.6	7.4	7.2	6.3	8.1	7.1	6.9
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.2	1.4	0.9	1.2	1.3	1.4
संबंधित पद	1	6	2	7	5	4	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	31.72	44.15	25.01	46.51	32.69	13.68	31.87
कष्ट फल	25.20	15.12	34.59	13.36	20.57	44.14	17.34

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	484	416	484	430	428	380	380	455	380	428	430	484
भावदिग्बल	30	50	50	0	10	10	0	40	20	30	20	50
भावदृष्टि बल	46	96	52	11	-14	-2	-2	11	46	73	52	75
कुल भाव बल	560	562	587	441	424	388	379	506	446	530	502	610
रूप भाव बल	9.3	9.4	9.8	7.4	7.1	6.5	6.3	8.4	7.4	8.8	8.4	10.2
संबंधित पद	4	3	2	9	10	11	12	6	8	5	7	1

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

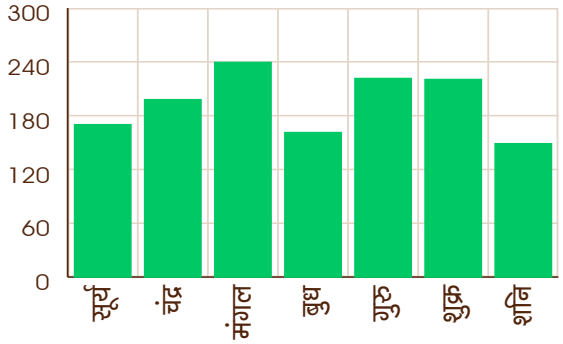

दिग्बल

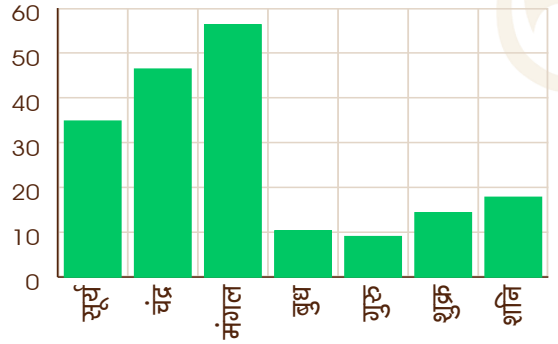

कालबल

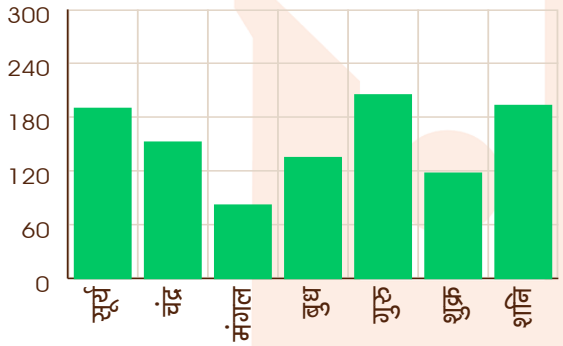

चेष्टाबल

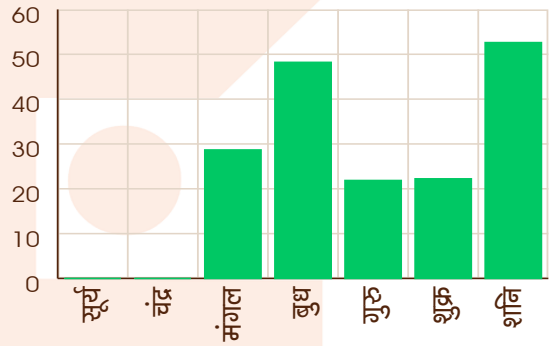

नैसर्गिक बल

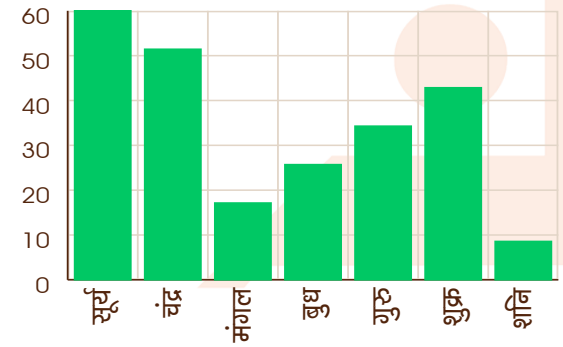

दृग्बल

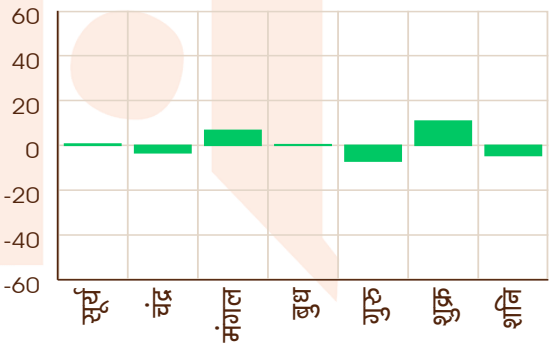

रूप षट्बल

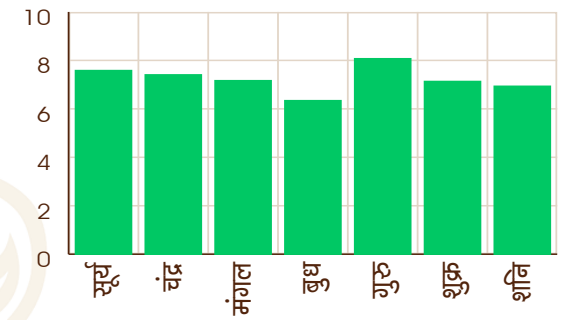

न्यूनतम षट्बल

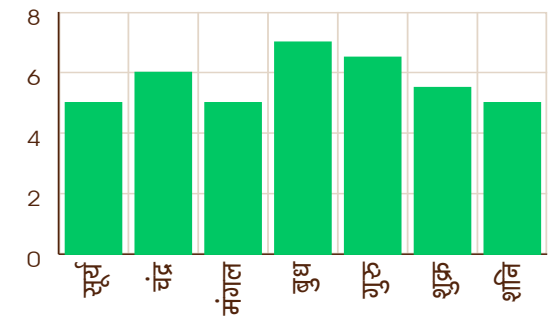

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

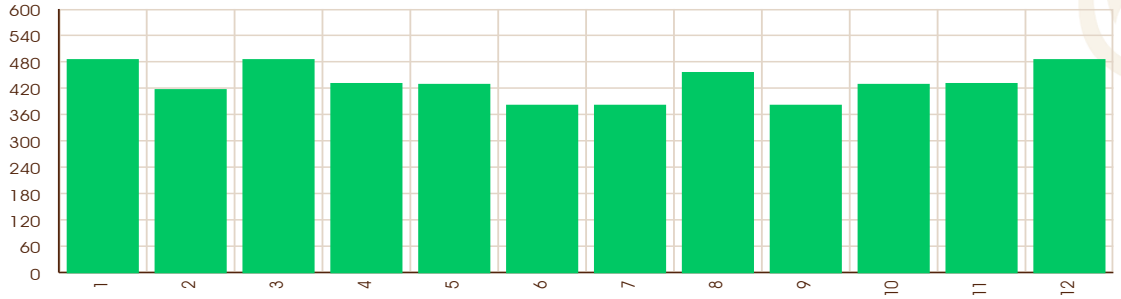

भावदिग्बल

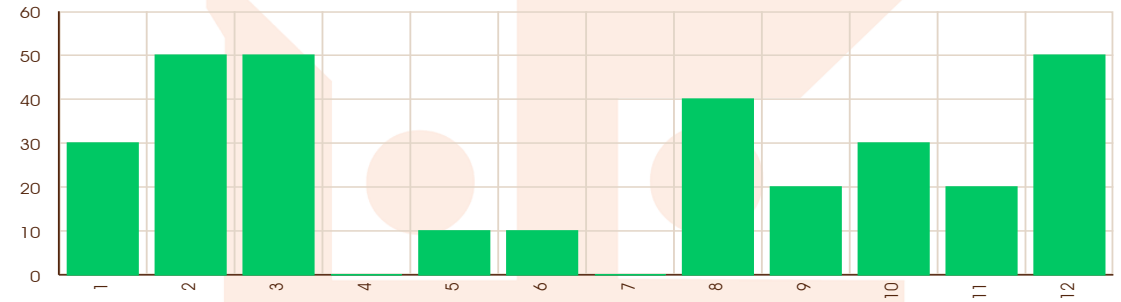

भावदृष्टि बल

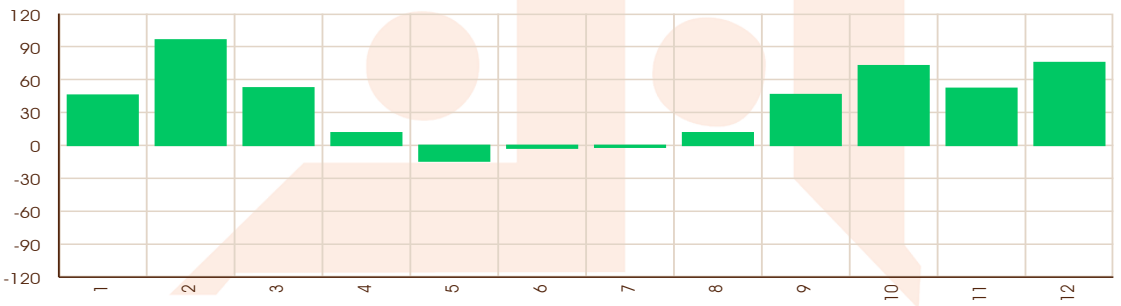

भाव बल

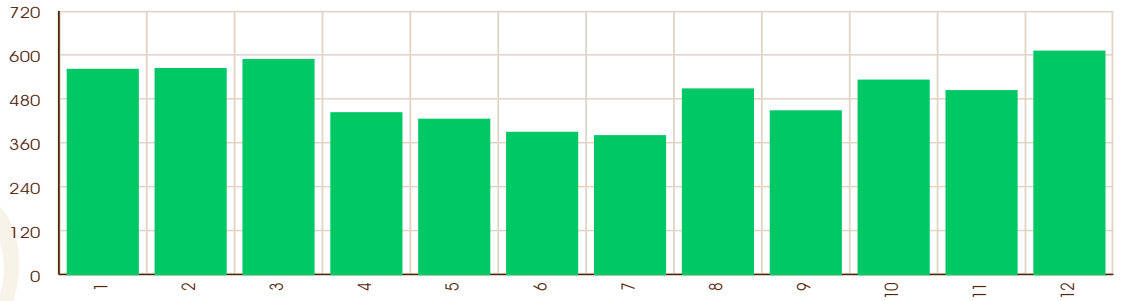

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

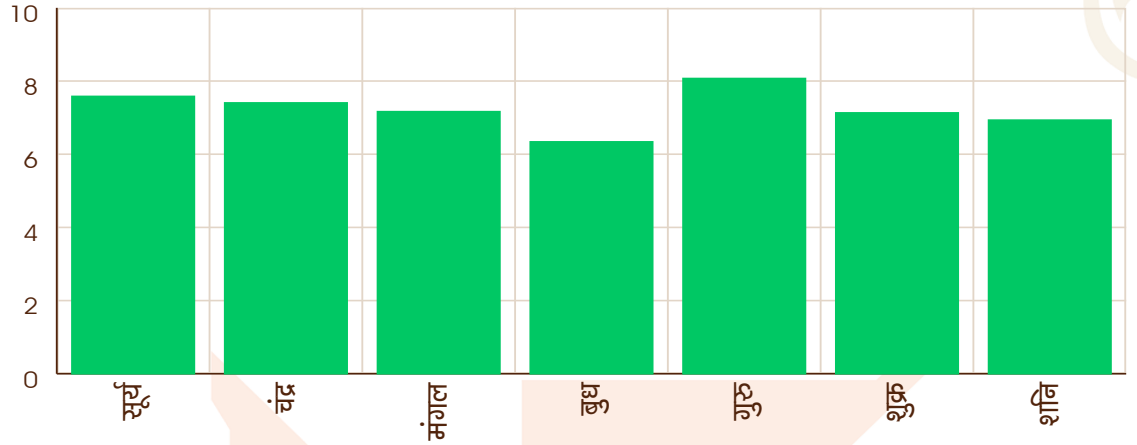

इष्ट - कष्ट फल

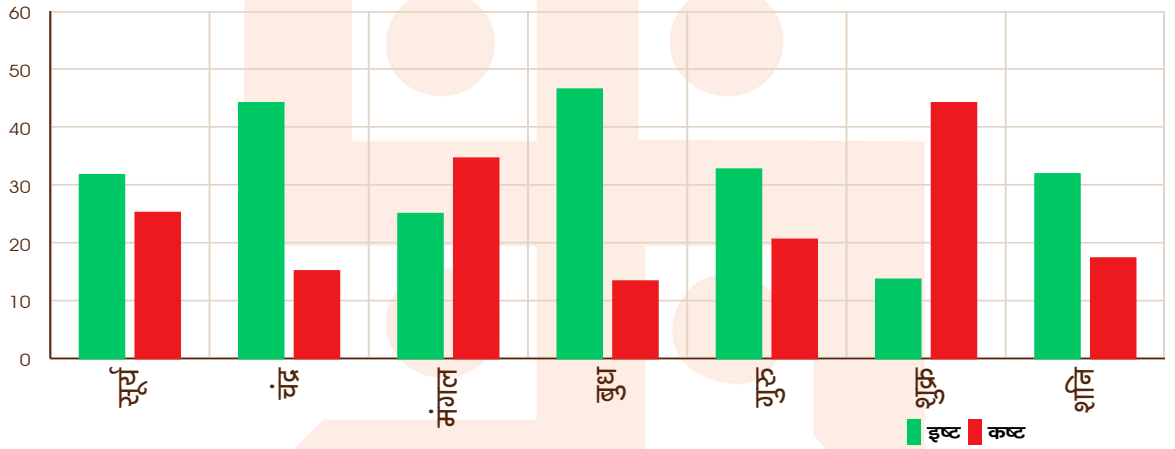

रूप भाव बल

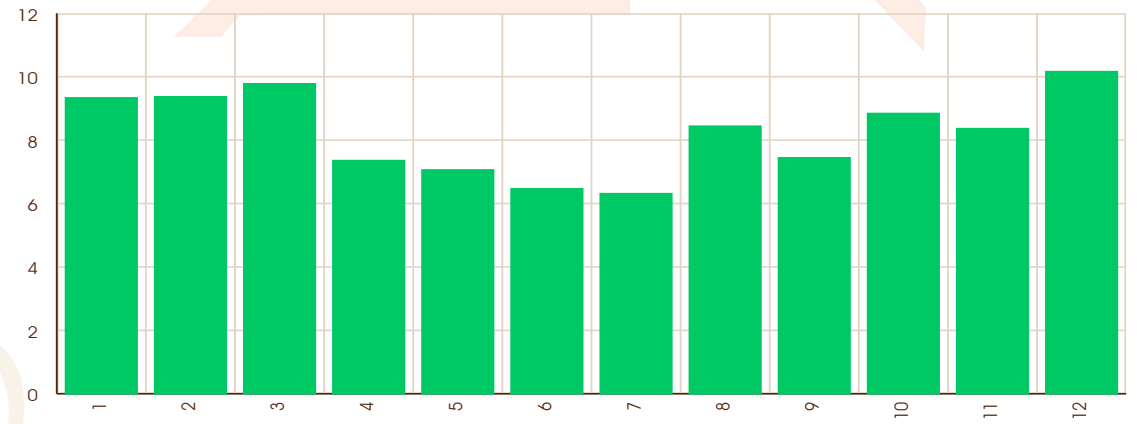

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	धनु	28:44:46	--	--	उत्तराषाढ़ा	1	21
गुलिक	गु	मक	01:40:36	--	--	उत्तराषाढ़ा	2	21
काल	का	सिंह	19:33:54	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
मृत्यु	मृ	तुला	03:16:54	--	--	चित्रा	3	14
यमघंटक	यम	वृश्चि	15:34:54	--	--	अनुराधा	4	17
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	तुला	24:38:49	--	--	विशाखा	2	16
धूम	धू	धनु	12:22:23	--	--	मूल	4	19
व्यतिपात	व्य	कर्क	17:37:37	--	--	आश्लेषा	1	9
परिवेश	परि	मक	17:37:37	--	--	श्रवण	3	22
इन्द्रचाप	इ	मिथु	12:22:23	नीच	--	आर्द्रा	2	6
उपकेतु	उप	मिथु	29:02:23	--	--	पुनर्वसु	3	7

प्राणपद	:	धनु	27:20:07	कारकाँश लग्न	:	मीन	26:31:48
भाव लग्न	:	मक	18:27:16	होरा लग्न	:	कर्क	07:52:09
घटी लग्न	:	धनु	06:06:49	वर्णद लग्न	:	मेष	06:36:55

उपग्रह कुंडली

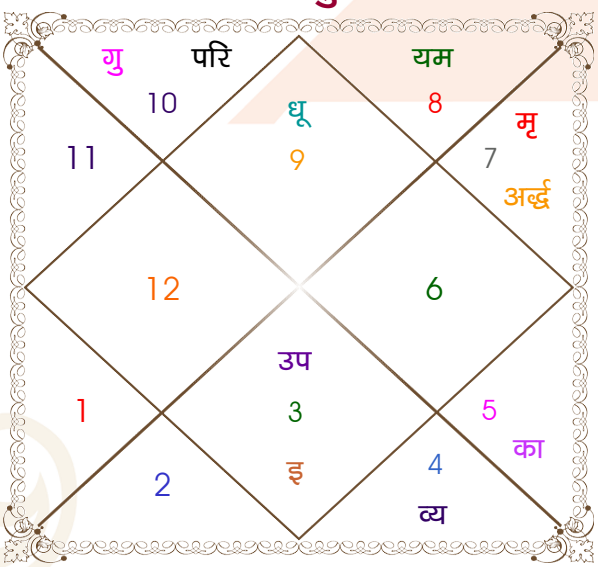

आरूढ़ कुंडली

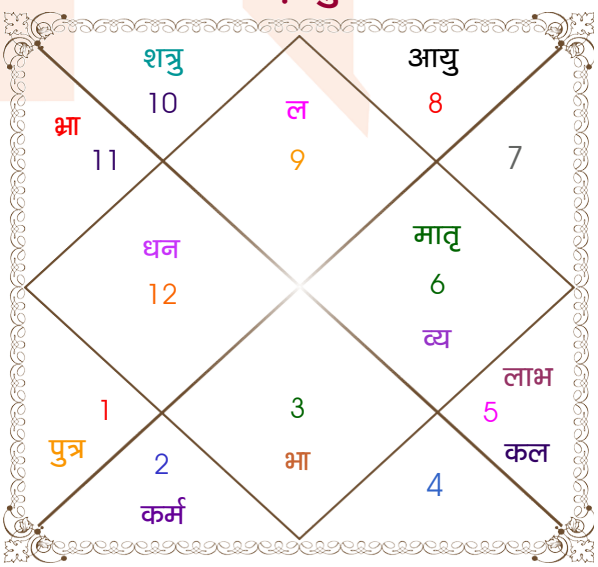

षन्नाडी चक्र

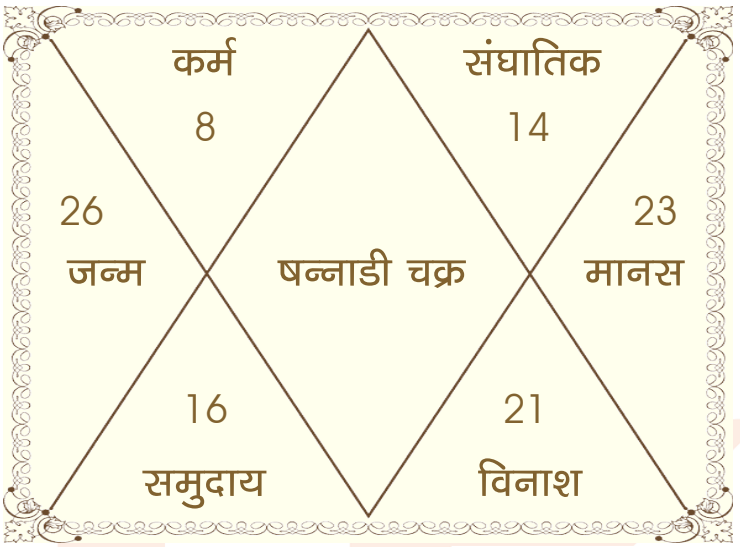

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	5	3	5	5	3	3	5	5	4	6	2	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
कुल	4	4	5	3	5	2	5	2	4	6	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	3	5	4	2	3	1	4	7	0	2	4	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
कुल	4	3	4	5	6	6	5	1	4	5	7	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
कुल	4	7	5	4	5	3	3	7	2	4	7	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	4	5	4	5	5	4	5	5	5	5	3	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	5	3	4	5	2	4	4	2	3	1	4	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चंद्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	7	2	5	2	5	6	2	4	3	4	6	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	5	2	4	4	2	3	1	4	2	5	3	39
गुरु	7	5	4	7	5	4	5	3	3	7	2	4	56
मंगल	4	7	0	2	4	4	3	5	4	2	3	1	39
सूर्य	4	6	2	2	5	3	5	5	3	3	5	5	48
शुक्र	5	5	5	3	2	4	5	4	5	5	4	5	52
बुध	5	7	4	4	3	4	5	6	6	5	1	4	54
चंद्र	4	5	3	5	2	5	2	4	6	5	4	4	49
बिन्दु	33	40	20	27	25	26	28	28	31	29	24	26	337
रेखा	23	16	36	29	31	30	28	28	25	27	32	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	3	0	3	0	0	1	0	0	0	3	2	12
गुरु	4	1	2	4	2	0	3	0	0	3	0	1	20
मंगल	0	5	0	1	0	2	3	4	0	0	3	0	18
सूर्य	1	3	0	0	2	0	3	3	0	0	3	3	18
शुक्र	3	1	1	0	0	0	1	1	3	1	0	2	13
बुध	2	3	3	0	0	0	4	2	3	1	0	0	18
चंद्र	2	0	1	1	0	0	0	0	4	0	2	0	10
रेखा	12	16	7	9	4	2	15	10	10	5	11	8	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	0	3	0	0	1	0	0	0	3	2	11
गुरु	4	0	2	4	2	0	3	0	0	3	0	1	19
मंगल	0	2	0	1	0	2	3	4	0	0	3	0	15
सूर्य	1	0	0	0	2	0	3	2	0	0	3	3	14
शुक्र	2	0	1	0	0	0	1	1	1	1	0	2	9
बुध	0	0	3	0	0	0	4	0	3	1	0	0	11
चंद्र	2	0	1	1	0	0	0	0	4	0	2	0	10
रेखा	9	4	7	9	4	2	15	7	8	5	11	8	89

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	133	84	120	84	128	75	96
ग्रह पिंड	54	30	63	62	89	28	63
शोध्य पिंड	187	114	183	146	217	103	159

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

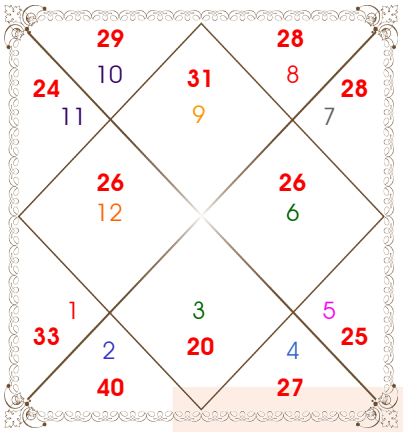

सूर्य का अष्टकवर्ग

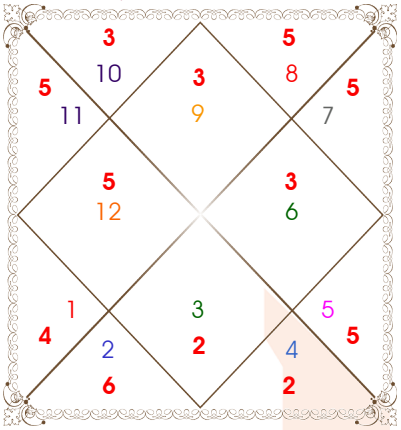

चंद्र का अष्टकवर्ग

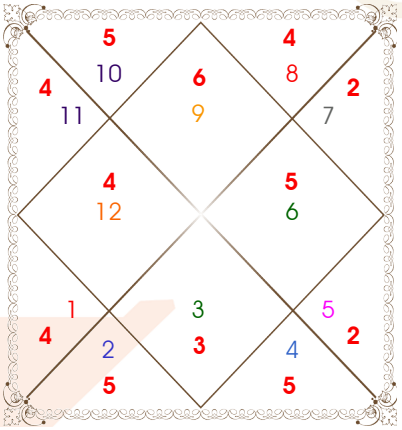

मंगल का अष्टकवर्ग

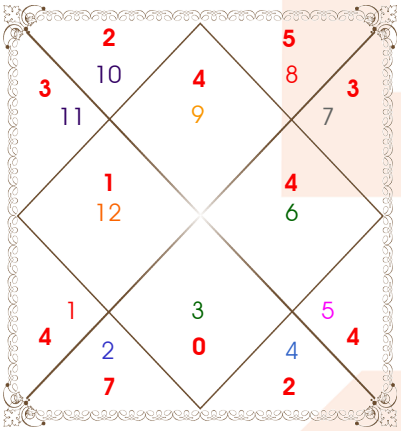

बुध का अष्टकवर्ग

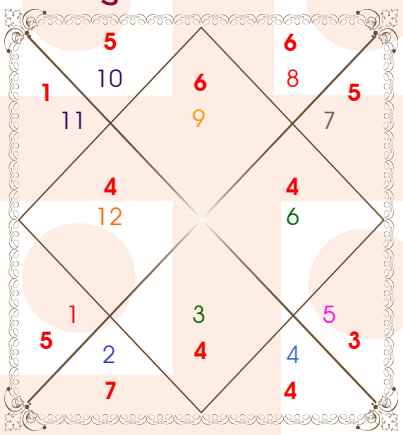

गुरू का अष्टकवर्ग

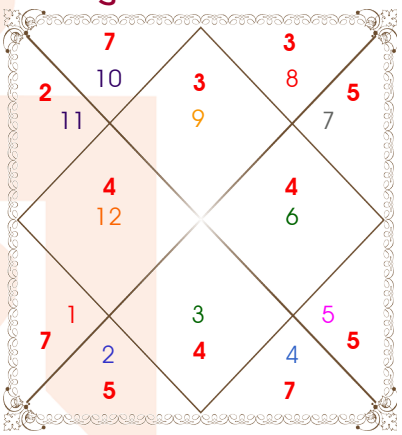

शुक्र का अष्टकवर्ग

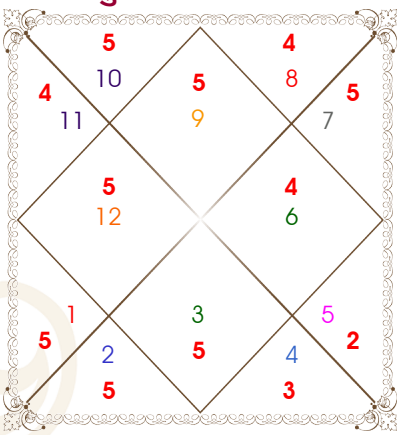

शनि का अष्टकवर्ग

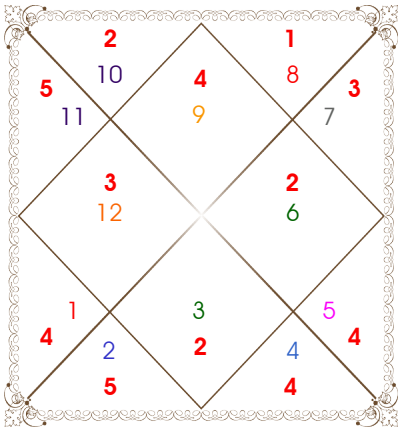

लग्न का अष्टकवर्ग

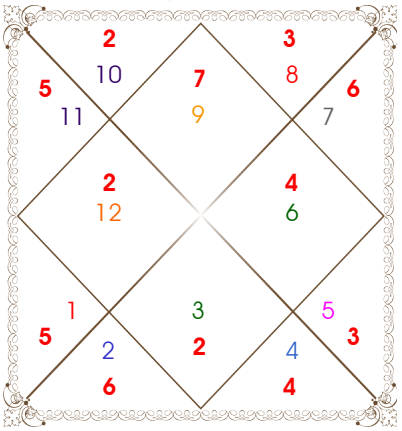

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

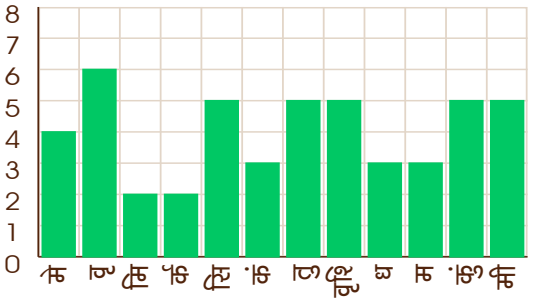

चन्द्र

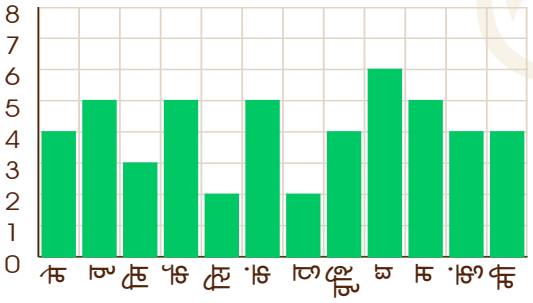

मंगल

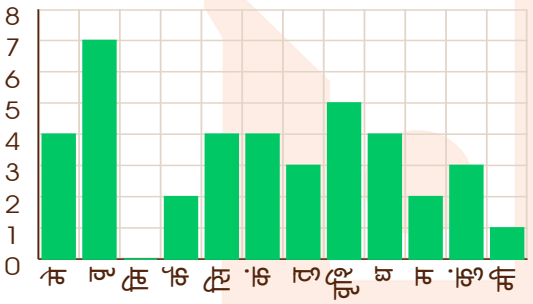

बुध

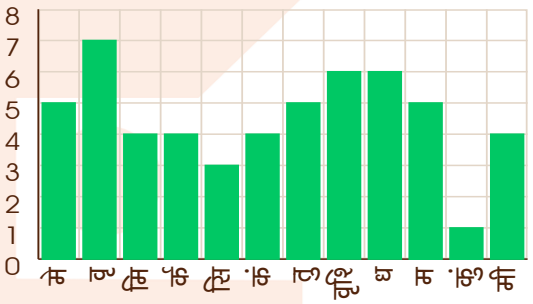

गुरु

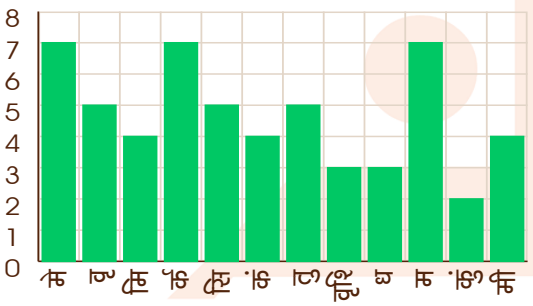

शुक्र

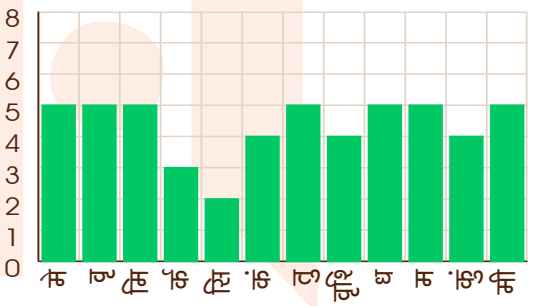

शनि

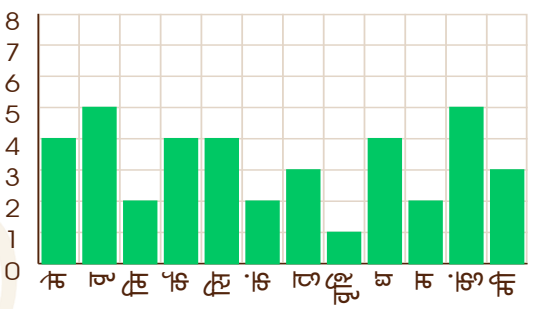

लग्न

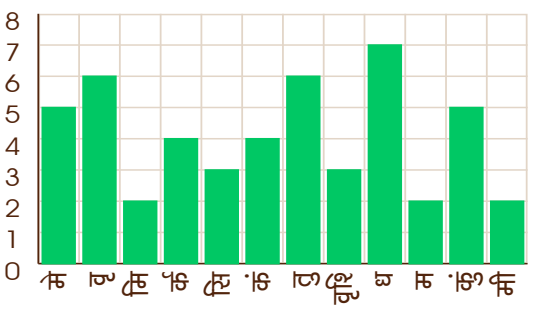

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

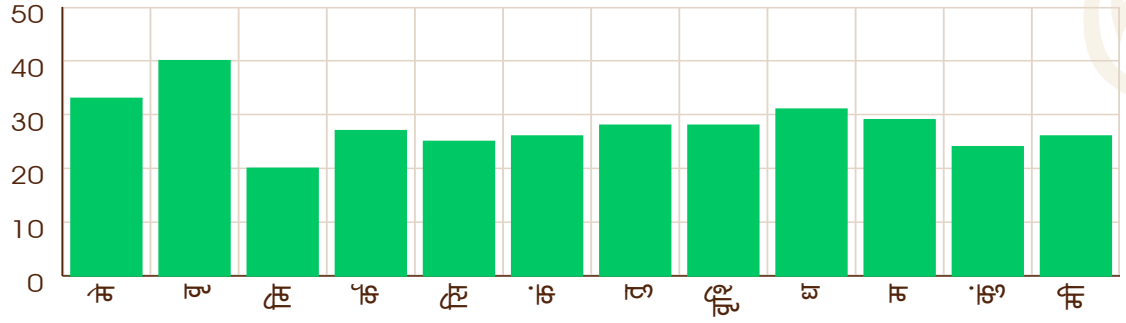

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

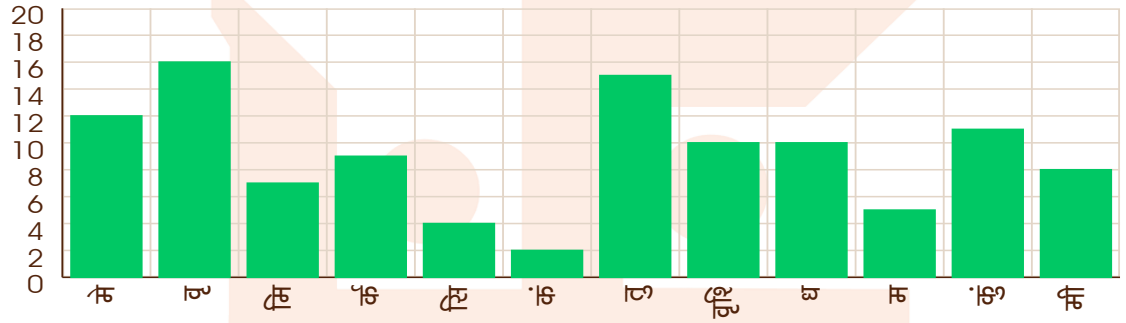

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

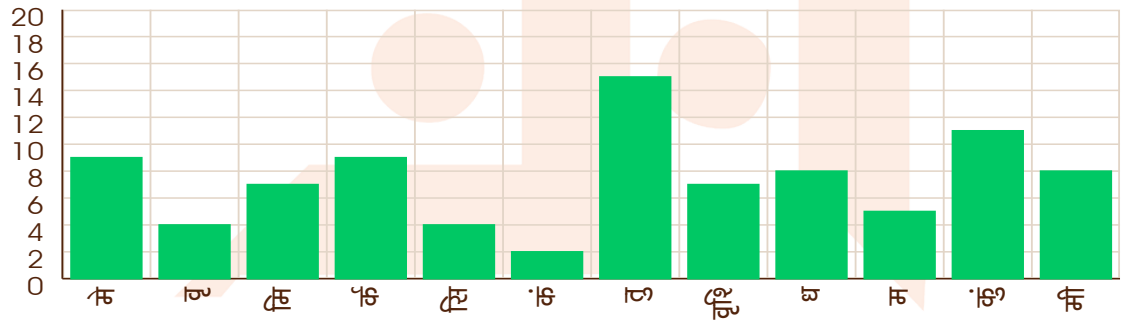

शोध्य पिंड

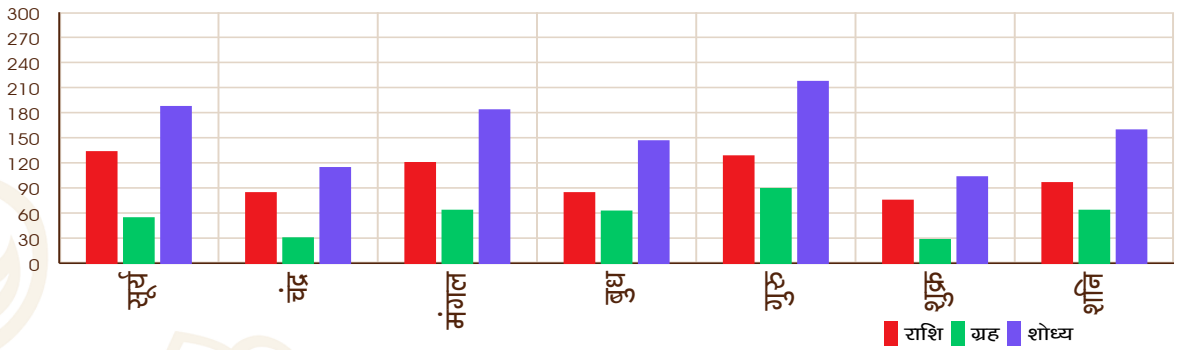

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 18 वर्ष 3 मास 10 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
15/08/1965		25/11/1983		24/11/2000		25/11/2007		25/11/2027	
25/11/1983		24/11/2000		25/11/2007		25/11/2027		25/11/2033	
शनि	28/11/1967	बुध	23/04/1986	केतु	23/04/2001	शुक्र	27/03/2011	सूर्य	14/03/2028
बुध	07/08/1970	केतु	20/04/1987	शुक्र	23/06/2002	सूर्य	26/03/2012	चंद्र	12/09/2028
केतु	16/09/1971	शुक्र	18/02/1990	सूर्य	29/10/2002	चंद्र	25/11/2013	मंगल	18/01/2029
शुक्र	16/11/1974	सूर्य	25/12/1990	चंद्र	30/05/2003	मंगल	25/01/2015	राहु	13/12/2029
सूर्य	29/10/1975	चंद्र	26/05/1992	मंगल	26/10/2003	राहु	25/01/2018	गुरु	01/10/2030
चंद्र	29/05/1977	मंगल	23/05/1993	राहु	12/11/2004	गुरु	25/09/2020	शनि	13/09/2031
मंगल	08/07/1978	राहु	10/12/1995	गुरु	19/10/2005	शनि	25/11/2023	बुध	20/07/2032
राहु	14/05/1981	गुरु	17/03/1998	शनि	28/11/2006	बुध	25/09/2026	केतु	24/11/2032
गुरु	25/11/1983	शनि	24/11/2000	बुध	25/11/2007	केतु	25/11/2027	शुक्र	25/11/2033

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
25/11/2033		25/11/2043		25/11/2050		24/11/2068		24/11/2084	
25/11/2043		25/11/2050		24/11/2068		24/11/2084		00/00/0000	
चंद्र	25/09/2034	मंगल	22/04/2044	राहु	07/08/2053	गुरु	13/01/2071	शनि	15/08/2085
मंगल	26/04/2035	राहु	11/05/2045	गुरु	01/01/2056	शनि	26/07/2073		00/00/0000
राहु	25/10/2036	गुरु	17/04/2046	शनि	07/11/2058	बुध	01/11/2075		00/00/0000
गुरु	24/02/2038	शनि	27/05/2047	बुध	26/05/2061	केतु	07/10/2076		00/00/0000
शनि	25/09/2039	बुध	23/05/2048	केतु	14/06/2062	शुक्र	08/06/2079		00/00/0000
बुध	24/02/2041	केतु	19/10/2048	शुक्र	13/06/2065	सूर्य	26/03/2080		00/00/0000
केतु	25/09/2041	शुक्र	19/12/2049	सूर्य	08/05/2066	चंद्र	26/07/2081		00/00/0000
शुक्र	27/05/2043	सूर्य	26/04/2050	चंद्र	07/11/2067	मंगल	02/07/2082		00/00/0000
सूर्य	25/11/2043	चंद्र	25/11/2050	मंगल	24/11/2068	राहु	24/11/2084		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 18 वर्ष 3 मा 8 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
15/08/1965		28/11/1967		07/08/1970		16/09/1971		16/11/1974	
28/11/1967		07/08/1970		16/09/1971		16/11/1974		29/10/1975	
	15/08/1965	बुध	15/04/1968	केतु	31/08/1970	शुक्र	27/03/1972	सूर्य	03/12/1974
बुध	20/10/1965	केतु	12/06/1968	शुक्र	06/11/1970	सूर्य	24/05/1972	चंद्र	01/01/1975
केतु	23/12/1965	शुक्र	23/11/1968	सूर्य	27/11/1970	चंद्र	28/08/1972	मंगल	21/01/1975
शुक्र	24/06/1966	सूर्य	11/01/1969	चंद्र	30/12/1970	मंगल	04/11/1972	राहु	14/03/1975
सूर्य	18/08/1966	चंद्र	03/04/1969	मंगल	23/01/1971	राहु	26/04/1973	गुरु	30/04/1975
चंद्र	18/11/1966	मंगल	30/05/1969	राहु	25/03/1971	गुरु	27/09/1973	शनि	24/06/1975
मंगल	21/01/1967	राहु	25/10/1969	गुरु	18/05/1971	शनि	29/03/1974	बुध	12/08/1975
राहु	05/07/1967	गुरु	05/03/1970	शनि	21/07/1971	बुध	09/09/1974	केतु	01/09/1975
गुरु	28/11/1967	शनि	07/08/1970	बुध	16/09/1971	केतु	16/11/1974	शुक्र	29/10/1975

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
29/10/1975		29/05/1977		08/07/1978		14/05/1981		25/11/1983	
29/05/1977		08/07/1978		14/05/1981		25/11/1983		23/04/1986	
चंद्र	16/12/1975	मंगल	22/06/1977	राहु	11/12/1978	गुरु	14/09/1981	बुध	29/03/1984
मंगल	19/01/1976	राहु	21/08/1977	गुरु	29/04/1979	शनि	08/02/1982	केतु	19/05/1984
राहु	14/04/1976	गुरु	14/10/1977	शनि	11/10/1979	बुध	19/06/1982	शुक्र	13/10/1984
गुरु	01/07/1976	शनि	17/12/1977	बुध	06/03/1980	केतु	12/08/1982	सूर्य	26/11/1984
शनि	30/09/1976	बुध	13/02/1978	केतु	06/05/1980	शुक्र	13/01/1983	चंद्र	07/02/1985
बुध	21/12/1976	केतु	08/03/1978	शुक्र	26/10/1980	सूर्य	28/02/1983	मंगल	30/03/1985
केतु	24/01/1977	शुक्र	15/05/1978	सूर्य	17/12/1980	चंद्र	16/05/1983	राहु	09/08/1985
शुक्र	30/04/1977	सूर्य	04/06/1978	चंद्र	14/03/1981	मंगल	09/07/1983	गुरु	05/12/1985
सूर्य	29/05/1977	चंद्र	08/07/1978	मंगल	14/05/1981	राहु	25/11/1983	शनि	23/04/1986

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
23/04/1986		20/04/1987		18/02/1990		25/12/1990		26/05/1992	
20/04/1987		18/02/1990		25/12/1990		26/05/1992		23/05/1993	
केतु	14/05/1986	शुक्र	09/10/1987	सूर्य	05/03/1990	चंद्र	06/02/1991	मंगल	16/06/1992
शुक्र	13/07/1986	सूर्य	30/11/1987	चंद्र	31/03/1990	मंगल	09/03/1991	राहु	09/08/1992
सूर्य	31/07/1986	चंद्र	24/02/1988	मंगल	18/04/1990	राहु	25/05/1991	गुरु	27/09/1992
चंद्र	31/08/1986	मंगल	25/04/1988	राहु	04/06/1990	गुरु	02/08/1991	शनि	23/11/1992
मंगल	21/09/1986	राहु	27/09/1988	गुरु	15/07/1990	शनि	23/10/1991	बुध	13/01/1993
राहु	14/11/1986	गुरु	12/02/1989	शनि	03/09/1990	बुध	04/01/1992	केतु	03/02/1993
गुरु	01/01/1987	शनि	26/07/1989	बुध	16/10/1990	केतु	04/02/1992	शुक्र	05/04/1993
शनि	28/02/1987	बुध	20/12/1989	केतु	04/11/1990	शुक्र	30/04/1992	सूर्य	23/04/1993
बुध	20/04/1987	केतु	18/02/1990	शुक्र	25/12/1990	सूर्य	26/05/1992	चंद्र	23/05/1993

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
23/05/1993		10/12/1995		17/03/1998		24/11/2000		23/04/2001	
10/12/1995		17/03/1998		24/11/2000		23/04/2001		23/06/2002	
राहु	10/10/1993	गुरु	30/03/1996	शनि	20/08/1998	केतु	03/12/2000	शुक्र	03/07/2001
गुरु	11/02/1994	शनि	08/08/1996	बुध	06/01/1999	शुक्र	28/12/2000	सूर्य	24/07/2001
शनि	08/07/1994	बुध	03/12/1996	केतु	05/03/1999	सूर्य	04/01/2001	चंद्र	28/08/2001
बुध	17/11/1994	केतु	20/01/1997	शुक्र	15/08/1999	चंद्र	17/01/2001	मंगल	22/09/2001
केतु	11/01/1995	शुक्र	07/06/1997	सूर्य	04/10/1999	मंगल	26/01/2001	राहु	25/11/2001
शुक्र	15/06/1995	सूर्य	19/07/1997	चंद्र	25/12/1999	राहु	17/02/2001	गुरु	21/01/2002
सूर्य	31/07/1995	चंद्र	26/09/1997	मंगल	20/02/2000	गुरु	09/03/2001	शनि	29/03/2002
चंद्र	17/10/1995	मंगल	13/11/1997	राहु	16/07/2000	शनि	01/04/2001	बुध	29/05/2002
मंगल	10/12/1995	राहु	17/03/1998	गुरु	24/11/2000	बुध	23/04/2001	केतु	23/06/2002

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
23/06/2002		29/10/2002		30/05/2003		26/10/2003		12/11/2004	
29/10/2002		30/05/2003		26/10/2003		12/11/2004		19/10/2005	
सूर्य	29/06/2002	चंद्र	15/11/2002	मंगल	07/06/2003	राहु	22/12/2003	गुरु	28/12/2004
चंद्र	10/07/2002	मंगल	28/11/2002	राहु	30/06/2003	गुरु	11/02/2004	शनि	20/02/2005
मंगल	17/07/2002	राहु	30/12/2002	गुरु	20/07/2003	शनि	12/04/2004	बुध	09/04/2005
राहु	05/08/2002	गुरु	27/01/2003	शनि	12/08/2003	बुध	05/06/2004	केतु	29/04/2005
गुरु	22/08/2002	शनि	02/03/2003	बुध	02/09/2003	केतु	28/06/2004	शुक्र	25/06/2005
शनि	12/09/2002	बुध	01/04/2003	केतु	11/09/2003	शुक्र	31/08/2004	सूर्य	12/07/2005
बुध	30/09/2002	केतु	13/04/2003	शुक्र	06/10/2003	सूर्य	19/09/2004	चंद्र	09/08/2005
केतु	07/10/2002	शुक्र	19/05/2003	सूर्य	13/10/2003	चंद्र	21/10/2004	मंगल	29/08/2005
शुक्र	29/10/2002	सूर्य	30/05/2003	चंद्र	26/10/2003	मंगल	12/11/2004	राहु	19/10/2005

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
19/10/2005		28/11/2006		25/11/2007		27/03/2011		26/03/2012	
28/11/2006		25/11/2007		27/03/2011		26/03/2012		25/11/2013	
शनि	22/12/2005	बुध	18/01/2007	शुक्र	15/06/2008	सूर्य	14/04/2011	चंद्र	16/05/2012
बुध	18/02/2006	केतु	08/02/2007	सूर्य	15/08/2008	चंद्र	14/05/2011	मंगल	20/06/2012
केतु	13/03/2006	शुक्र	10/04/2007	चंद्र	24/11/2008	मंगल	05/06/2011	राहु	19/09/2012
शुक्र	20/05/2006	सूर्य	28/04/2007	मंगल	03/02/2009	राहु	29/07/2011	गुरु	10/12/2012
सूर्य	09/06/2006	चंद्र	28/05/2007	राहु	05/08/2009	गुरु	16/09/2011	शनि	16/03/2013
चंद्र	13/07/2006	मंगल	18/06/2007	गुरु	14/01/2010	शनि	13/11/2011	बुध	10/06/2013
मंगल	05/08/2006	राहु	12/08/2007	शनि	26/07/2010	बुध	04/01/2012	केतु	16/07/2013
राहु	05/10/2006	गुरु	29/09/2007	बुध	15/01/2011	केतु	25/01/2012	शुक्र	25/10/2013
गुरु	28/11/2006	शनि	25/11/2007	केतु	27/03/2011	शुक्र	26/03/2012	सूर्य	25/11/2013

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
25/11/2013		25/01/2015		25/01/2018		25/09/2020		25/11/2023	
25/01/2015		25/01/2018		25/09/2020		25/11/2023		25/09/2026	
मंगल	20/12/2013	राहु	08/07/2015	गुरु	03/06/2018	शनि	27/03/2021	बुध	20/04/2024
राहु	21/02/2014	गुरु	01/12/2015	शनि	05/11/2018	बुध	07/09/2021	केतु	19/06/2024
गुरु	19/04/2014	शनि	23/05/2016	बुध	23/03/2019	केतु	13/11/2021	शुक्र	09/12/2024
शनि	26/06/2014	बुध	25/10/2016	केतु	18/05/2019	शुक्र	25/05/2022	सूर्य	29/01/2025
बुध	25/08/2014	केतु	28/12/2016	शुक्र	28/10/2019	सूर्य	22/07/2022	चंद्र	26/04/2025
केतु	19/09/2014	शुक्र	29/06/2017	सूर्य	15/12/2019	चंद्र	26/10/2022	मंगल	25/06/2025
शुक्र	29/11/2014	सूर्य	22/08/2017	चंद्र	06/03/2020	मंगल	01/01/2023	राहु	27/11/2025
सूर्य	20/12/2014	चंद्र	22/11/2017	मंगल	01/05/2020	राहु	24/06/2023	गुरु	14/04/2026
चंद्र	25/01/2015	मंगल	25/01/2018	राहु	25/09/2020	गुरु	25/11/2023	शनि	25/09/2026

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
25/09/2026		25/11/2027		14/03/2028		12/09/2028		18/01/2029	
25/11/2027		14/03/2028		12/09/2028		18/01/2029		13/12/2029	
केतु	20/10/2026	सूर्य	01/12/2027	चंद्र	29/03/2028	मंगल	20/09/2028	राहु	09/03/2029
शुक्र	30/12/2026	चंद्र	10/12/2027	मंगल	09/04/2028	राहु	09/10/2028	गुरु	21/04/2029
सूर्य	20/01/2027	मंगल	16/12/2027	राहु	06/05/2028	गुरु	26/10/2028	शनि	12/06/2029
चंद्र	25/02/2027	राहु	02/01/2028	गुरु	30/05/2028	शनि	15/11/2028	बुध	29/07/2029
मंगल	22/03/2027	गुरु	16/01/2028	शनि	28/06/2028	बुध	03/12/2028	केतु	17/08/2029
राहु	25/05/2027	शनि	03/02/2028	बुध	24/07/2028	केतु	11/12/2028	शुक्र	11/10/2029
गुरु	20/07/2027	बुध	18/02/2028	केतु	04/08/2028	शुक्र	01/01/2029	सूर्य	27/10/2029
शनि	26/09/2027	केतु	24/02/2028	शुक्र	03/09/2028	सूर्य	08/01/2029	चंद्र	24/11/2029
बुध	25/11/2027	शुक्र	14/03/2028	सूर्य	12/09/2028	चंद्र	18/01/2029	मंगल	13/12/2029

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
13/12/2029		01/10/2030		13/09/2031		20/07/2032		24/11/2032	
01/10/2030		13/09/2031		20/07/2032		24/11/2032		25/11/2033	
गुरु	21/01/2030	शनि	25/11/2030	बुध	27/10/2031	केतु	27/07/2032	शुक्र	24/01/2033
शनि	08/03/2030	बुध	13/01/2031	केतु	14/11/2031	शुक्र	17/08/2032	सूर्य	12/02/2033
बुध	19/04/2030	केतु	02/02/2031	शुक्र	05/01/2032	सूर्य	24/08/2032	चंद्र	14/03/2033
केतु	06/05/2030	शुक्र	01/04/2031	सूर्य	20/01/2032	चंद्र	03/09/2032	मंगल	04/04/2033
शुक्र	23/06/2030	सूर्य	19/04/2031	चंद्र	15/02/2032	मंगल	11/09/2032	राहु	29/05/2033
सूर्य	08/07/2030	चंद्र	18/05/2031	मंगल	04/03/2032	राहु	30/09/2032	गुरु	17/07/2033
चंद्र	01/08/2030	मंगल	07/06/2031	राहु	20/04/2032	गुरु	17/10/2032	शनि	13/09/2033
मंगल	18/08/2030	राहु	29/07/2031	गुरु	31/05/2032	शनि	06/11/2032	बुध	03/11/2033
राहु	01/10/2030	गुरु	13/09/2031	शनि	20/07/2032	बुध	24/11/2032	केतु	25/11/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
25/11/2033		25/09/2034		26/04/2035		25/10/2036		24/02/2038	
25/09/2034		26/04/2035		25/10/2036		24/02/2038		25/09/2039	
चंद्र	20/12/2033	मंगल	07/10/2034	राहु	17/07/2035	गुरु	29/12/2036	शनि	27/05/2038
मंगल	07/01/2034	राहु	08/11/2034	गुरु	28/09/2035	शनि	16/03/2037	बुध	16/08/2038
राहु	21/02/2034	गुरु	07/12/2034	शनि	24/12/2035	बुध	24/05/2037	केतु	19/09/2038
गुरु	03/04/2034	शनि	10/01/2035	बुध	11/03/2036	केतु	21/06/2037	शुक्र	25/12/2038
शनि	21/05/2034	बुध	09/02/2035	केतु	12/04/2036	शुक्र	11/09/2037	सूर्य	23/01/2039
बुध	03/07/2034	केतु	21/02/2035	शुक्र	12/07/2036	सूर्य	05/10/2037	चंद्र	12/03/2039
केतु	21/07/2034	शुक्र	29/03/2035	सूर्य	08/08/2036	चंद्र	15/11/2037	मंगल	14/04/2039
शुक्र	10/09/2034	सूर्य	08/04/2035	चंद्र	23/09/2036	मंगल	13/12/2037	राहु	10/07/2039
सूर्य	25/09/2034	चंद्र	26/04/2035	मंगल	25/10/2036	राहु	24/02/2038	गुरु	25/09/2039

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
25/09/2039		24/02/2041		25/09/2041		27/05/2043		25/11/2043	
24/02/2041		25/09/2041		27/05/2043		25/11/2043		22/04/2044	
बुध	08/12/2039	केतु	08/03/2041	शुक्र	04/01/2042	सूर्य	05/06/2043	मंगल	04/12/2043
केतु	07/01/2040	शुक्र	13/04/2041	सूर्य	04/02/2042	चंद्र	20/06/2043	राहु	26/12/2043
शुक्र	02/04/2040	सूर्य	23/04/2041	चंद्र	26/03/2042	मंगल	01/07/2043	गुरु	15/01/2044
सूर्य	28/04/2040	चंद्र	11/05/2041	मंगल	01/05/2042	राहु	28/07/2043	शनि	08/02/2044
चंद्र	10/06/2040	मंगल	23/05/2041	राहु	31/07/2042	गुरु	21/08/2043	बुध	29/02/2044
मंगल	10/07/2040	राहु	24/06/2041	गुरु	20/10/2042	शनि	19/09/2043	केतु	09/03/2044
राहु	26/09/2040	गुरु	23/07/2041	शनि	25/01/2043	बुध	15/10/2043	शुक्र	02/04/2044
गुरु	04/12/2040	शनि	26/08/2041	बुध	21/04/2043	केतु	26/10/2043	सूर्य	10/04/2044
शनि	24/02/2041	बुध	25/09/2041	केतु	27/05/2043	शुक्र	25/11/2043	चंद्र	22/04/2044

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
22/04/2044		11/05/2045		17/04/2046		27/05/2047		23/05/2048	
11/05/2045		17/04/2046		27/05/2047		23/05/2048		19/10/2048	
राहु	19/06/2044	गुरु	25/06/2045	शनि	20/06/2046	बुध	17/07/2047	केतु	31/05/2048
गुरु	09/08/2044	शनि	18/08/2045	बुध	16/08/2046	केतु	07/08/2047	शुक्र	25/06/2048
शनि	09/10/2044	बुध	06/10/2045	केतु	09/09/2046	शुक्र	06/10/2047	सूर्य	03/07/2048
बुध	02/12/2044	केतु	25/10/2045	शुक्र	15/11/2046	सूर्य	24/10/2047	चंद्र	15/07/2048
केतु	24/12/2044	शुक्र	21/12/2045	सूर्य	05/12/2046	चंद्र	24/11/2047	मंगल	24/07/2048
शुक्र	26/02/2045	सूर्य	07/01/2046	चंद्र	08/01/2047	मंगल	15/12/2047	राहु	15/08/2048
सूर्य	17/03/2045	चंद्र	05/02/2046	मंगल	01/02/2047	राहु	07/02/2048	गुरु	04/09/2048
चंद्र	18/04/2045	मंगल	25/02/2046	राहु	03/04/2047	गुरु	26/03/2048	शनि	28/09/2048
मंगल	11/05/2045	राहु	17/04/2046	गुरु	27/05/2047	शनि	23/05/2048	बुध	19/10/2048

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
19/10/2048		19/12/2049		26/04/2050		25/11/2050		07/08/2053	
19/12/2049		26/04/2050		25/11/2050		07/08/2053		01/01/2056	
शुक्र	29/12/2048	सूर्य	25/12/2049	चंद्र	14/05/2050	राहु	22/04/2051	गुरु	02/12/2053
सूर्य	19/01/2049	चंद्र	05/01/2050	मंगल	26/05/2050	गुरु	31/08/2051	शनि	20/04/2054
चंद्र	24/02/2049	मंगल	13/01/2050	राहु	27/06/2050	शनि	03/02/2052	बुध	22/08/2054
मंगल	21/03/2049	राहु	01/02/2050	गुरु	25/07/2050	बुध	22/06/2052	केतु	12/10/2054
राहु	23/05/2049	गुरु	18/02/2050	शनि	28/08/2050	केतु	19/08/2052	शुक्र	07/03/2055
गुरु	19/07/2049	शनि	10/03/2050	बुध	27/09/2050	शुक्र	30/01/2053	सूर्य	20/04/2055
शनि	25/09/2049	बुध	28/03/2050	केतु	10/10/2050	सूर्य	20/03/2053	चंद्र	02/07/2055
बुध	24/11/2049	केतु	05/04/2050	शुक्र	14/11/2050	चंद्र	11/06/2053	मंगल	22/08/2055
केतु	19/12/2049	शुक्र	26/04/2050	सूर्य	25/11/2050	मंगल	07/08/2053	राहु	01/01/2056

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
01/01/2056		07/11/2058		26/05/2061		14/06/2062		13/06/2065	
07/11/2058		26/05/2061		14/06/2062		13/06/2065		08/05/2066	
शनि	14/06/2056	बुध	19/03/2059	केतु	17/06/2061	शुक्र	13/12/2062	सूर्य	30/06/2065
बुध	08/11/2056	केतु	12/05/2059	शुक्र	20/08/2061	सूर्य	06/02/2063	चंद्र	27/07/2065
केतु	08/01/2057	शुक्र	14/10/2059	सूर्य	09/09/2061	चंद्र	08/05/2063	मंगल	15/08/2065
शुक्र	30/06/2057	सूर्य	30/11/2059	चंद्र	10/10/2061	मंगल	11/07/2063	राहु	04/10/2065
सूर्य	21/08/2057	चंद्र	15/02/2060	मंगल	02/11/2061	राहु	23/12/2063	गुरु	16/11/2065
चंद्र	16/11/2057	मंगल	10/04/2060	राहु	29/12/2061	गुरु	17/05/2064	शनि	07/01/2066
मंगल	16/01/2058	राहु	27/08/2060	गुरु	18/02/2062	शनि	06/11/2064	बुध	23/02/2066
राहु	21/06/2058	गुरु	30/12/2060	शनि	20/04/2062	बुध	10/04/2065	केतु	14/03/2066
गुरु	07/11/2058	शनि	26/05/2061	बुध	14/06/2062	केतु	13/06/2065	शुक्र	08/05/2066

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
08/05/2066		07/11/2067		24/11/2068		13/01/2071		26/07/2073	
07/11/2067		24/11/2068		13/01/2071		26/07/2073		01/11/2075	
चंद्र	23/06/2066	मंगल	29/11/2067	गुरु	08/03/2069	शनि	08/06/2071	बुध	20/11/2073
मंगल	25/07/2066	राहु	26/01/2068	शनि	10/07/2069	बुध	17/10/2071	केतु	07/01/2074
राहु	15/10/2066	गुरु	17/03/2068	बुध	28/10/2069	केतु	10/12/2071	शुक्र	25/05/2074
गुरु	27/12/2066	शनि	17/05/2068	केतु	13/12/2069	शुक्र	12/05/2072	सूर्य	06/07/2074
शनि	24/03/2067	बुध	10/07/2068	शुक्र	21/04/2070	सूर्य	28/06/2072	चंद्र	13/09/2074
बुध	09/06/2067	केतु	01/08/2068	सूर्य	30/05/2070	चंद्र	13/09/2072	मंगल	31/10/2074
केतु	11/07/2067	शुक्र	04/10/2068	चंद्र	03/08/2070	मंगल	06/11/2072	राहु	04/03/2075
शुक्र	11/10/2067	सूर्य	23/10/2068	मंगल	18/09/2070	राहु	25/03/2073	गुरु	23/06/2075
सूर्य	07/11/2067	चंद्र	24/11/2068	राहु	13/01/2071	गुरु	26/07/2073	शनि	01/11/2075

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - बुध - राहु	
25/06/2025 11:12	
27/11/2025 16:45	
राहु	18/07/2025 18:02
गुरु	08/08/2025 10:46
शनि	02/09/2025 00:39
बुध	24/09/2025 00:26
केतु	03/10/2025 01:45
शुक्र	28/10/2025 22:41
सूर्य	05/11/2025 16:58
चंद्र	18/11/2025 15:25
मंगल	27/11/2025 16:45

शुक्र - बुध - गुरु	
27/11/2025 16:45	
14/04/2026 16:21	
गुरु	16/12/2025 02:18
शनि	06/01/2026 22:38
बुध	26/01/2026 11:46
केतु	03/02/2026 12:57
शुक्र	26/02/2026 12:53
सूर्य	05/03/2026 10:28
चंद्र	16/03/2026 22:26
मंगल	24/03/2026 23:36
राहु	14/04/2026 16:21

शुक्र - बुध - शनि	
14/04/2026 16:21	
25/09/2026 12:52	
शनि	10/05/2026 15:00
बुध	02/06/2026 20:06
केतु	12/06/2026 09:30
शुक्र	09/07/2026 16:55
सूर्य	17/07/2026 21:33
चंद्र	31/07/2026 13:15
मंगल	10/08/2026 02:39
राहु	03/09/2026 16:32
गुरु	25/09/2026 12:52

शुक्र - केतु - केतु	
25/09/2026 12:52	
20/10/2026 09:27	
केतु	26/09/2026 23:40
शुक्र	01/10/2026 03:06
सूर्य	02/10/2026 08:56
चंद्र	04/10/2026 10:39
मंगल	05/10/2026 21:27
राहु	09/10/2026 14:56
गुरु	12/10/2026 22:28
शनि	16/10/2026 20:56
बुध	20/10/2026 09:27

शुक्र - केतु - शुक्र	
20/10/2026 09:27	
30/12/2026 09:57	
शुक्र	01/11/2026 05:32
सूर्य	04/11/2026 18:45
चंद्र	10/11/2026 16:48
मंगल	14/11/2026 20:13
राहु	25/11/2026 11:54
गुरु	04/12/2026 23:10
शनि	16/12/2026 05:03
बुध	26/12/2026 06:31
केतु	30/12/2026 09:57

शुक्र - केतु - सूर्य	
30/12/2026 09:57	
20/01/2027 17:18	
सूर्य	31/12/2026 11:31
चंद्र	02/01/2027 06:08
मंगल	03/01/2027 11:57
राहु	06/01/2027 16:39
गुरु	09/01/2027 12:50
शनि	12/01/2027 21:48
बुध	15/01/2027 22:14
केतु	17/01/2027 04:04
शुक्र	20/01/2027 17:18

शुक्र - केतु - चंद्र	
20/01/2027 17:18	
25/02/2027 05:33	
चंद्र	23/01/2027 16:19
मंगल	25/01/2027 18:02
राहु	31/01/2027 01:52
गुरु	04/02/2027 19:30
शनि	10/02/2027 10:26
बुध	15/02/2027 11:11
केतु	17/02/2027 12:53
शुक्र	23/02/2027 10:56
सूर्य	25/02/2027 05:33

शुक्र - केतु - मंगल	
25/02/2027 05:33	
22/03/2027 02:07	
मंगल	26/02/2027 16:21
राहु	02/03/2027 09:50
गुरु	05/03/2027 17:23
शनि	09/03/2027 15:50
बुध	13/03/2027 04:21
केतु	14/03/2027 15:09
शुक्र	18/03/2027 18:35
सूर्य	20/03/2027 00:24
चंद्र	22/03/2027 02:07

शुक्र - केतु - राहु	
22/03/2027 02:07	
25/05/2027 00:10	
राहु	31/03/2027 16:14
गुरु	09/04/2027 04:46
शनि	19/04/2027 07:40
बुध	28/04/2027 08:59
केतु	02/05/2027 02:28
शुक्र	12/05/2027 18:09
सूर्य	15/05/2027 22:51
चंद्र	21/05/2027 06:41
मंगल	25/05/2027 00:10

शुक्र - केतु - गुरु	
25/05/2027 00:10	
20/07/2027 19:46	
गुरु	01/06/2027 13:59
शनि	10/06/2027 13:53
बुध	18/06/2027 15:04
केतु	21/06/2027 22:36
शुक्र	01/07/2027 09:52
सूर्य	04/07/2027 06:03
चंद्र	08/07/2027 23:41
मंगल	12/07/2027 07:14
राहु	20/07/2027 19:46

शुक्र - केतु - शनि	
20/07/2027 19:46	
26/09/2027 07:03	
शनि	31/07/2027 12:09
बुध	10/08/2027 01:33
केतु	14/08/2027 00:01
शुक्र	25/08/2027 05:53
सूर्य	28/08/2027 14:51
चंद्र	03/09/2027 05:48
मंगल	07/09/2027 04:15
राहु	17/09/2027 07:09
गुरु	26/09/2027 07:03

शुक्र - केतु - बुध	
26/09/2027 07:03	
25/11/2027 15:52	
बुध	04/10/2027 20:18
केतु	08/10/2027 08:49
शुक्र	18/10/2027 10:17
सूर्य	21/10/2027 10:43
चंद्र	26/10/2027 11:27
मंगल	29/10/2027 23:58
राहु	08/11/2027 01:18
गुरु	16/11/2027 02:28
शनि	25/11/2027 15:52

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - सूर्य - सूर्य	
25/11/2027 15:52	
01/12/2027 03:22	
सूर्य	25/11/2027 22:27
चंद्र	26/11/2027 09:24
मंगल	26/11/2027 17:04
राहु	27/11/2027 12:48
गुरु	28/11/2027 06:20
शनि	29/11/2027 03:09
बुध	29/11/2027 21:47
केतु	30/11/2027 05:27
शुक्र	01/12/2027 03:22

सूर्य - सूर्य - चंद्र	
01/12/2027 03:22	
10/12/2027 06:31	
चंद्र	01/12/2027 21:37
मंगल	02/12/2027 10:24
राहु	03/12/2027 19:17
गुरु	05/12/2027 00:30
शनि	06/12/2027 11:12
बुध	07/12/2027 18:15
केतु	08/12/2027 07:02
शुक्र	09/12/2027 19:33
सूर्य	10/12/2027 06:31

सूर्य - सूर्य - मंगल	
10/12/2027 06:31	
16/12/2027 15:55	
मंगल	10/12/2027 15:28
राहु	11/12/2027 14:28
गुरु	12/12/2027 10:55
शनि	13/12/2027 11:13
बुध	14/12/2027 08:57
केतु	14/12/2027 17:54
शुक्र	15/12/2027 19:28
सूर्य	16/12/2027 03:08
चंद्र	16/12/2027 15:55

सूर्य - सूर्य - राहु	
16/12/2027 15:55	
02/01/2028 02:23	
राहु	19/12/2027 03:05
गुरु	21/12/2027 07:41
शनि	23/12/2027 22:08
बुध	26/12/2027 06:01
केतु	27/12/2027 05:02
शुक्र	29/12/2027 22:47
सूर्य	30/12/2027 18:30
चंद्र	01/01/2028 03:22
मंगल	02/01/2028 02:23

सूर्य - सूर्य - गुरु	
02/01/2028 02:23	
16/01/2028 17:02	
गुरु	04/01/2028 01:08
शनि	06/01/2028 08:39
बुध	08/01/2028 10:20
केतु	09/01/2028 06:47
शुक्र	11/01/2028 17:13
सूर्य	12/01/2028 10:45
चंद्र	13/01/2028 15:59
मंगल	14/01/2028 12:26
राहु	16/01/2028 17:02

सूर्य - सूर्य - शनि	
16/01/2028 17:02	
03/02/2028 01:25	
शनि	19/01/2028 10:57
बुध	21/01/2028 21:56
केतु	22/01/2028 22:14
शुक्र	25/01/2028 19:38
सूर्य	26/01/2028 16:27
चंद्र	28/01/2028 03:09
मंगल	29/01/2028 03:26
राहु	31/01/2028 17:54
गुरु	03/02/2028 01:25

सूर्य - सूर्य - बुध	
03/02/2028 01:25	
18/02/2028 13:58	
बुध	05/02/2028 06:11
केतु	06/02/2028 03:55
शुक्र	08/02/2028 18:01
सूर्य	09/02/2028 12:38
चंद्र	10/02/2028 19:41
मंगल	11/02/2028 17:25
राहु	14/02/2028 01:18
गुरु	16/02/2028 02:59
शनि	18/02/2028 13:58

सूर्य - सूर्य - केतु	
18/02/2028 13:58	
24/02/2028 23:22	
केतु	18/02/2028 22:55
शुक्र	20/02/2028 00:29
सूर्य	20/02/2028 08:09
चंद्र	20/02/2028 20:56
मंगल	21/02/2028 05:53
राहु	22/02/2028 04:54
गुरु	23/02/2028 01:21
शनि	24/02/2028 01:38
बुध	24/02/2028 23:22

सूर्य - सूर्य - शुक्र	
24/02/2028 23:22	
14/03/2028 05:40	
शुक्र	28/02/2028 00:25
सूर्य	28/02/2028 22:20
चंद्र	01/03/2028 10:52
मंगल	02/03/2028 12:26
राहु	05/03/2028 06:10
गुरु	07/03/2028 16:37
शनि	10/03/2028 14:01
बुध	13/03/2028 04:06
केतु	14/03/2028 05:40

सूर्य - चंद्र - चंद्र	
14/03/2028 05:40	
29/03/2028 10:55	
चंद्र	15/03/2028 12:06
मंगल	16/03/2028 09:25
राहु	18/03/2028 16:12
गुरु	20/03/2028 16:54
शनि	23/03/2028 02:44
बुध	25/03/2028 06:29
केतु	26/03/2028 03:47
शुक्र	28/03/2028 16:39
सूर्य	29/03/2028 10:55

सूर्य - चंद्र - मंगल	
29/03/2028 10:55	
09/04/2028 02:36	
मंगल	30/03/2028 01:50
राहु	31/03/2028 16:11
गुरु	02/04/2028 02:17
शनि	03/04/2028 18:45
बुध	05/04/2028 06:59
केतु	05/04/2028 21:54
शुक्र	07/04/2028 16:30
सूर्य	08/04/2028 05:17
चंद्र	09/04/2028 02:36

सूर्य - चंद्र - राहु	
09/04/2028 02:36	
06/05/2028 12:03	
राहु	13/04/2028 05:13
गुरु	16/04/2028 20:52
शनि	21/04/2028 04:58
बुध	25/04/2028 02:06
केतु	26/04/2028 16:28
शुक्र	01/05/2028 06:02
सूर्य	02/05/2028 14:54
चंद्र	04/05/2028 21:42
मंगल	06/05/2028 12:03

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - चंद्र - गुरु		सूर्य - चंद्र - शनि		सूर्य - चंद्र - बुध		सूर्य - चंद्र - केतु	
06/05/2028 12:03		30/05/2028 20:27		28/06/2028 18:25		24/07/2028 15:21	
30/05/2028 20:27		28/06/2028 18:25		24/07/2028 15:21		04/08/2028 07:01	
गुरु	09/05/2028 17:58	शनि	04/06/2028 10:19	बुध	02/07/2028 10:23	केतु	25/07/2028 06:16
शनि	13/05/2028 14:30	बुध	08/06/2028 12:38	केतु	03/07/2028 22:36	शुक्र	27/07/2028 00:52
बुध	17/05/2028 01:17	केतु	10/06/2028 05:07	शुक्र	08/07/2028 06:06	सूर्य	27/07/2028 13:39
केतु	18/05/2028 11:23	शुक्र	15/06/2028 00:47	सूर्य	09/07/2028 13:08	चंद्र	28/07/2028 10:58
शुक्र	22/05/2028 12:47	सूर्य	16/06/2028 11:29	चंद्र	11/07/2028 16:53	मंगल	29/07/2028 01:53
सूर्य	23/05/2028 18:00	चंद्र	18/06/2028 21:19	मंगल	13/07/2028 05:06	राहु	30/07/2028 16:14
चंद्र	25/05/2028 18:42	मंगल	20/06/2028 13:48	राहु	17/07/2028 02:15	गुरु	01/08/2028 02:19
मंगल	27/05/2028 04:47	राहु	24/06/2028 21:53	गुरु	20/07/2028 13:02	शनि	02/08/2028 18:48
राहु	30/05/2028 20:27	गुरु	28/06/2028 18:25	शनि	24/07/2028 15:21	बुध	04/08/2028 07:01

सूर्य - चंद्र - शुक्र		सूर्य - चंद्र - सूर्य		सूर्य - मंगल - मंगल		सूर्य - मंगल - राहु	
04/08/2028 07:01		03/09/2028 17:31		12/09/2028 20:40		20/09/2028 07:39	
03/09/2028 17:31		12/09/2028 20:40		20/09/2028 07:39		09/10/2028 11:51	
शुक्र	09/08/2028 08:46	सूर्य	04/09/2028 04:29	मंगल	13/09/2028 07:07	राहु	23/09/2028 04:41
सूर्य	10/08/2028 21:18	चंद्र	04/09/2028 22:44	राहु	14/09/2028 09:57	गुरु	25/09/2028 18:02
चंद्र	13/08/2028 10:10	मंगल	05/09/2028 11:31	गुरु	15/09/2028 09:49	शनि	28/09/2028 18:54
मंगल	15/08/2028 04:47	राहु	06/09/2028 20:24	शनि	16/09/2028 14:09	बुध	01/10/2028 12:06
राहु	19/08/2028 18:21	गुरु	08/09/2028 01:37	बुध	17/09/2028 15:31	केतु	02/10/2028 14:57
गुरु	23/08/2028 19:45	शनि	09/09/2028 12:19	केतु	18/09/2028 01:57	शुक्र	05/10/2028 19:39
शनि	28/08/2028 15:25	बुध	10/09/2028 19:22	शुक्र	19/09/2028 07:47	सूर्य	06/10/2028 18:40
बुध	01/09/2028 22:54	केतु	11/09/2028 08:09	सूर्य	19/09/2028 16:44	चंद्र	08/10/2028 09:01
केतु	03/09/2028 17:31	शुक्र	12/09/2028 20:40	चंद्र	20/09/2028 07:39	मंगल	09/10/2028 11:51

सूर्य - मंगल - गुरु		सूर्य - मंगल - शनि		सूर्य - मंगल - बुध		सूर्य - मंगल - केतु	
09/10/2028 11:51		26/10/2028 12:56		15/11/2028 18:43		03/12/2028 21:22	
26/10/2028 12:56		15/11/2028 18:43		03/12/2028 21:22		11/12/2028 08:20	
गुरु	11/10/2028 18:24	शनि	29/10/2028 17:51	बुध	18/11/2028 08:18	केतु	04/12/2028 07:48
शनि	14/10/2028 11:10	बुध	01/11/2028 14:40	केतु	19/11/2028 09:39	शुक्र	05/12/2028 13:38
बुध	16/10/2028 21:08	केतु	02/11/2028 19:01	शुक्र	22/11/2028 10:05	सूर्य	05/12/2028 22:35
केतु	17/10/2028 20:59	शुक्र	06/11/2028 03:58	सूर्य	23/11/2028 07:49	चंद्र	06/12/2028 13:30
शुक्र	20/10/2028 17:10	सूर्य	07/11/2028 04:16	चंद्र	24/11/2028 20:03	मंगल	06/12/2028 23:56
सूर्य	21/10/2028 13:37	चंद्र	08/11/2028 20:45	मंगल	25/11/2028 21:24	राहु	08/12/2028 02:47
चंद्र	22/10/2028 23:43	मंगल	10/11/2028 01:05	राहु	28/11/2028 14:36	गुरु	09/12/2028 02:39
मंगल	23/10/2028 23:35	राहु	13/11/2028 01:57	गुरु	01/12/2028 00:33	शनि	10/12/2028 06:59
राहु	26/10/2028 12:56	गुरु	15/11/2028 18:43	शनि	03/12/2028 21:22	बुध	11/12/2028 08:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - मंगल - शुक्र	
11/12/2028 08:20	
01/01/2029 15:41	
शुक्र	14/12/2028 21:34
सूर्य	15/12/2028 23:08
चंद्र	17/12/2028 17:45
मंगल	18/12/2028 23:34
राहु	22/12/2028 04:17
गुरु	25/12/2028 00:27
शनि	28/12/2028 09:25
बुध	31/12/2028 09:52
केतु	01/01/2029 15:41

सूर्य - मंगल - सूर्य	
01/01/2029 15:41	
08/01/2029 01:06	
सूर्य	01/01/2029 23:22
चंद्र	02/01/2029 12:09
मंगल	02/01/2029 21:06
राहु	03/01/2029 20:06
गुरु	04/01/2029 16:33
शनि	05/01/2029 16:51
बुध	06/01/2029 14:35
केतु	06/01/2029 23:32
शुक्र	08/01/2029 01:06

सूर्य - मंगल - चंद्र	
08/01/2029 01:06	
18/01/2029 16:46	
चंद्र	08/01/2029 22:24
मंगल	09/01/2029 13:19
राहु	11/01/2029 03:40
गुरु	12/01/2029 13:45
शनि	14/01/2029 06:14
बुध	15/01/2029 18:28
केतु	16/01/2029 09:22
शुक्र	18/01/2029 03:59
सूर्य	18/01/2029 16:46

सूर्य - राहु - राहु	
18/01/2029 16:46	
09/03/2029 00:11	
राहु	26/01/2029 02:17
गुरु	01/02/2029 16:04
शनि	09/02/2029 11:27
बुध	16/02/2029 11:06
केतु	19/02/2029 08:08
शुक्र	27/02/2029 13:22
सूर्य	02/03/2029 00:32
चंद्र	06/03/2029 03:09
मंगल	09/03/2029 00:11

सूर्य - राहु - गुरु	
09/03/2029 00:11	
21/04/2029 20:06	
गुरु	14/03/2029 20:26
शनि	21/03/2029 18:59
बुध	28/03/2029 00:01
केतु	30/03/2029 13:22
शुक्र	06/04/2029 20:42
सूर्य	09/04/2029 01:17
चंद्र	12/04/2029 16:57
मंगल	15/04/2029 06:19
राहु	21/04/2029 20:06

सूर्य - राहु - शनि	
21/04/2029 20:06	
12/06/2029 21:15	
शनि	30/04/2029 01:53
बुध	07/05/2029 10:51
केतु	10/05/2029 11:43
शुक्र	19/05/2029 03:54
सूर्य	21/05/2029 18:22
चंद्र	26/05/2029 02:28
मंगल	29/05/2029 03:20
राहु	05/06/2029 22:42
गुरु	12/06/2029 21:15

सूर्य - राहु - बुध	
12/06/2029 21:15	
29/07/2029 10:55	
बुध	19/06/2029 11:35
केतु	22/06/2029 04:47
शुक्र	29/06/2029 23:04
सूर्य	02/07/2029 06:57
चंद्र	06/07/2029 04:05
मंगल	08/07/2029 21:17
राहु	15/07/2029 20:56
गुरु	22/07/2029 01:57
शनि	29/07/2029 10:55

सूर्य - राहु - केतु	
29/07/2029 10:55	
17/08/2029 15:08	
केतु	30/07/2029 13:46
शुक्र	02/08/2029 18:28
सूर्य	03/08/2029 17:29
चंद्र	05/08/2029 07:50
मंगल	06/08/2029 10:41
राहु	09/08/2029 07:43
गुरु	11/08/2029 21:04
शनि	14/08/2029 21:56
बुध	17/08/2029 15:08

सूर्य - राहु - शुक्र	
17/08/2029 15:08	
11/10/2029 10:02	
शुक्र	26/08/2029 18:17
सूर्य	29/08/2029 12:02
चंद्र	03/09/2029 01:36
मंगल	06/09/2029 06:18
राहु	14/09/2029 11:33
गुरु	21/09/2029 18:52
शनि	30/09/2029 11:03
बुध	08/10/2029 05:20
केतु	11/10/2029 10:02

सूर्य - राहु - सूर्य	
11/10/2029 10:02	
27/10/2029 20:30	
सूर्य	12/10/2029 05:46
चंद्र	13/10/2029 14:38
मंगल	14/10/2029 13:39
राहु	17/10/2029 00:49
गुरु	19/10/2029 05:25
शनि	21/10/2029 19:52
बुध	24/10/2029 03:45
केतु	25/10/2029 02:46
शुक्र	27/10/2029 20:30

सूर्य - राहु - चंद्र	
27/10/2029 20:30	
24/11/2029 05:57	
चंद्र	30/10/2029 03:18
मंगल	31/10/2029 17:39
राहु	04/11/2029 20:16
गुरु	08/11/2029 11:55
शनि	12/11/2029 20:01
बुध	16/11/2029 17:09
केतु	18/11/2029 07:30
शुक्र	22/11/2029 21:05
सूर्य	24/11/2029 05:57

सूर्य - राहु - मंगल	
24/11/2029 05:57	
13/12/2029 10:10	
मंगल	25/11/2029 08:48
राहु	28/11/2029 05:50
गुरु	30/11/2029 19:12
शनि	03/12/2029 20:04
बुध	06/12/2029 13:16
केतु	07/12/2029 16:06
शुक्र	10/12/2029 20:49
सूर्य	11/12/2029 19:49
चंद्र	13/12/2029 10:10

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - बुध - राहु - शुक्र	
03/10/2025 01:45	
28/10/2025 22:41	
शुक्र	07/10/2025 09:15
सूर्य	08/10/2025 16:17
चंद्र	10/10/2025 20:02
मंगल	12/10/2025 08:15
राहु	16/10/2025 05:24
गुरु	19/10/2025 16:11
शनि	23/10/2025 18:30
बुध	27/10/2025 10:28
केतु	28/10/2025 22:41

शुक्र - बुध - राहु - सूर्य	
28/10/2025 22:41	
05/11/2025 16:58	
सूर्य	29/10/2025 08:00
चंद्र	29/10/2025 23:31
मंगल	30/10/2025 10:23
राहु	31/10/2025 14:20
गुरु	01/11/2025 15:10
शनि	02/11/2025 20:39
बुध	03/11/2025 23:03
केतु	04/11/2025 09:55
शुक्र	05/11/2025 16:58

शुक्र - बुध - राहु - चंद्र	
05/11/2025 16:58	
18/11/2025 15:25	
चंद्र	06/11/2025 18:50
मंगल	07/11/2025 12:56
राहु	09/11/2025 11:31
गुरु	11/11/2025 04:54
शनि	13/11/2025 06:04
बुध	15/11/2025 02:03
केतु	15/11/2025 20:09
शुक्र	17/11/2025 23:54
सूर्य	18/11/2025 15:25

शुक्र - बुध - राहु - मंगल	
18/11/2025 15:25	
27/11/2025 16:45	
मंगल	19/11/2025 04:06
राहु	20/11/2025 12:42
गुरु	21/11/2025 17:40
शनि	23/11/2025 04:05
बुध	24/11/2025 10:52
केतु	24/11/2025 23:33
शुक्र	26/11/2025 11:46
सूर्य	26/11/2025 22:38
चंद्र	27/11/2025 16:45

शुक्र - बुध - गुरु - गुरु	
27/11/2025 16:45	
16/12/2025 02:18	
गुरु	30/11/2025 03:37
शनि	03/12/2025 01:32
बुध	05/12/2025 16:05
केतु	06/12/2025 17:50
शुक्र	09/12/2025 19:26
सूर्य	10/12/2025 17:30
चंद्र	12/12/2025 06:18
मंगल	13/12/2025 08:04
राहु	16/12/2025 02:18

शुक्र - बुध - गुरु - शनि	
16/12/2025 02:18	
06/01/2026 22:38	
शनि	19/12/2025 13:19
बुध	22/12/2025 15:36
केतु	23/12/2025 22:11
शुक्र	27/12/2025 13:34
सूर्य	28/12/2025 15:47
चंद्र	30/12/2025 11:29
मंगल	31/12/2025 18:04
राहु	04/01/2026 00:43
गुरु	06/01/2026 22:38

शुक्र - बुध - गुरु - बुध	
06/01/2026 22:38	
26/01/2026 11:46	
बुध	09/01/2026 17:05
केतु	10/01/2026 20:27
शुक्र	14/01/2026 02:39
सूर्य	15/01/2026 02:06
चंद्र	16/01/2026 17:12
मंगल	17/01/2026 20:34
राहु	20/01/2026 18:56
गुरु	23/01/2026 09:29
शनि	26/01/2026 11:46

शुक्र - बुध - गुरु - केतु	
26/01/2026 11:46	
03/02/2026 12:57	
केतु	26/01/2026 23:02
शुक्र	28/01/2026 07:14
सूर्य	28/01/2026 16:54
चंद्र	29/01/2026 09:00
मंगल	29/01/2026 20:16
राहु	31/01/2026 01:14
गुरु	01/02/2026 03:00
शनि	02/02/2026 09:35
बुध	03/02/2026 12:57

शुक्र - बुध - गुरु - शुक्र	
03/02/2026 12:57	
26/02/2026 12:53	
शुक्र	07/02/2026 08:56
सूर्य	08/02/2026 12:32
चंद्र	10/02/2026 10:32
मंगल	11/02/2026 18:43
राहु	15/02/2026 05:31
गुरु	18/02/2026 07:06
शनि	21/02/2026 22:30
बुध	25/02/2026 04:41
केतु	26/02/2026 12:53

शुक्र - बुध - गुरु - सूर्य	
26/02/2026 12:53	
05/03/2026 10:28	
सूर्य	26/02/2026 21:10
चंद्र	27/02/2026 10:58
मंगल	27/02/2026 20:37
राहु	28/02/2026 21:27
गुरु	01/03/2026 19:32
शनि	02/03/2026 21:45
बुध	03/03/2026 21:12
केतु	04/03/2026 06:52
शुक्र	05/03/2026 10:28

शुक्र - बुध - गुरु - चंद्र	
05/03/2026 10:28	
16/03/2026 22:26	
चंद्र	06/03/2026 09:28
मंगल	07/03/2026 01:33
राहु	08/03/2026 18:57
गुरु	10/03/2026 07:45
शनि	12/03/2026 03:27
बुध	13/03/2026 18:32
केतु	14/03/2026 10:38
शुक्र	16/03/2026 08:38
सूर्य	16/03/2026 22:26

शुक्र - बुध - गुरु - मंगल	
16/03/2026 22:26	
24/03/2026 23:36	
मंगल	17/03/2026 09:42
राहु	18/03/2026 14:40
गुरु	19/03/2026 16:26
शनि	20/03/2026 23:01
बुध	22/03/2026 02:23
केतु	22/03/2026 13:39
शुक्र	23/03/2026 21:51
सूर्य	24/03/2026 07:30
चंद्र	24/03/2026 23:36

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - बुध - गुरु - राहु	
24/03/2026 23:36	
14/04/2026 16:21	
राहु	28/03/2026 02:07
गुरु	30/03/2026 20:21
शनि	03/04/2026 03:00
बुध	06/04/2026 01:22
केतु	07/04/2026 06:21
शुक्र	10/04/2026 17:08
सूर्य	11/04/2026 17:58
चंद्र	13/04/2026 11:22
मंगल	14/04/2026 16:21

शुक्र - बुध - शनि - शनि	
14/04/2026 16:21	
10/05/2026 15:00	
शनि	18/04/2026 18:56
बुध	22/04/2026 11:08
केतु	23/04/2026 23:28
शुक्र	28/04/2026 07:14
सूर्य	29/04/2026 14:22
चंद्र	01/05/2026 18:15
मंगल	03/05/2026 06:35
राहु	07/05/2026 03:59
गुरु	10/05/2026 15:00

शुक्र - बुध - शनि - बुध	
10/05/2026 15:00	
02/06/2026 20:06	
बुध	13/05/2026 21:55
केतु	15/05/2026 06:25
शुक्र	19/05/2026 03:16
सूर्य	20/05/2026 07:07
चंद्र	22/05/2026 05:33
मंगल	23/05/2026 14:03
राहु	27/05/2026 01:37
गुरु	30/05/2026 03:54
शनि	02/06/2026 20:06

शुक्र - बुध - शनि - केतु	
02/06/2026 20:06	
12/06/2026 09:30	
केतु	03/06/2026 09:29
शुक्र	04/06/2026 23:43
सूर्य	05/06/2026 11:11
चंद्र	06/06/2026 06:18
मंगल	06/06/2026 19:41
राहु	08/06/2026 06:06
गुरु	09/06/2026 12:41
शनि	11/06/2026 01:00
बुध	12/06/2026 09:30

शुक्र - बुध - शनि - शुक्र	
12/06/2026 09:30	
09/07/2026 16:55	
शुक्र	16/06/2026 22:44
सूर्य	18/06/2026 07:30
चंद्र	20/06/2026 14:08
मंगल	22/06/2026 04:22
राहु	26/06/2026 06:40
गुरु	29/06/2026 22:04
शनि	04/07/2026 05:50
बुध	08/07/2026 02:41
केतु	09/07/2026 16:55

शुक्र - बुध - शनि - सूर्य	
09/07/2026 16:55	
17/07/2026 21:33	
सूर्य	10/07/2026 02:45
चंद्र	10/07/2026 19:08
मंगल	11/07/2026 06:36
राहु	12/07/2026 12:06
गुरु	13/07/2026 14:19
शनि	14/07/2026 21:27
बुध	16/07/2026 01:18
केतु	16/07/2026 12:47
शुक्र	17/07/2026 21:33

शुक्र - बुध - शनि - चंद्र	
17/07/2026 21:33	
31/07/2026 13:15	
चंद्र	19/07/2026 00:51
मंगल	19/07/2026 19:58
राहु	21/07/2026 21:08
गुरु	23/07/2026 16:49
शनि	25/07/2026 20:43
बुध	27/07/2026 19:08
केतु	28/07/2026 14:15
शुक्र	30/07/2026 20:52
सूर्य	31/07/2026 13:15

शुक्र - बुध - शनि - मंगल	
31/07/2026 13:15	
10/08/2026 02:39	
मंगल	01/08/2026 02:38
राहु	02/08/2026 13:03
गुरु	03/08/2026 19:38
शनि	05/08/2026 07:57
बुध	06/08/2026 16:27
केतु	07/08/2026 05:50
शुक्र	08/08/2026 20:04
सूर्य	09/08/2026 07:32
चंद्र	10/08/2026 02:39

शुक्र - बुध - शनि - राहु	
10/08/2026 02:39	
03/09/2026 16:32	
राहु	13/08/2026 19:08
गुरु	17/08/2026 01:47
शनि	20/08/2026 23:11
बुध	24/08/2026 10:45
केतु	25/08/2026 21:10
शुक्र	29/08/2026 23:28
सूर्य	31/08/2026 04:58
चंद्र	02/09/2026 06:07
मंगल	03/09/2026 16:32

शुक्र - बुध - शनि - गुरु	
03/09/2026 16:32	
25/09/2026 12:52	
गुरु	06/09/2026 14:27
शनि	10/09/2026 01:28
बुध	13/09/2026 03:45
केतु	14/09/2026 10:20
शुक्र	18/09/2026 01:43
सूर्य	19/09/2026 03:56
चंद्र	20/09/2026 23:38
मंगल	22/09/2026 06:13
राहु	25/09/2026 12:52

शुक्र - केतु - केतु - केतु	
25/09/2026 12:52	
26/09/2026 23:40	
केतु	25/09/2026 14:54
शुक्र	25/09/2026 20:42
सूर्य	25/09/2026 22:26
चंद्र	26/09/2026 01:20
मंगल	26/09/2026 03:22
राहु	26/09/2026 08:35
गुरु	26/09/2026 13:14
शनि	26/09/2026 18:44
बुध	26/09/2026 23:40

शुक्र - केतु - केतु - शुक्र	
26/09/2026 23:40	
01/10/2026 03:06	
शुक्र	27/09/2026 16:15
सूर्य	27/09/2026 21:13
चंद्र	28/09/2026 05:30
मंगल	28/09/2026 11:18
राहु	29/09/2026 02:13
गुरु	29/09/2026 15:28
शनि	30/09/2026 07:13
बुध	30/09/2026 21:18
केतु	01/10/2026 03:06

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 12 वर्ष 6 मास 2 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
15/08/1965		16/02/1978		16/02/1992		16/02/2007		16/02/2023	
16/02/1978		16/02/1992		16/02/2007		16/02/2023		16/02/2040	
गुरु	02/08/1966	शनि	26/10/1979	केतु	25/01/1994	चंद्र	02/05/2009	बुध	14/08/2025
शनि	26/02/1968	केतु	17/08/1981	चंद्र	20/02/1996	बुध	06/09/2011	शुक्र	04/04/2028
केतु	01/11/1969	चंद्र	24/07/1983	बुध	03/05/1998	शुक्र	01/03/2014	सूर्य	14/11/2029
चंद्र	18/08/1971	बुध	11/08/1985	शुक्र	30/08/2000	सूर्य	06/09/2015	मंगल	18/08/2031
बुध	14/07/1973	शुक्र	14/10/1987	सूर्य	31/01/2002	मंगल	02/05/2017	गुरु	14/07/2033
शुक्र	21/07/1975	सूर्य	09/02/1989	मंगल	21/08/2003	गुरु	16/02/2019	शनि	02/08/2035
सूर्य	13/10/1976	मंगल	23/07/1990	गुरु	26/04/2005	शनि	22/01/2021	केतु	13/10/2037
मंगल	16/02/1978	गुरु	16/02/1992	शनि	16/02/2007	केतु	16/02/2023	चंद्र	16/02/2040

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
16/02/2040		16/02/2058		16/02/2069		16/02/2081	
16/02/2058		16/02/2069		16/02/2081		00/00/0000	
शुक्र	03/12/2042	सूर्य	04/03/2059	मंगल	15/05/2070	गुरु	15/08/2081
सूर्य	17/08/2044	मंगल	23/04/2060	गुरु	18/09/2071		00/00/0000
मंगल	28/06/2046	गुरु	17/07/2061	शनि	28/02/2073		00/00/0000
गुरु	04/07/2048	शनि	14/11/2062	केतु	18/09/2074		00/00/0000
शनि	05/09/2050	केतु	16/04/2064	चंद्र	15/05/2076		00/00/0000
केतु	03/01/2053	चंद्र	22/10/2065	बुध	16/02/2078		00/00/0000
चंद्र	28/06/2055	बुध	03/06/2067	शुक्र	28/12/2079		00/00/0000
बुध	16/02/2058	शुक्र	16/02/2069	सूर्य	16/02/2081		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
15/08/1965		02/08/1966		26/02/1968		01/11/1969		18/08/1971	
02/08/1966		26/02/1968		01/11/1969		18/08/1971		14/07/1973	
	00/00/0000	शनि	10/10/1966	केतु	15/05/1968	चंद्र	30/01/1970	बुध	28/11/1971
	15/08/1965	केतु	23/12/1966	चंद्र	08/08/1968	बुध	06/05/1970	शुक्र	15/03/1972
केतु	27/08/1965	चंद्र	12/03/1967	बुध	06/11/1968	शुक्र	16/08/1970	सूर्य	20/05/1972
चंद्र	09/11/1965	बुध	04/06/1967	शुक्र	09/02/1969	सूर्य	17/10/1970	मंगल	31/07/1972
बुध	26/01/1966	शुक्र	01/09/1967	सूर्य	08/04/1969	मंगल	24/12/1970	गुरु	17/10/1972
शुक्र	18/04/1966	सूर्य	25/10/1967	मंगल	11/06/1969	गुरु	07/03/1971	शनि	09/01/1973
सूर्य	08/06/1966	मंगल	24/12/1967	गुरु	19/08/1969	शनि	25/05/1971	केतु	09/04/1973
मंगल	02/08/1966	गुरु	26/02/1968	शनि	01/11/1969	केतु	18/08/1971	चंद्र	14/07/1973

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
14/07/1973		21/07/1975		13/10/1976		16/02/1978		26/10/1979	
21/07/1975		13/10/1976		16/02/1978		26/10/1979		17/08/1981	
शुक्र	05/11/1973	सूर्य	01/09/1975	मंगल	03/12/1976	शनि	01/05/1978	केतु	20/01/1980
सूर्य	14/01/1974	मंगल	18/10/1975	गुरु	27/01/1977	केतु	20/07/1978	चंद्र	20/04/1980
मंगल	31/03/1974	गुरु	07/12/1975	शनि	27/03/1977	चंद्र	13/10/1978	बुध	26/07/1980
गुरु	22/06/1974	शनि	31/01/1976	केतु	29/05/1977	बुध	12/01/1979	शुक्र	05/11/1980
शनि	19/09/1974	केतु	29/03/1976	चंद्र	05/08/1977	शुक्र	18/04/1979	सूर्य	07/01/1981
केतु	23/12/1974	चंद्र	30/05/1976	बुध	16/10/1977	सूर्य	15/06/1979	मंगल	16/03/1981
चंद्र	04/04/1975	बुध	04/08/1976	शुक्र	31/12/1977	मंगल	18/08/1979	गुरु	30/05/1981
बुध	21/07/1975	शुक्र	13/10/1976	सूर्य	16/02/1978	गुरु	26/10/1979	शनि	17/08/1981

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
17/08/1981		24/07/1983		11/08/1985		14/10/1987		09/02/1989	
24/07/1983		11/08/1985		14/10/1987		09/02/1989		23/07/1990	
चंद्र	23/11/1981	बुध	10/11/1983	शुक्र	12/12/1985	सूर्य	28/11/1987	मंगल	05/04/1989
बुध	06/03/1982	शुक्र	06/03/1984	सूर्य	25/02/1986	मंगल	18/01/1988	गुरु	03/06/1989
शुक्र	23/06/1982	सूर्य	16/05/1984	मंगल	18/05/1986	गुरु	12/03/1988	शनि	06/08/1989
सूर्य	29/08/1982	मंगल	01/08/1984	गुरु	15/08/1986	शनि	10/05/1988	केतु	14/10/1989
मंगल	10/11/1982	गुरु	24/10/1984	शनि	19/11/1986	केतु	11/07/1988	चंद्र	26/12/1989
गुरु	28/01/1983	शनि	23/01/1985	केतु	02/03/1987	चंद्र	16/09/1988	बुध	13/03/1990
शनि	23/04/1983	केतु	30/04/1985	चंद्र	19/06/1987	बुध	26/11/1988	शुक्र	03/06/1990
केतु	24/07/1983	चंद्र	11/08/1985	बुध	14/10/1987	शुक्र	09/02/1989	सूर्य	23/07/1990

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
23/07/1990		16/02/1992		25/01/1994		20/02/1996		03/05/1998	
16/02/1992		25/01/1994		20/02/1996		03/05/1998		30/08/2000	
गुरु	26/09/1990	केतु	18/05/1992	चंद्र	09/05/1994	बुध	16/06/1996	शुक्र	11/09/1998
शनि	04/12/1990	चंद्र	24/08/1992	बुध	28/08/1994	शुक्र	19/10/1996	सूर्य	01/12/1998
केतु	16/02/1991	बुध	06/12/1992	शुक्र	23/12/1994	सूर्य	03/01/1997	मंगल	27/02/1999
चंद्र	06/05/1991	शुक्र	26/03/1993	सूर्य	05/03/1995	मंगल	27/03/1997	गुरु	02/06/1999
बुध	29/07/1991	सूर्य	01/06/1993	मंगल	22/05/1995	गुरु	25/06/1997	शनि	13/09/1999
शुक्र	26/10/1991	मंगल	13/08/1993	गुरु	15/08/1995	शनि	30/09/1997	केतु	01/01/2000
सूर्य	19/12/1991	गुरु	31/10/1993	शनि	14/11/1995	केतु	12/01/1998	चंद्र	27/04/2000
मंगल	16/02/1992	शनि	25/01/1994	केतु	20/02/1996	चंद्र	03/05/1998	बुध	30/08/2000

केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र	
30/08/2000		31/01/2002		21/08/2003		26/04/2005		16/02/2007	
31/01/2002		21/08/2003		26/04/2005		16/02/2007		02/05/2009	
सूर्य	18/10/2000	मंगल	31/03/2002	गुरु	29/10/2003	शनि	15/07/2005	चंद्र	07/06/2007
मंगल	11/12/2000	गुरु	02/06/2002	शनि	11/01/2004	केतु	08/10/2005	बुध	04/10/2007
गुरु	07/02/2001	शनि	10/08/2002	केतु	30/03/2004	चंद्र	07/01/2006	शुक्र	06/02/2008
शनि	11/04/2001	केतु	22/10/2002	चंद्र	23/06/2004	बुध	14/04/2006	सूर्य	22/04/2008
केतु	17/06/2001	चंद्र	08/01/2003	बुध	21/09/2004	शुक्र	26/07/2006	मंगल	14/07/2008
चंद्र	27/08/2001	बुध	01/04/2003	शुक्र	25/12/2004	सूर्य	27/09/2006	गुरु	13/10/2008
बुध	12/11/2001	शुक्र	28/06/2003	सूर्य	21/02/2005	मंगल	04/12/2006	शनि	18/01/2009
शुक्र	31/01/2002	सूर्य	21/08/2003	मंगल	26/04/2005	गुरु	16/02/2007	केतु	02/05/2009

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
02/05/2009		06/09/2011		01/03/2014		06/09/2015		02/05/2017	
06/09/2011		01/03/2014		06/09/2015		02/05/2017		16/02/2019	
बुध	05/09/2009	शुक्र	24/01/2012	सूर्य	22/04/2014	मंगल	07/11/2015	गुरु	15/07/2017
शुक्र	16/01/2010	सूर्य	19/04/2012	मंगल	18/06/2014	गुरु	14/01/2016	शनि	02/10/2017
सूर्य	07/04/2010	मंगल	22/07/2012	गुरु	20/08/2014	शनि	27/03/2016	केतु	25/12/2017
मंगल	05/07/2010	गुरु	01/11/2012	शनि	25/10/2014	केतु	13/06/2016	चंद्र	26/03/2018
गुरु	08/10/2010	शनि	18/02/2013	केतु	05/01/2015	चंद्र	05/09/2016	बुध	30/06/2018
शनि	20/01/2011	केतु	16/06/2013	चंद्र	23/03/2015	बुध	02/12/2016	शुक्र	09/10/2018
केतु	11/05/2011	चंद्र	19/10/2013	बुध	12/06/2015	शुक्र	06/03/2017	सूर्य	10/12/2018
चंद्र	06/09/2011	बुध	01/03/2014	शुक्र	06/09/2015	सूर्य	02/05/2017	मंगल	16/02/2019

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
16/02/2019		22/01/2021		16/02/2023		14/08/2025		04/04/2028	
22/01/2021		16/02/2023		14/08/2025		04/04/2028		14/11/2029	
शनि	12/05/2019	केतु	29/04/2021	बुध	30/06/2023	शुक्र	11/01/2026	सूर्य	30/05/2028
केतु	12/08/2019	चंद्र	11/08/2021	शुक्र	18/11/2023	सूर्य	12/04/2026	मंगल	29/07/2028
चंद्र	17/11/2019	बुध	30/11/2021	सूर्य	12/02/2024	मंगल	21/07/2026	गुरु	03/10/2028
बुध	28/02/2020	शुक्र	27/03/2022	मंगल	16/05/2024	गुरु	06/11/2026	शनि	13/12/2028
शुक्र	17/06/2020	सूर्य	07/06/2022	गुरु	26/08/2024	शनि	02/03/2027	केतु	28/02/2029
सूर्य	23/08/2020	मंगल	24/08/2022	शनि	14/12/2024	केतु	05/07/2027	चंद्र	20/05/2029
मंगल	03/11/2020	गुरु	17/11/2022	केतु	11/04/2025	चंद्र	14/11/2027	बुध	14/08/2029
गुरु	22/01/2021	शनि	16/02/2023	चंद्र	14/08/2025	बुध	04/04/2028	शुक्र	14/11/2029

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
14/11/2029		18/08/2031		14/07/2033		02/08/2035		13/10/2037	
18/08/2031		14/07/2033		02/08/2035		13/10/2037		16/02/2040	
मंगल	19/01/2030	गुरु	04/11/2031	शनि	12/10/2033	केतु	14/11/2035	चंद्र	08/02/2038
गुरु	01/04/2030	शनि	27/01/2032	केतु	17/01/2034	चंद्र	04/03/2036	बुध	14/06/2038
शनि	17/06/2030	केतु	26/04/2032	चंद्र	30/04/2034	बुध	29/06/2036	शुक्र	25/10/2038
केतु	09/09/2030	चंद्र	31/07/2032	बुध	18/08/2034	शुक्र	01/11/2036	सूर्य	14/01/2039
चंद्र	06/12/2030	बुध	10/11/2032	शुक्र	13/12/2034	सूर्य	16/01/2037	मंगल	12/04/2039
बुध	10/03/2031	शुक्र	26/02/2033	सूर्य	22/02/2035	मंगल	09/04/2037	गुरु	17/07/2039
शुक्र	18/06/2031	सूर्य	03/05/2033	मंगल	10/05/2035	गुरु	08/07/2037	शनि	29/10/2039
सूर्य	18/08/2031	मंगल	14/07/2033	गुरु	02/08/2035	शनि	13/10/2037	केतु	16/02/2040

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
16/02/2040		03/12/2042		17/08/2044		28/06/2046		04/07/2048	
03/12/2042		17/08/2044		28/06/2046		04/07/2048		05/09/2050	
शुक्र	24/07/2040	सूर्य	31/01/2043	मंगल	26/10/2044	गुरु	19/09/2046	शनि	08/10/2048
सूर्य	29/10/2040	मंगल	05/04/2043	गुरु	11/01/2045	शनि	17/12/2046	केतु	18/01/2049
मंगल	11/02/2041	गुरु	14/06/2043	शनि	03/04/2045	केतु	22/03/2047	चंद्र	08/05/2049
गुरु	05/06/2041	शनि	28/08/2043	केतु	30/06/2045	चंद्र	02/07/2047	बुध	01/09/2049
शनि	07/10/2041	केतु	17/11/2043	चंद्र	02/10/2045	बुध	18/10/2047	शुक्र	02/01/2050
केतु	15/02/2042	चंद्र	11/02/2044	बुध	09/01/2046	शुक्र	09/02/2048	सूर्य	18/03/2050
चंद्र	06/07/2042	बुध	12/05/2044	शुक्र	25/04/2046	सूर्य	19/04/2048	मंगल	09/06/2050
बुध	03/12/2042	शुक्र	17/08/2044	सूर्य	28/06/2046	मंगल	04/07/2048	गुरु	05/09/2050

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल	
05/09/2050		03/01/2053		28/06/2055		16/02/2058		04/03/2059	
03/01/2053		28/06/2055		16/02/2058		04/03/2059		23/04/2060	
केतु	24/12/2050	चंद्र	08/05/2053	बुध	17/11/2055	सूर्य	24/03/2058	मंगल	16/04/2059
चंद्र	21/04/2051	बुध	18/09/2053	शुक्र	14/04/2056	मंगल	03/05/2058	गुरु	02/06/2059
बुध	23/08/2051	शुक्र	05/02/2054	सूर्य	15/07/2056	गुरु	14/06/2058	शनि	22/07/2059
शुक्र	02/01/2052	सूर्य	02/05/2054	मंगल	22/10/2056	शनि	30/07/2058	केतु	13/09/2059
सूर्य	23/03/2052	मंगल	04/08/2054	गुरु	07/02/2057	केतु	17/09/2058	चंद्र	10/11/2059
मंगल	19/06/2052	गुरु	14/11/2054	शनि	03/06/2057	चंद्र	09/11/2058	बुध	10/01/2060
गुरु	22/09/2052	शनि	03/03/2055	केतु	06/10/2057	बुध	04/01/2059	शुक्र	14/03/2060
शनि	03/01/2053	केतु	28/06/2055	चंद्र	16/02/2058	शुक्र	04/03/2059	सूर्य	23/04/2060

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
23/04/2060		17/07/2061		14/11/2062		16/04/2064		22/10/2065	
17/07/2061		14/11/2062		16/04/2064		22/10/2065		03/06/2067	
गुरु	12/06/2060	शनि	13/09/2061	केतु	20/01/2063	चंद्र	02/07/2064	बुध	17/01/2066
शनि	05/08/2060	केतु	15/11/2061	चंद्र	02/04/2063	बुध	21/09/2064	शुक्र	18/04/2066
केतु	03/10/2060	चंद्र	21/01/2062	बुध	17/06/2063	शुक्र	16/12/2064	सूर्य	13/06/2066
चंद्र	04/12/2060	बुध	02/04/2062	शुक्र	05/09/2063	सूर्य	06/02/2065	मंगल	13/08/2066
बुध	08/02/2061	शुक्र	16/06/2062	सूर्य	25/10/2063	मंगल	05/04/2065	गुरु	18/10/2066
शुक्र	19/04/2061	सूर्य	01/08/2062	मंगल	17/12/2063	गुरु	06/06/2065	शनि	28/12/2066
सूर्य	31/05/2061	मंगल	20/09/2062	गुरु	14/02/2064	शनि	12/08/2065	केतु	14/03/2067
मंगल	17/07/2061	गुरु	14/11/2062	शनि	16/04/2064	केतु	22/10/2065	चंद्र	03/06/2067

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
03/06/2067		16/02/2069		15/05/2070		18/09/2071		28/02/2073	
16/02/2069		15/05/2070		18/09/2071		28/02/2073		18/09/2074	
शुक्र	08/09/2067	मंगल	04/04/2069	गुरु	09/07/2070	शनि	21/11/2071	केतु	13/05/2073
सूर्य	06/11/2067	गुरु	24/05/2069	शनि	06/09/2070	केतु	29/01/2072	चंद्र	30/07/2073
मंगल	10/01/2068	शनि	18/07/2069	केतु	09/11/2070	चंद्र	11/04/2072	बुध	21/10/2073
गुरु	19/03/2068	केतु	15/09/2069	चंद्र	16/01/2071	बुध	27/06/2072	शुक्र	17/01/2074
शनि	03/06/2068	चंद्र	16/11/2069	बुध	29/03/2071	शुक्र	17/09/2072	सूर्य	12/03/2074
केतु	22/08/2068	बुध	22/01/2070	शुक्र	13/06/2071	सूर्य	06/11/2072	मंगल	09/05/2074
चंद्र	16/11/2068	शुक्र	02/04/2070	सूर्य	30/07/2071	मंगल	31/12/2072	गुरु	12/07/2074
बुध	16/02/2069	सूर्य	15/05/2070	मंगल	18/09/2071	गुरु	28/02/2073	शनि	18/09/2074

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 12 वर्ष 2 मास 6 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
15/08/1965		22/10/1977		20/02/1989		22/10/1993		21/02/2007	
22/10/1977		20/02/1989		22/10/1993		21/02/2007		21/02/2011	
शनि	23/02/1967	बुध	31/05/1979	केतु	31/05/1989	शुक्र	12/01/1996	सूर्य	05/05/2007
बुध	09/12/1968	केतु	28/01/1980	शुक्र	11/03/1990	सूर्य	11/09/1996	चंद्र	04/09/2007
केतु	05/09/1969	शुक्र	18/12/1981	सूर्य	04/06/1990	चंद्र	22/10/1997	मंगल	28/11/2007
शुक्र	16/10/1971	सूर्य	13/07/1982	चंद्र	24/10/1990	मंगल	02/08/1998	राहु	04/07/2008
सूर्य	04/06/1972	चंद्र	23/06/1983	मंगल	01/02/1991	राहु	01/08/2000	गुरु	15/01/2009
चंद्र	24/06/1973	मंगल	19/02/1984	राहु	14/10/1991	गुरु	13/05/2002	शनि	03/09/2009
मंगल	21/03/1974	राहु	01/11/1985	गुरु	28/05/1992	शनि	22/06/2004	बुध	29/03/2010
राहु	13/02/1976	गुरु	07/05/1987	शनि	22/02/1993	बुध	13/05/2006	केतु	22/06/2010
गुरु	22/10/1977	शनि	20/02/1989	बुध	22/10/1993	केतु	21/02/2007	शुक्र	21/02/2011

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
21/02/2011		22/10/2017		22/06/2022		22/06/2034		20/02/2045	
22/10/2017		22/06/2022		22/06/2034		20/02/2045		00/00/0000	
चंद्र	12/09/2011	मंगल	29/01/2018	राहु	10/04/2024	गुरु	24/11/2035	शनि	15/08/2045
मंगल	01/02/2012	राहु	12/10/2018	गुरु	15/11/2025	शनि	02/08/2037		00/00/0000
राहु	31/01/2013	गुरु	27/05/2019	शनि	10/10/2027	बुध	05/02/2039		00/00/0000
गुरु	22/12/2013	शनि	21/02/2020	बुध	22/06/2029	केतु	20/09/2039		00/00/0000
शनि	11/01/2015	बुध	20/10/2020	केतु	05/03/2030	शुक्र	30/06/2041		00/00/0000
बुध	22/12/2015	केतु	27/01/2021	शुक्र	04/03/2032	सूर्य	11/01/2042		00/00/0000
केतु	12/05/2016	शुक्र	07/11/2021	सूर्य	09/10/2032	चंद्र	02/12/2042		00/00/0000
शुक्र	22/06/2017	सूर्य	31/01/2022	चंद्र	10/10/2033	मंगल	17/07/2043		00/00/0000
सूर्य	22/10/2017	चंद्र	22/06/2022	मंगल	22/06/2034	राहु	20/02/2045		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
15/08/1965		23/02/1967		09/12/1968		05/09/1969		16/10/1971	
23/02/1967		09/12/1968		05/09/1969		16/10/1971		04/06/1972	
	15/08/1965	बुध	27/05/1967	केतु	25/12/1968	शुक्र	12/01/1970	सूर्य	28/10/1971
बुध	28/09/1965	केतु	04/07/1967	शुक्र	08/02/1969	सूर्य	19/02/1970	चंद्र	16/11/1971
केतु	10/11/1965	शुक्र	21/10/1967	सूर्य	22/02/1969	चंद्र	24/04/1970	मंगल	30/11/1971
शुक्र	12/03/1966	सूर्य	23/11/1967	चंद्र	16/03/1969	मंगल	08/06/1970	राहु	03/01/1972
सूर्य	18/04/1966	चंद्र	17/01/1968	मंगल	01/04/1969	राहु	02/10/1970	गुरु	03/02/1972
चंद्र	18/06/1966	मंगल	24/02/1968	राहु	11/05/1969	गुरु	13/01/1971	शनि	11/03/1972
मंगल	30/07/1966	राहु	01/06/1968	गुरु	16/06/1969	शनि	15/05/1971	बुध	13/04/1972
राहु	17/11/1966	गुरु	28/08/1968	शनि	29/07/1969	बुध	01/09/1971	केतु	26/04/1972
गुरु	23/02/1967	शनि	09/12/1968	बुध	05/09/1969	केतु	16/10/1971	शुक्र	04/06/1972

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
04/06/1972		24/06/1973		21/03/1974		13/02/1976		22/10/1977	
24/06/1973		21/03/1974		13/02/1976		22/10/1977		31/05/1979	
चंद्र	06/07/1972	मंगल	10/07/1973	राहु	03/07/1974	गुरु	05/05/1976	बुध	13/01/1978
मंगल	28/07/1972	राहु	19/08/1973	गुरु	04/10/1974	शनि	11/08/1976	केतु	16/02/1978
राहु	24/09/1972	गुरु	24/09/1973	शनि	22/01/1975	बुध	06/11/1976	शुक्र	25/05/1978
गुरु	14/11/1972	शनि	06/11/1973	बुध	30/04/1975	केतु	12/12/1976	सूर्य	23/06/1978
शनि	14/01/1973	बुध	14/12/1973	केतु	09/06/1975	शुक्र	25/03/1977	चंद्र	11/08/1978
बुध	10/03/1973	केतु	30/12/1973	शुक्र	03/10/1975	सूर्य	25/04/1977	मंगल	14/09/1978
केतु	02/04/1973	शुक्र	13/02/1974	सूर्य	07/11/1975	चंद्र	15/06/1977	राहु	11/12/1978
शुक्र	05/06/1973	सूर्य	27/02/1974	चंद्र	03/01/1976	मंगल	21/07/1977	गुरु	27/02/1979
सूर्य	24/06/1973	चंद्र	21/03/1974	मंगल	13/02/1976	राहु	22/10/1977	शनि	31/05/1979

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
31/05/1979		28/01/1980		18/12/1981		13/07/1982		23/06/1983	
28/01/1980		18/12/1981		13/07/1982		23/06/1983		19/02/1984	
केतु	14/06/1979	शुक्र	22/05/1980	सूर्य	28/12/1981	चंद्र	10/08/1982	मंगल	07/07/1983
शुक्र	25/07/1979	सूर्य	25/06/1980	चंद्र	14/01/1982	मंगल	31/08/1982	राहु	12/08/1983
सूर्य	06/08/1979	चंद्र	22/08/1980	मंगल	26/01/1982	राहु	21/10/1982	गुरु	13/09/1983
चंद्र	26/08/1979	मंगल	01/10/1980	राहु	26/02/1982	गुरु	06/12/1982	शनि	21/10/1983
मंगल	09/09/1979	राहु	12/01/1981	गुरु	26/03/1982	शनि	30/01/1983	बुध	25/11/1983
राहु	15/10/1979	गुरु	14/04/1981	शनि	28/04/1982	बुध	20/03/1983	केतु	09/12/1983
गुरु	16/11/1979	शनि	02/08/1981	बुध	27/05/1982	केतु	09/04/1983	शुक्र	18/01/1984
शनि	25/12/1979	बुध	07/11/1981	केतु	08/06/1982	शुक्र	05/06/1983	सूर्य	30/01/1984
बुध	28/01/1980	केतु	18/12/1981	शुक्र	13/07/1982	सूर्य	23/06/1983	चंद्र	19/02/1984

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
19/02/1984		01/11/1985		07/05/1987		20/02/1989		31/05/1989	
01/11/1985		07/05/1987		20/02/1989		31/05/1989		11/03/1990	
राहु	22/05/1984	गुरु	14/01/1986	शनि	19/08/1987	केतु	26/02/1989	शुक्र	17/07/1989
गुरु	13/08/1984	शनि	11/04/1986	बुध	20/11/1987	शुक्र	15/03/1989	सूर्य	31/07/1989
शनि	19/11/1984	बुध	28/06/1986	केतु	28/12/1987	सूर्य	20/03/1989	चंद्र	24/08/1989
बुध	15/02/1985	केतु	30/07/1986	शुक्र	15/04/1988	चंद्र	28/03/1989	मंगल	10/09/1989
केतु	23/03/1985	शुक्र	30/10/1986	सूर्य	18/05/1988	मंगल	03/04/1989	राहु	22/10/1989
शुक्र	05/07/1985	सूर्य	27/11/1986	चंद्र	11/07/1988	राहु	18/04/1989	गुरु	29/11/1989
सूर्य	05/08/1985	चंद्र	12/01/1987	मंगल	19/08/1988	गुरु	01/05/1989	शनि	13/01/1990
चंद्र	26/09/1985	मंगल	13/02/1987	राहु	25/11/1988	शनि	17/05/1989	बुध	22/02/1990
मंगल	01/11/1985	राहु	07/05/1987	गुरु	20/02/1989	बुध	31/05/1989	केतु	11/03/1990

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
11/03/1990		04/06/1990		24/10/1990		01/02/1991		14/10/1991	
04/06/1990		24/10/1990		01/02/1991		14/10/1991		28/05/1992	
सूर्य	15/03/1990	चंद्र	16/06/1990	मंगल	30/10/1990	राहु	11/03/1991	गुरु	14/11/1991
चंद्र	22/03/1990	मंगल	24/06/1990	राहु	14/11/1990	गुरु	14/04/1991	शनि	20/12/1991
मंगल	27/03/1990	राहु	16/07/1990	गुरु	27/11/1990	शनि	24/05/1991	बुध	21/01/1992
राहु	09/04/1990	गुरु	03/08/1990	शनि	13/12/1990	बुध	30/06/1991	केतु	03/02/1992
गुरु	20/04/1990	शनि	26/08/1990	बुध	27/12/1990	केतु	15/07/1991	शुक्र	12/03/1992
शनि	04/05/1990	बुध	15/09/1990	केतु	02/01/1991	शुक्र	26/08/1991	सूर्य	23/03/1992
बुध	16/05/1990	केतु	23/09/1990	शुक्र	18/01/1991	सूर्य	08/09/1991	चंद्र	11/04/1992
केतु	21/05/1990	शुक्र	17/10/1990	सूर्य	23/01/1991	चंद्र	29/09/1991	मंगल	24/04/1992
शुक्र	04/06/1990	सूर्य	24/10/1990	चंद्र	01/02/1991	मंगल	14/10/1991	राहु	28/05/1992

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
28/05/1992		22/02/1993		22/10/1993		12/01/1996		11/09/1996	
22/02/1993		22/10/1993		12/01/1996		11/09/1996		22/10/1997	
शनि	10/07/1992	बुध	29/03/1993	शुक्र	06/03/1994	सूर्य	24/01/1996	चंद्र	15/10/1996
बुध	17/08/1992	केतु	12/04/1993	सूर्य	16/04/1994	चंद्र	13/02/1996	मंगल	08/11/1996
केतु	02/09/1992	शुक्र	22/05/1993	चंद्र	22/06/1994	मंगल	27/02/1996	राहु	07/01/1997
शुक्र	17/10/1992	सूर्य	03/06/1993	मंगल	09/08/1994	राहु	04/04/1996	गुरु	02/03/1997
सूर्य	31/10/1992	चंद्र	23/06/1993	राहु	08/12/1994	गुरु	06/05/1996	शनि	06/05/1997
चंद्र	22/11/1992	मंगल	07/07/1993	गुरु	27/03/1995	शनि	14/06/1996	बुध	02/07/1997
मंगल	08/12/1992	राहु	12/08/1993	शनि	02/08/1995	बुध	18/07/1996	केतु	26/07/1997
राहु	17/01/1993	गुरु	14/09/1993	बुध	25/11/1995	केतु	01/08/1996	शुक्र	02/10/1997
गुरु	22/02/1993	शनि	22/10/1993	केतु	12/01/1996	शुक्र	11/09/1996	सूर्य	22/10/1997

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
22/10/1997		02/08/1998		01/08/2000		13/05/2002		22/06/2004	
02/08/1998		01/08/2000		13/05/2002		22/06/2004		13/05/2006	
मंगल	07/11/1997	राहु	20/11/1998	गुरु	27/10/2000	शनि	12/09/2002	बुध	28/09/2004
राहु	20/12/1997	गुरु	25/02/1999	शनि	07/02/2001	बुध	30/12/2002	केतु	07/11/2004
गुरु	27/01/1998	शनि	21/06/1999	बुध	10/05/2001	केतु	13/02/2003	शुक्र	02/03/2005
शनि	13/03/1998	बुध	02/10/1999	केतु	17/06/2001	शुक्र	22/06/2003	सूर्य	05/04/2005
बुध	22/04/1998	केतु	14/11/1999	शुक्र	03/10/2001	सूर्य	30/07/2003	चंद्र	02/06/2005
केतु	09/05/1998	शुक्र	14/03/2000	सूर्य	04/11/2001	चंद्र	02/10/2003	मंगल	12/07/2005
शुक्र	25/06/1998	सूर्य	20/04/2000	चंद्र	28/12/2001	मंगल	16/11/2003	राहु	24/10/2005
सूर्य	09/07/1998	चंद्र	20/06/2000	मंगल	04/02/2002	राहु	11/03/2004	गुरु	24/01/2006
चंद्र	02/08/1998	मंगल	01/08/2000	राहु	13/05/2002	गुरु	22/06/2004	शनि	13/05/2006

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
13/05/2006		21/02/2007		05/05/2007		04/09/2007		28/11/2007	
21/02/2007		05/05/2007		04/09/2007		28/11/2007		04/07/2008	
केतु	29/05/2006	सूर्य	24/02/2007	चंद्र	15/05/2007	मंगल	09/09/2007	राहु	31/12/2007
शुक्र	16/07/2006	चंद्र	03/03/2007	मंगल	22/05/2007	राहु	21/09/2007	गुरु	29/01/2008
सूर्य	30/07/2006	मंगल	07/03/2007	राहु	09/06/2007	गुरु	03/10/2007	शनि	04/03/2008
चंद्र	23/08/2006	राहु	18/03/2007	गुरु	26/06/2007	शनि	16/10/2007	बुध	04/04/2008
मंगल	08/09/2006	गुरु	28/03/2007	शनि	15/07/2007	बुध	28/10/2007	केतु	16/04/2008
राहु	21/10/2006	शनि	08/04/2007	बुध	01/08/2007	केतु	02/11/2007	शुक्र	23/05/2008
गुरु	28/11/2006	बुध	18/04/2007	केतु	08/08/2007	शुक्र	17/11/2007	सूर्य	03/06/2008
शनि	12/01/2007	केतु	23/04/2007	शुक्र	29/08/2007	सूर्य	21/11/2007	चंद्र	21/06/2008
बुध	21/02/2007	शुक्र	05/05/2007	सूर्य	04/09/2007	चंद्र	28/11/2007	मंगल	04/07/2008

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
04/07/2008		15/01/2009		03/09/2009		29/03/2010		22/06/2010	
15/01/2009		03/09/2009		29/03/2010		22/06/2010		21/02/2011	
गुरु	30/07/2008	शनि	20/02/2009	बुध	02/10/2009	केतु	03/04/2010	शुक्र	02/08/2010
शनि	30/08/2008	बुध	25/03/2009	केतु	15/10/2009	शुक्र	17/04/2010	सूर्य	14/08/2010
बुध	26/09/2008	केतु	08/04/2009	शुक्र	18/11/2009	सूर्य	22/04/2010	चंद्र	03/09/2010
केतु	08/10/2008	शुक्र	16/05/2009	सूर्य	28/11/2009	चंद्र	29/04/2010	मंगल	18/09/2010
शुक्र	09/11/2008	सूर्य	28/05/2009	चंद्र	16/12/2009	मंगल	04/05/2010	राहु	24/10/2010
सूर्य	19/11/2008	चंद्र	16/06/2009	मंगल	28/12/2009	राहु	16/05/2010	गुरु	26/11/2010
चंद्र	05/12/2008	मंगल	30/06/2009	राहु	28/01/2010	गुरु	28/05/2010	शनि	03/01/2011
मंगल	17/12/2008	राहु	03/08/2009	गुरु	24/02/2010	शनि	10/06/2010	बुध	07/02/2011
राहु	15/01/2009	गुरु	03/09/2009	शनि	29/03/2010	बुध	22/06/2010	केतु	21/02/2011

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
21/02/2011	
12/09/2011	
चंद्र	10/03/2011
मंगल	22/03/2011
राहु	21/04/2011
गुरु	18/05/2011
शनि	19/06/2011
बुध	18/07/2011
केतु	30/07/2011
शुक्र	02/09/2011
सूर्य	12/09/2011

चंद्र - मंगल	
12/09/2011	
01/02/2012	
मंगल	20/09/2011
राहु	11/10/2011
गुरु	30/10/2011
शनि	22/11/2011
बुध	12/12/2011
केतु	20/12/2011
शुक्र	13/01/2012
सूर्य	20/01/2012
चंद्र	01/02/2012

चंद्र - राहु	
01/02/2012	
31/01/2013	
राहु	27/03/2012
गुरु	14/05/2012
शनि	11/07/2012
बुध	01/09/2012
केतु	22/09/2012
शुक्र	22/11/2012
सूर्य	10/12/2012
चंद्र	10/01/2013
मंगल	31/01/2013

चंद्र - गुरु	
31/01/2013	
22/12/2013	
गुरु	15/03/2013
शनि	06/05/2013
बुध	21/06/2013
केतु	10/07/2013
शुक्र	02/09/2013
सूर्य	18/09/2013
चंद्र	15/10/2013
मंगल	03/11/2013
राहु	22/12/2013

चंद्र - शनि	
22/12/2013	
11/01/2015	
शनि	21/02/2014
बुध	16/04/2014
केतु	09/05/2014
शुक्र	12/07/2014
सूर्य	31/07/2014
चंद्र	02/09/2014
मंगल	24/09/2014
राहु	21/11/2014
गुरु	11/01/2015

चंद्र - बुध	
11/01/2015	
22/12/2015	
बुध	01/03/2015
केतु	21/03/2015
शुक्र	18/05/2015
सूर्य	04/06/2015
चंद्र	03/07/2015
मंगल	23/07/2015
राहु	13/09/2015
गुरु	29/10/2015
शनि	22/12/2015

चंद्र - केतु	
22/12/2015	
12/05/2016	
केतु	31/12/2015
शुक्र	23/01/2016
सूर्य	30/01/2016
चंद्र	11/02/2016
मंगल	19/02/2016
राहु	12/03/2016
गुरु	31/03/2016
शनि	22/04/2016
बुध	12/05/2016

चंद्र - शुक्र	
12/05/2016	
22/06/2017	
शुक्र	19/07/2016
सूर्य	08/08/2016
चंद्र	11/09/2016
मंगल	05/10/2016
राहु	05/12/2016
गुरु	28/01/2017
शनि	02/04/2017
बुध	29/05/2017
केतु	22/06/2017

चंद्र - सूर्य	
22/06/2017	
22/10/2017	
सूर्य	28/06/2017
चंद्र	08/07/2017
मंगल	15/07/2017
राहु	03/08/2017
गुरु	19/08/2017
शनि	07/09/2017
बुध	24/09/2017
केतु	02/10/2017
शुक्र	22/10/2017

मंगल - मंगल	
22/10/2017	
29/01/2018	
मंगल	28/10/2017
राहु	12/11/2017
गुरु	25/11/2017
शनि	11/12/2017
बुध	25/12/2017
केतु	30/12/2017
शुक्र	16/01/2018
सूर्य	21/01/2018
चंद्र	29/01/2018

मंगल - राहु	
29/01/2018	
12/10/2018	
राहु	09/03/2018
गुरु	12/04/2018
शनि	22/05/2018
बुध	27/06/2018
केतु	12/07/2018
शुक्र	24/08/2018
सूर्य	06/09/2018
चंद्र	27/09/2018
मंगल	12/10/2018

मंगल - गुरु	
12/10/2018	
27/05/2019	
गुरु	11/11/2018
शनि	17/12/2018
बुध	18/01/2019
केतु	01/02/2019
शुक्र	11/03/2019
सूर्य	22/03/2019
चंद्र	10/04/2019
मंगल	23/04/2019
राहु	27/05/2019

मंगल - शनि	
27/05/2019	
21/02/2020	
शनि	09/07/2019
बुध	16/08/2019
केतु	01/09/2019
शुक्र	16/10/2019
सूर्य	29/10/2019
चंद्र	21/11/2019
मंगल	07/12/2019
राहु	16/01/2020
गुरु	21/02/2020

मंगल - बुध	
21/02/2020	
20/10/2020	
बुध	26/03/2020
केतु	09/04/2020
शुक्र	20/05/2020
सूर्य	01/06/2020
चंद्र	21/06/2020
मंगल	05/07/2020
राहु	10/08/2020
गुरु	11/09/2020
शनि	20/10/2020

मंगल - केतु	
20/10/2020	
27/01/2021	
केतु	25/10/2020
शुक्र	11/11/2020
सूर्य	16/11/2020
चंद्र	24/11/2020
मंगल	30/11/2020
राहु	15/12/2020
गुरु	28/12/2020
शनि	13/01/2021
बुध	27/01/2021

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
27/01/2021		07/11/2021		31/01/2022		22/06/2022		10/04/2024	
07/11/2021		31/01/2022		22/06/2022		10/04/2024		15/11/2025	
शुक्र	15/03/2021	सूर्य	11/11/2021	चंद्र	12/02/2022	राहु	29/09/2022	गुरु	27/06/2024
सूर्य	30/03/2021	चंद्र	18/11/2021	मंगल	20/02/2022	गुरु	26/12/2022	शनि	27/09/2024
चंद्र	22/04/2021	मंगल	23/11/2021	राहु	14/03/2022	शनि	09/04/2023	बुध	19/12/2024
मंगल	09/05/2021	राहु	06/12/2021	गुरु	02/04/2022	बुध	11/07/2023	केतु	22/01/2025
राहु	20/06/2021	गुरु	18/12/2021	शनि	24/04/2022	केतु	18/08/2023	शुक्र	30/04/2025
गुरु	28/07/2021	शनि	31/12/2021	बुध	14/05/2022	शुक्र	06/12/2023	सूर्य	29/05/2025
शनि	11/09/2021	बुध	12/01/2022	केतु	23/05/2022	सूर्य	08/01/2024	चंद्र	16/07/2025
बुध	22/10/2021	केतु	17/01/2022	शुक्र	15/06/2022	चंद्र	02/03/2024	मंगल	20/08/2025
केतु	07/11/2021	शुक्र	31/01/2022	सूर्य	22/06/2022	मंगल	10/04/2024	राहु	15/11/2025

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
15/11/2025		10/10/2027		22/06/2029		05/03/2030		04/03/2032	
10/10/2027		22/06/2029		05/03/2030		04/03/2032		09/10/2032	
शनि	05/03/2026	बुध	06/01/2028	केतु	07/07/2029	शुक्र	05/07/2030	सूर्य	15/03/2032
बुध	11/06/2026	केतु	11/02/2028	शुक्र	19/08/2029	सूर्य	10/08/2030	चंद्र	02/04/2032
केतु	22/07/2026	शुक्र	25/05/2028	सूर्य	31/08/2029	चंद्र	10/10/2030	मंगल	15/04/2032
शुक्र	15/11/2026	सूर्य	25/06/2028	चंद्र	22/09/2029	मंगल	22/11/2030	राहु	18/05/2032
सूर्य	19/12/2026	चंद्र	16/08/2028	मंगल	07/10/2029	राहु	11/03/2031	गुरु	16/06/2032
चंद्र	15/02/2027	मंगल	21/09/2028	राहु	14/11/2029	गुरु	17/06/2031	शनि	21/07/2032
मंगल	28/03/2027	राहु	23/12/2028	गुरु	18/12/2029	शनि	10/10/2031	बुध	21/08/2032
राहु	10/07/2027	गुरु	16/03/2029	शनि	28/01/2030	बुध	22/01/2032	केतु	03/09/2032
गुरु	10/10/2027	शनि	22/06/2029	बुध	05/03/2030	केतु	04/03/2032	शुक्र	09/10/2032

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
09/10/2032		10/10/2033		22/06/2034		24/11/2035		02/08/2037	
10/10/2033		22/06/2034		24/11/2035		02/08/2037		05/02/2039	
चंद्र	09/11/2032	मंगल	25/10/2033	गुरु	31/08/2034	शनि	29/02/2036	बुध	19/10/2037
मंगल	30/11/2032	राहु	02/12/2033	शनि	21/11/2034	बुध	27/05/2036	केतु	20/11/2037
राहु	24/01/2033	गुरु	05/01/2034	बुध	02/02/2035	केतु	02/07/2036	शुक्र	20/02/2038
गुरु	14/03/2033	शनि	15/02/2034	केतु	05/03/2035	शुक्र	13/10/2036	सूर्य	20/03/2038
शनि	10/05/2033	बुध	23/03/2034	शुक्र	30/05/2035	सूर्य	13/11/2036	चंद्र	05/05/2038
बुध	01/07/2033	केतु	07/04/2034	सूर्य	25/06/2035	चंद्र	03/01/2037	मंगल	06/06/2038
केतु	23/07/2033	शुक्र	19/05/2034	चंद्र	08/08/2035	मंगल	08/02/2037	राहु	28/08/2038
शुक्र	21/09/2033	सूर्य	01/06/2034	मंगल	07/09/2035	राहु	11/05/2037	गुरु	09/11/2038
सूर्य	10/10/2033	चंद्र	22/06/2034	राहु	24/11/2035	गुरु	02/08/2037	शनि	05/02/2039

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 20 वर्ष 9 मास 18 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
15/08/1965		04/06/1986		03/06/1992		04/06/2007		04/06/2015	
04/06/1986		03/06/1992		04/06/2007		04/06/2015		03/06/2032	
शुक्र	04/07/1969	सूर्य	03/10/1986	चंद्र	04/07/1994	मंगल	06/01/2008	बुध	05/02/2018
सूर्य	03/09/1970	चंद्र	04/08/1987	मंगल	14/08/1995	बुध	10/04/2009	शनि	03/09/2019
चंद्र	03/08/1973	मंगल	13/01/1988	बुध	23/12/1997	शनि	06/01/2010	गुरु	30/08/2022
मंगल	22/02/1975	बुध	23/12/1988	शनि	15/05/1999	गुरु	04/06/2011	राहु	20/07/2024
बुध	14/06/1978	शनि	14/07/1989	गुरु	02/01/2002	राहु	23/04/2012	शुक्र	10/11/2027
शनि	24/05/1980	गुरु	03/08/1990	राहु	03/09/2003	शुक्र	13/11/2013	सूर्य	20/10/2028
गुरु	02/02/1984	राहु	04/04/1991	शुक्र	03/08/2006	सूर्य	24/04/2014	चंद्र	01/03/2031
राहु	04/06/1986	शुक्र	03/06/1992	सूर्य	04/06/2007	चंद्र	04/06/2015	मंगल	03/06/2032

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
03/06/2032		04/06/2042		03/06/2061		03/06/2073	
04/06/2042		03/06/2061		03/06/2073		00/00/0000	
शनि	07/05/2033	गुरु	06/10/2045	राहु	03/10/2062	शुक्र	15/08/2073
गुरु	09/02/2035	राहु	17/11/2047	शुक्र	02/02/2065		00/00/0000
राहु	21/03/2036	शुक्र	28/07/2051	सूर्य	03/10/2065		00/00/0000
शुक्र	01/03/2038	सूर्य	16/08/2052	चंद्र	04/06/2067		00/00/0000
सूर्य	20/09/2038	चंद्र	07/04/2055	मंगल	23/04/2068		00/00/0000
चंद्र	09/02/2040	मंगल	02/09/2056	बुध	14/03/2070		00/00/0000
मंगल	06/11/2040	बुध	31/08/2059	शनि	24/04/2071		00/00/0000
बुध	04/06/2042	शनि	03/06/2061	गुरु	03/06/2073		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
15/08/1965		04/07/1969		03/09/1970		03/08/1973		22/02/1975	
04/07/1969		03/09/1970		03/08/1973		22/02/1975		14/06/1978	
शुक्र	20/03/1966	सूर्य	27/07/1969	चंद्र	29/01/1971	मंगल	14/09/1973	बुध	31/08/1975
सूर्य	11/06/1966	चंद्र	25/09/1969	मंगल	18/04/1971	बुध	13/12/1973	शनि	21/12/1975
चंद्र	04/01/1967	मंगल	26/10/1969	बुध	02/10/1971	शनि	03/02/1974	गुरु	21/07/1976
मंगल	25/04/1967	बुध	01/01/1970	शनि	09/01/1972	गुरु	14/05/1974	राहु	02/12/1976
बुध	16/12/1967	शनि	10/02/1970	गुरु	14/07/1972	राहु	16/07/1974	शुक्र	25/07/1977
शनि	02/05/1968	गुरु	26/04/1970	राहु	10/11/1972	शुक्र	04/11/1974	सूर्य	30/09/1977
गुरु	19/01/1969	राहु	12/06/1970	शुक्र	05/06/1973	सूर्य	05/12/1974	चंद्र	16/03/1978
राहु	04/07/1969	शुक्र	03/09/1970	सूर्य	03/08/1973	चंद्र	22/02/1975	मंगल	14/06/1978

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
14/06/1978		24/05/1980		02/02/1984		04/06/1986		03/10/1986	
24/05/1980		02/02/1984		04/06/1986		03/10/1986		04/08/1987	
शनि	18/08/1978	गुरु	16/01/1981	राहु	07/05/1984	सूर्य	10/06/1986	चंद्र	15/11/1986
गुरु	21/12/1978	राहु	15/06/1981	शुक्र	20/10/1984	चंद्र	27/06/1986	मंगल	07/12/1986
राहु	10/03/1979	शुक्र	05/03/1982	सूर्य	06/12/1984	मंगल	06/07/1986	बुध	24/01/1987
शुक्र	26/07/1979	सूर्य	19/05/1982	चंद्र	03/04/1985	बुध	25/07/1986	शनि	21/02/1987
सूर्य	04/09/1979	चंद्र	22/11/1982	मंगल	06/06/1985	शनि	06/08/1986	गुरु	16/04/1987
चंद्र	12/12/1979	मंगल	02/03/1983	बुध	18/10/1985	गुरु	27/08/1986	राहु	20/05/1987
मंगल	02/02/1980	बुध	30/09/1983	शनि	05/01/1986	राहु	10/09/1986	शुक्र	18/07/1987
बुध	24/05/1980	शनि	02/02/1984	गुरु	04/06/1986	शुक्र	03/10/1986	सूर्य	04/08/1987

सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु	
04/08/1987		13/01/1988		23/12/1988		14/07/1989		03/08/1990	
13/01/1988		23/12/1988		14/07/1989		03/08/1990		04/04/1991	
मंगल	16/08/1987	बुध	07/03/1988	शनि	11/01/1989	गुरु	20/09/1989	राहु	30/08/1990
बुध	10/09/1987	शनि	08/04/1988	गुरु	15/02/1989	राहु	02/11/1989	शुक्र	17/10/1990
शनि	25/09/1987	गुरु	08/06/1988	राहु	10/03/1989	शुक्र	16/01/1990	सूर्य	30/10/1990
गुरु	24/10/1987	राहु	16/07/1988	शुक्र	18/04/1989	सूर्य	06/02/1990	चंद्र	03/12/1990
राहु	11/11/1987	शुक्र	21/09/1988	सूर्य	30/04/1989	चंद्र	31/03/1990	मंगल	21/12/1990
शुक्र	12/12/1987	सूर्य	11/10/1988	चंद्र	28/05/1989	मंगल	29/04/1990	बुध	29/01/1991
सूर्य	21/12/1987	चंद्र	27/11/1988	मंगल	12/06/1989	बुध	29/06/1990	शनि	20/02/1991
चंद्र	13/01/1988	मंगल	23/12/1988	बुध	14/07/1989	शनि	03/08/1990	गुरु	04/04/1991

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि	
04/04/1991		03/06/1992		04/07/1994		14/08/1995		23/12/1997	
03/06/1992		04/07/1994		14/08/1995		23/12/1997		15/05/1999	
शुक्र	26/06/1991	चंद्र	17/09/1992	मंगल	03/08/1994	बुध	28/12/1995	शनि	08/02/1998
सूर्य	19/07/1991	मंगल	12/11/1992	बुध	06/10/1994	शनि	16/03/1996	गुरु	08/05/1998
चंद्र	17/09/1991	बुध	12/03/1993	शनि	13/11/1994	गुरु	15/08/1996	राहु	04/07/1998
मंगल	18/10/1991	शनि	21/05/1993	गुरु	23/01/1995	राहु	19/11/1996	शुक्र	10/10/1998
बुध	24/12/1991	गुरु	02/10/1993	राहु	09/03/1995	शुक्र	06/05/1997	सूर्य	08/11/1998
शनि	02/02/1992	राहु	26/12/1993	शुक्र	27/05/1995	सूर्य	23/06/1997	चंद्र	17/01/1999
गुरु	17/04/1992	शुक्र	23/05/1994	सूर्य	18/06/1995	चंद्र	20/10/1997	मंगल	24/02/1999
राहु	03/06/1992	सूर्य	04/07/1994	चंद्र	14/08/1995	मंगल	23/12/1997	बुध	15/05/1999

चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
15/05/1999		02/01/2002		03/09/2003		03/08/2006		04/06/2007	
02/01/2002		03/09/2003		03/08/2006		04/06/2007		06/01/2008	
गुरु	31/10/1999	राहु	11/03/2002	शुक्र	28/03/2004	सूर्य	20/08/2006	मंगल	20/06/2007
राहु	15/02/2000	शुक्र	07/07/2002	सूर्य	26/05/2004	चंद्र	02/10/2006	बुध	24/07/2007
शुक्र	21/08/2000	सूर्य	10/08/2002	चंद्र	21/10/2004	मंगल	24/10/2006	शनि	13/08/2007
सूर्य	13/10/2000	चंद्र	03/11/2002	मंगल	08/01/2005	बुध	11/12/2006	गुरु	20/09/2007
चंद्र	24/02/2001	मंगल	18/12/2002	बुध	25/06/2005	शनि	08/01/2007	राहु	14/10/2007
मंगल	06/05/2001	बुध	24/03/2003	शनि	02/10/2005	गुरु	03/03/2007	शुक्र	25/11/2007
बुध	05/10/2001	शनि	19/05/2003	गुरु	07/04/2006	राहु	06/04/2007	सूर्य	07/12/2007
शनि	02/01/2002	गुरु	03/09/2003	राहु	03/08/2006	शुक्र	04/06/2007	चंद्र	06/01/2008

मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र	
06/01/2008		10/04/2009		06/01/2010		04/06/2011		23/04/2012	
10/04/2009		06/01/2010		04/06/2011		23/04/2012		13/11/2013	
बुध	19/03/2008	शनि	05/05/2009	गुरु	06/04/2010	राहु	10/07/2011	शुक्र	12/08/2012
शनि	30/04/2008	गुरु	22/06/2009	राहु	02/06/2010	शुक्र	11/09/2011	सूर्य	13/09/2012
गुरु	20/07/2008	राहु	22/07/2009	शुक्र	10/09/2010	सूर्य	29/09/2011	चंद्र	30/11/2012
राहु	09/09/2008	शुक्र	13/09/2009	सूर्य	09/10/2010	चंद्र	13/11/2011	मंगल	12/01/2013
शुक्र	08/12/2008	सूर्य	28/09/2009	चंद्र	19/12/2010	मंगल	07/12/2011	बुध	11/04/2013
सूर्य	02/01/2009	चंद्र	04/11/2009	मंगल	26/01/2011	बुध	27/01/2012	शनि	03/06/2013
चंद्र	07/03/2009	मंगल	24/11/2009	बुध	17/04/2011	शनि	26/02/2012	गुरु	11/09/2013
मंगल	10/04/2009	बुध	06/01/2010	शनि	04/06/2011	गुरु	23/04/2012	राहु	13/11/2013

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य	
13/11/2013	
24/04/2014	
सूर्य	22/11/2013
चंद्र	14/12/2013
मंगल	26/12/2013
बुध	21/01/2014
शनि	05/02/2014
गुरु	05/03/2014
राहु	23/03/2014
शुक्र	24/04/2014

मंगल - चंद्र	
24/04/2014	
04/06/2015	
चंद्र	19/06/2014
मंगल	19/07/2014
बुध	21/09/2014
शनि	29/10/2014
गुरु	08/01/2015
राहु	22/02/2015
शुक्र	12/05/2015
सूर्य	04/06/2015

बुध - बुध	
04/06/2015	
05/02/2018	
बुध	05/11/2015
शनि	03/02/2016
गुरु	24/07/2016
राहु	10/11/2016
शुक्र	19/05/2017
सूर्य	12/07/2017
चंद्र	25/11/2017
मंगल	05/02/2018

बुध - शनि	
05/02/2018	
03/09/2019	
शनि	30/03/2018
गुरु	10/07/2018
राहु	11/09/2018
शुक्र	01/01/2019
सूर्य	02/02/2019
चंद्र	23/04/2019
मंगल	05/06/2019
बुध	03/09/2019

बुध - गुरु	
03/09/2019	
30/08/2022	
गुरु	13/03/2020
राहु	13/07/2020
शुक्र	10/02/2021
सूर्य	12/04/2021
चंद्र	10/09/2021
मंगल	30/11/2021
बुध	21/05/2022
शनि	30/08/2022

बुध - राहु	
30/08/2022	
20/07/2024	
राहु	15/11/2022
शुक्र	29/03/2023
सूर्य	07/05/2023
चंद्र	10/08/2023
मंगल	01/10/2023
बुध	17/01/2024
शनि	21/03/2024
गुरु	20/07/2024

बुध - शुक्र	
20/07/2024	
10/11/2027	
शुक्र	12/03/2025
सूर्य	18/05/2025
चंद्र	02/11/2025
मंगल	30/01/2026
बुध	08/08/2026
शनि	28/11/2026
गुरु	29/06/2027
राहु	10/11/2027

बुध - सूर्य	
10/11/2027	
20/10/2028	
सूर्य	29/11/2027
चंद्र	16/01/2028
मंगल	10/02/2028
बुध	05/04/2028
शनि	07/05/2028
गुरु	06/07/2028
राहु	14/08/2028
शुक्र	20/10/2028

बुध - चंद्र	
20/10/2028	
01/03/2031	
चंद्र	17/02/2029
मंगल	21/04/2029
बुध	04/09/2029
शनि	23/11/2029
गुरु	24/04/2030
राहु	29/07/2030
शुक्र	12/01/2031
सूर्य	01/03/2031

बुध - मंगल	
01/03/2031	
03/06/2032	
मंगल	04/04/2031
बुध	16/06/2031
शनि	28/07/2031
गुरु	17/10/2031
राहु	07/12/2031
शुक्र	06/03/2032
सूर्य	31/03/2032
चंद्र	03/06/2032

शनि - शनि	
03/06/2032	
07/05/2033	
शनि	04/07/2032
गुरु	02/09/2032
राहु	09/10/2032
शुक्र	14/12/2032
सूर्य	02/01/2033
चंद्र	18/02/2033
मंगल	15/03/2033
बुध	07/05/2033

शनि - गुरु	
07/05/2033	
09/02/2035	
गुरु	28/08/2033
राहु	08/11/2033
शुक्र	13/03/2034
सूर्य	17/04/2034
चंद्र	16/07/2034
मंगल	01/09/2034
बुध	11/12/2034
शनि	09/02/2035

शनि - राहु	
09/02/2035	
21/03/2036	
राहु	26/03/2035
शुक्र	13/06/2035
सूर्य	05/07/2035
चंद्र	31/08/2035
मंगल	30/09/2035
बुध	03/12/2035
शनि	09/01/2036
गुरु	21/03/2036

शनि - शुक्र	
21/03/2036	
01/03/2038	
शुक्र	06/08/2036
सूर्य	14/09/2036
चंद्र	22/12/2036
मंगल	12/02/2037
बुध	04/06/2037
शनि	09/08/2037
गुरु	12/12/2037
राहु	01/03/2038

शनि - सूर्य	
01/03/2038	
20/09/2038	
सूर्य	12/03/2038
चंद्र	09/04/2038
मंगल	24/04/2038
बुध	26/05/2038
शनि	14/06/2038
गुरु	20/07/2038
राहु	11/08/2038
शुक्र	20/09/2038

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु	
20/09/2038		09/02/2040		06/11/2040		04/06/2042		06/10/2045	
09/02/2040		06/11/2040		04/06/2042		06/10/2045		17/11/2047	
चंद्र	29/11/2038	मंगल	29/02/2040	बुध	04/02/2041	गुरु	04/01/2043	राहु	31/12/2045
मंगल	06/01/2039	बुध	12/04/2040	शनि	29/03/2041	राहु	20/05/2043	शुक्र	30/05/2046
बुध	27/03/2039	शनि	07/05/2040	गुरु	09/07/2041	शुक्र	12/01/2044	सूर्य	12/07/2046
शनि	13/05/2039	गुरु	23/06/2040	राहु	10/09/2041	सूर्य	20/03/2044	चंद्र	27/10/2046
गुरु	10/08/2039	राहु	23/07/2040	शुक्र	31/12/2041	चंद्र	06/09/2044	मंगल	23/12/2046
राहु	05/10/2039	शुक्र	14/09/2040	सूर्य	01/02/2042	मंगल	05/12/2044	बुध	23/04/2047
शुक्र	12/01/2040	सूर्य	29/09/2040	चंद्र	22/04/2042	बुध	15/06/2045	शनि	04/07/2047
सूर्य	09/02/2040	चंद्र	06/11/2040	मंगल	04/06/2042	शनि	06/10/2045	गुरु	17/11/2047

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
17/11/2047		28/07/2051		16/08/2052		07/04/2055		02/09/2056	
28/07/2051		16/08/2052		07/04/2055		02/09/2056		31/08/2059	
शुक्र	05/08/2048	सूर्य	18/08/2051	चंद्र	28/12/2052	मंगल	15/05/2055	बुध	21/02/2057
सूर्य	19/10/2048	चंद्र	11/10/2051	मंगल	10/03/2053	बुध	04/08/2055	शनि	02/06/2057
चंद्र	24/04/2049	मंगल	08/11/2051	बुध	08/08/2053	शनि	21/09/2055	गुरु	12/12/2057
मंगल	02/08/2049	बुध	08/01/2052	शनि	06/11/2053	गुरु	20/12/2055	राहु	12/04/2058
बुध	03/03/2050	शनि	13/02/2052	गुरु	24/04/2054	राहु	15/02/2056	शुक्र	10/11/2058
शनि	06/07/2050	गुरु	21/04/2052	राहु	09/08/2054	शुक्र	25/05/2056	सूर्य	10/01/2059
गुरु	28/02/2051	राहु	03/06/2052	शुक्र	13/02/2055	सूर्य	23/06/2056	चंद्र	11/06/2059
राहु	28/07/2051	शुक्र	16/08/2052	सूर्य	07/04/2055	चंद्र	02/09/2056	मंगल	31/08/2059

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
31/08/2059		03/06/2061		03/10/2062		02/02/2065		03/10/2065	
03/06/2061		03/10/2062		02/02/2065		03/10/2065		04/06/2067	
शनि	29/10/2059	राहु	27/07/2061	शुक्र	18/03/2063	सूर्य	15/02/2065	चंद्र	27/12/2065
गुरु	19/02/2060	शुक्र	30/10/2061	सूर्य	04/05/2063	चंद्र	21/03/2065	मंगल	10/02/2066
राहु	01/05/2060	सूर्य	26/11/2061	चंद्र	31/08/2063	मंगल	08/04/2065	बुध	17/05/2066
शुक्र	03/09/2060	चंद्र	02/02/2062	मंगल	02/11/2063	बुध	16/05/2065	शनि	12/07/2066
सूर्य	08/10/2060	मंगल	10/03/2062	बुध	15/03/2064	शनि	08/06/2065	गुरु	27/10/2066
चंद्र	06/01/2061	बुध	26/05/2062	शनि	02/06/2064	गुरु	21/07/2065	राहु	03/01/2067
मंगल	22/02/2061	शनि	10/07/2062	गुरु	30/10/2064	राहु	17/08/2065	शुक्र	01/05/2067
बुध	03/06/2061	गुरु	03/10/2062	राहु	02/02/2065	शुक्र	03/10/2065	सूर्य	04/06/2067

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 4 वर्ष 9 मास 21 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
15/08/1965		07/06/1970		07/06/1976		07/06/1983		07/06/1991	
07/06/1970		07/06/1976		07/06/1983		07/06/1991		07/06/1992	
भद्रि	15/02/1966	उल्क	07/06/1971	सिद्ध	17/10/1977	संक	18/03/1985	मंग	17/06/1991
उल्क	17/12/1966	सिद्ध	06/08/1972	संक	08/05/1979	मंग	07/06/1985	पिंग	08/07/1991
सिद्ध	07/12/1967	संक	06/12/1973	मंग	18/07/1979	पिंग	16/11/1985	धांय	07/08/1991
संक	16/01/1969	मंग	05/02/1974	पिंग	07/12/1979	धांय	18/07/1986	भ्राम	17/09/1991
मंग	07/03/1969	पिंग	07/06/1974	धांय	07/07/1980	भ्राम	07/06/1987	भद्रि	06/11/1991
पिंग	17/06/1969	धांय	07/12/1974	भ्राम	17/04/1981	भद्रि	17/07/1988	उल्क	06/01/1992
धांय	16/11/1969	भ्राम	07/08/1975	भद्रि	07/04/1982	उल्क	16/11/1989	सिद्ध	17/03/1992
भ्राम	07/06/1970	भद्रि	07/06/1976	उल्क	07/06/1983	सिद्ध	07/06/1991	संक	07/06/1992

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
07/06/1992		07/06/1994		07/06/1997		07/06/2001		07/06/2006	
07/06/1994		07/06/1997		07/06/2001		07/06/2006		07/06/2012	
पिंग	17/07/1992	धांय	06/09/1994	भ्राम	16/11/1997	भद्रि	15/02/2002	उल्क	07/06/2007
धांय	16/09/1992	भ्राम	06/01/1995	भद्रि	07/06/1998	उल्क	17/12/2002	सिद्ध	06/08/2008
भ्राम	06/12/1992	भद्रि	07/06/1995	उल्क	06/02/1999	सिद्ध	07/12/2003	संक	06/12/2009
भद्रि	18/03/1993	उल्क	07/12/1995	सिद्ध	17/11/1999	संक	16/01/2005	मंग	05/02/2010
उल्क	17/07/1993	सिद्ध	07/07/1996	संक	06/10/2000	मंग	07/03/2005	पिंग	07/06/2010
सिद्ध	06/12/1993	संक	07/03/1997	मंग	16/11/2000	पिंग	17/06/2005	धांय	07/12/2010
संक	18/05/1994	मंग	07/04/1997	पिंग	05/02/2001	धांय	16/11/2005	भ्राम	07/08/2011
मंग	07/06/1994	पिंग	07/06/1997	धांय	07/06/2001	भ्राम	07/06/2006	भद्रि	07/06/2012

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
07/06/2012		07/06/2019		07/06/2027		07/06/2028		07/06/2030	
07/06/2019		07/06/2027		07/06/2028		07/06/2030		07/06/2033	
सिद्ध	17/10/2013	संक	18/03/2021	मंग	17/06/2027	पिंग	17/07/2028	धांय	06/09/2030
संक	08/05/2015	मंग	07/06/2021	पिंग	08/07/2027	धांय	16/09/2028	भ्राम	06/01/2031
मंग	18/07/2015	पिंग	16/11/2021	धांय	07/08/2027	भ्राम	06/12/2028	भद्रि	07/06/2031
पिंग	07/12/2015	धांय	18/07/2022	भ्राम	17/09/2027	भद्रि	18/03/2029	उल्क	07/12/2031
धांय	07/07/2016	भ्राम	07/06/2023	भद्रि	06/11/2027	उल्क	17/07/2029	सिद्ध	07/07/2032
भ्राम	17/04/2017	भद्रि	17/07/2024	उल्क	06/01/2028	सिद्ध	06/12/2029	संक	07/03/2033
भद्रि	07/04/2018	उल्क	16/11/2025	सिद्ध	17/03/2028	संक	18/05/2030	मंग	07/04/2033
उल्क	07/06/2019	सिद्ध	07/06/2027	संक	07/06/2028	मंग	07/06/2030	पिंग	07/06/2033

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
07/06/2033		07/06/2037		07/06/2042		07/06/2048		07/06/2055	
07/06/2037		07/06/2042		07/06/2048		07/06/2055		07/06/2063	
भ्राम	16/11/2033	भद्रि	15/02/2038	उल्क	07/06/2043	सिद्ध	17/10/2049	संक	18/03/2057
भद्रि	07/06/2034	उल्क	17/12/2038	सिद्ध	06/08/2044	संक	08/05/2051	मंग	07/06/2057
उल्क	06/02/2035	सिद्ध	07/12/2039	संक	06/12/2045	मंग	18/07/2051	पिंग	16/11/2057
सिद्ध	17/11/2035	संक	16/01/2041	मंग	05/02/2046	पिंग	07/12/2051	धांय	18/07/2058
संक	06/10/2036	मंग	07/03/2041	पिंग	07/06/2046	धांय	07/07/2052	भ्राम	07/06/2059
मंग	16/11/2036	पिंग	17/06/2041	धांय	07/12/2046	भ्राम	17/04/2053	भद्रि	17/07/2060
पिंग	05/02/2037	धांय	16/11/2041	भ्राम	07/08/2047	भद्रि	07/04/2054	उल्क	16/11/2061
धांय	07/06/2037	भ्राम	07/06/2042	भद्रि	07/06/2048	उल्क	07/06/2055	सिद्ध	07/06/2063

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
07/06/2063		07/06/2064		07/06/2066		07/06/2069		07/06/2073	
07/06/2064		07/06/2066		07/06/2069		07/06/2073		00/00/0000	
मंग	17/06/2063	पिंग	17/07/2064	धांय	06/09/2066	भ्राम	16/11/2069	भद्रि	15/08/2073
पिंग	08/07/2063	धांय	16/09/2064	भ्राम	06/01/2067	भद्रि	07/06/2070		00/00/0000
धांय	07/08/2063	भ्राम	06/12/2064	भद्रि	07/06/2067	उल्क	06/02/2071		00/00/0000
भ्राम	17/09/2063	भद्रि	18/03/2065	उल्क	07/12/2067	सिद्ध	17/11/2071		00/00/0000
भद्रि	06/11/2063	उल्क	17/07/2065	सिद्ध	07/07/2068	संक	06/10/2072		00/00/0000
उल्क	06/01/2064	सिद्ध	06/12/2065	संक	07/03/2069	मंग	16/11/2072		00/00/0000
सिद्ध	17/03/2064	संक	18/05/2066	मंग	07/04/2069	पिंग	05/02/2073		00/00/0000
संक	07/06/2064	मंग	07/06/2066	पिंग	07/06/2069	धांय	07/06/2073		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय	
17/07/2024		16/11/2025		07/06/2027		17/06/2027		08/07/2027	
16/11/2025		07/06/2027		17/06/2027		08/07/2027		07/08/2027	
उल्क	06/10/2024	सिद्ध	07/03/2026	मंग	08/06/2027	पिंग	19/06/2027	धांय	10/07/2027
सिद्ध	09/01/2025	संक	11/07/2026	पिंग	08/06/2027	धांय	20/06/2027	भ्राम	14/07/2027
संक	27/04/2025	मंग	27/07/2026	धांय	09/06/2027	भ्राम	23/06/2027	भद्रि	18/07/2027
मंग	11/05/2025	पिंग	27/08/2026	भ्राम	10/06/2027	भद्रि	25/06/2027	उल्क	23/07/2027
पिंग	07/06/2025	धांय	14/10/2026	भद्रि	12/06/2027	उल्क	29/06/2027	सिद्ध	29/07/2027
धांय	17/07/2025	भ्राम	16/12/2026	उल्क	13/06/2027	सिद्ध	03/07/2027	संक	05/08/2027
भ्राम	09/09/2025	भद्रि	05/03/2027	सिद्ध	15/06/2027	संक	07/07/2027	मंग	05/08/2027
भद्रि	16/11/2025	उल्क	07/06/2027	संक	17/06/2027	मंग	08/07/2027	पिंग	07/08/2027

मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक	
07/08/2027		17/09/2027		06/11/2027		06/01/2028		17/03/2028	
17/09/2027		06/11/2027		06/01/2028		17/03/2028		07/06/2028	
भ्राम	12/08/2027	भद्रि	24/09/2027	उल्क	17/11/2027	सिद्ध	20/01/2028	संक	04/04/2028
भद्रि	17/08/2027	उल्क	02/10/2027	सिद्ध	28/11/2027	संक	05/02/2028	मंग	07/04/2028
उल्क	24/08/2027	सिद्ध	12/10/2027	संक	12/12/2027	मंग	07/02/2028	पिंग	11/04/2028
सिद्ध	01/09/2027	संक	23/10/2027	मंग	14/12/2027	पिंग	11/02/2028	धांय	18/04/2028
संक	10/09/2027	मंग	25/10/2027	पिंग	17/12/2027	धांय	17/02/2028	भ्राम	27/04/2028
मंग	11/09/2027	पिंग	28/10/2027	धांय	22/12/2027	भ्राम	25/02/2028	भद्रि	08/05/2028
पिंग	13/09/2027	धांय	01/11/2027	भ्राम	29/12/2027	भद्रि	06/03/2028	उल्क	22/05/2028
धांय	17/09/2027	भ्राम	06/11/2027	भद्रि	06/01/2028	उल्क	17/03/2028	सिद्ध	07/06/2028

पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क	
07/06/2028		17/07/2028		16/09/2028		06/12/2028		18/03/2029	
17/07/2028		16/09/2028		06/12/2028		18/03/2029		17/07/2029	
पिंग	09/06/2028	धांय	22/07/2028	भ्राम	25/09/2028	भद्रि	20/12/2028	उल्क	07/04/2029
धांय	12/06/2028	भ्राम	29/07/2028	भद्रि	06/10/2028	उल्क	06/01/2029	सिद्ध	01/05/2029
भ्राम	17/06/2028	भद्रि	06/08/2028	उल्क	20/10/2028	सिद्ध	26/01/2029	संक	28/05/2029
भद्रि	22/06/2028	उल्क	17/08/2028	सिद्ध	05/11/2028	संक	17/02/2029	मंग	31/05/2029
उल्क	29/06/2028	सिद्ध	28/08/2028	संक	23/11/2028	मंग	20/02/2029	पिंग	07/06/2029
सिद्ध	07/07/2028	संक	11/09/2028	मंग	25/11/2028	पिंग	26/02/2029	धांय	17/06/2029
संक	16/07/2028	मंग	13/09/2028	पिंग	29/11/2028	धांय	06/03/2029	भ्राम	30/06/2029
मंग	17/07/2028	पिंग	16/09/2028	धांय	06/12/2028	भ्राम	18/03/2029	भद्रि	17/07/2029

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम	
17/07/2029		06/12/2029		18/05/2030		07/06/2030		06/09/2030	
06/12/2029		18/05/2030		07/06/2030		06/09/2030		06/01/2031	
सिद्ध	14/08/2029	संक	11/01/2030	मंग	18/05/2030	धांय	15/06/2030	भ्राम	20/09/2030
संक	15/09/2029	मंग	16/01/2030	पिंग	19/05/2030	भ्राम	25/06/2030	भद्रि	07/10/2030
मंग	19/09/2029	पिंग	25/01/2030	धांय	21/05/2030	भद्रि	07/07/2030	उल्क	27/10/2030
पिंग	26/09/2029	धांय	08/02/2030	भ्राम	23/05/2030	उल्क	23/07/2030	सिद्ध	20/11/2030
धांय	08/10/2029	भ्राम	26/02/2030	भद्रि	26/05/2030	सिद्ध	09/08/2030	संक	17/12/2030
भ्राम	24/10/2029	भद्रि	20/03/2030	उल्क	30/05/2030	संक	30/08/2030	मंग	20/12/2030
भद्रि	13/11/2029	उल्क	16/04/2030	सिद्ध	03/06/2030	मंग	01/09/2030	पिंग	27/12/2030
उल्क	06/12/2029	सिद्ध	18/05/2030	संक	07/06/2030	पिंग	06/09/2030	धांय	06/01/2031

धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग	
06/01/2031		07/06/2031		07/12/2031		07/07/2032		07/03/2033	
07/06/2031		07/12/2031		07/07/2032		07/03/2033		07/04/2033	
भद्रि	27/01/2031	उल्क	08/07/2031	सिद्ध	17/01/2032	संक	30/08/2032	मंग	08/03/2033
उल्क	22/02/2031	सिद्ध	12/08/2031	संक	05/03/2032	मंग	06/09/2032	पिंग	10/03/2033
सिद्ध	23/03/2031	संक	22/09/2031	मंग	11/03/2032	पिंग	19/09/2032	धांय	13/03/2033
संक	26/04/2031	मंग	27/09/2031	पिंग	22/03/2032	धांय	10/10/2032	भ्राम	16/03/2033
मंग	30/04/2031	पिंग	07/10/2031	धांय	09/04/2032	भ्राम	06/11/2032	भद्रि	20/03/2033
पिंग	09/05/2031	धांय	22/10/2031	भ्राम	03/05/2032	भद्रि	10/12/2032	उल्क	25/03/2033
धांय	21/05/2031	भ्राम	12/11/2031	भद्रि	01/06/2032	उल्क	19/01/2033	सिद्ध	31/03/2033
भ्राम	07/06/2031	भद्रि	07/12/2031	उल्क	07/07/2032	सिद्ध	07/03/2033	संक	07/04/2033

धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क		भ्राम - सिद्ध	
07/04/2033		07/06/2033		16/11/2033		07/06/2034		06/02/2035	
07/06/2033		16/11/2033		07/06/2034		06/02/2035		17/11/2035	
पिंग	10/04/2033	भ्राम	25/06/2033	भद्रि	14/12/2033	उल्क	18/07/2034	सिद्ध	02/04/2035
धांय	15/04/2033	भद्रि	17/07/2033	उल्क	17/01/2034	सिद्ध	03/09/2034	संक	04/06/2035
भ्राम	22/04/2033	उल्क	13/08/2033	सिद्ध	26/02/2034	संक	27/10/2034	मंग	12/06/2035
भद्रि	01/05/2033	सिद्ध	14/09/2033	संक	12/04/2034	मंग	03/11/2034	पिंग	28/06/2035
उल्क	11/05/2033	संक	20/10/2033	मंग	17/04/2034	पिंग	16/11/2034	धांय	21/07/2035
सिद्ध	23/05/2033	मंग	25/10/2033	पिंग	29/04/2034	धांय	07/12/2034	भ्राम	22/08/2035
संक	05/06/2033	पिंग	03/11/2033	धांय	15/05/2034	भ्राम	03/01/2035	भद्रि	30/09/2035
मंग	07/06/2033	धांय	16/11/2033	भ्राम	07/06/2034	भद्रि	06/02/2035	उल्क	17/11/2035

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 7 वर्ष 9 मास 16 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : उ०भाद्रपद - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
15/08/1965		01/06/1973		02/06/1982		02/06/2003		01/06/2008	
01/06/1973		02/06/1982		02/06/2003		01/06/2008		01/06/2017	
	00/00/0000	कन्या	24/03/1974	कर्क	29/10/1986	सिंह	01/09/2003	मिथु	24/03/2009
	00/00/0000	कर्क	13/02/1976	सिंह	17/11/1987	मिथु	13/02/2004	वृष	01/09/2010
	00/00/0000	सिंह	26/07/1976	मिथु	07/10/1989	वृष	01/12/2004	मेष	19/04/2011
	15/08/1965	मिथु	18/05/1977	वृष	15/02/1993	मेष	08/04/2005	मीन	13/03/2012
मिथु	07/01/1967	वृष	26/10/1978	मेष	06/08/1994	मीन	07/10/2005	वृश्चि	29/10/2012
वृष	30/07/1969	मेष	13/06/1979	मीन	11/09/1996	वृश्चि	12/02/2006	तुला	08/04/2014
मेष	12/09/1970	मीन	07/05/1980	वृश्चि	02/03/1998	तुला	01/12/2006	कन्या	29/01/2015
मीन	18/04/1972	वृश्चि	23/12/1980	तुला	12/07/2001	कन्या	15/05/2007	कर्क	19/12/2016
वृश्चि	01/06/1973	तुला	02/06/1982	कन्या	02/06/2003	कर्क	01/06/2008	सिंह	01/06/2017

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
01/06/2017		01/06/2033		01/06/2040		02/06/2050		01/06/2057	
01/06/2033		01/06/2040		02/06/2050		01/06/2057		00/00/0000	
वृष	23/12/2019	मेष	27/11/2033	मीन	01/06/2041	वृश्चि	28/11/2050	तुला	23/12/2059
मेष	04/02/2021	मीन	10/08/2034	वृश्चि	12/02/2042	तुला	11/01/2052	कन्या	01/06/2061
मीन	12/09/2022	वृश्चि	05/02/2035	तुला	19/09/2043	कन्या	28/08/2052	कर्क	11/10/2064
वृश्चि	26/10/2023	तुला	20/03/2036	कन्या	13/08/2044	कर्क	16/02/2054	सिंह	30/07/2065
तुला	18/05/2026	कन्या	05/11/2036	कर्क	19/09/2046	सिंह	24/06/2054	मिथु	15/08/2065
कन्या	26/10/2027	कर्क	26/04/2038	सिंह	21/03/2047	मिथु	09/02/2055		00/00/0000
कर्क	06/03/2031	सिंह	01/09/2038	मिथु	13/02/2048	वृष	24/03/2056		00/00/0000
सिंह	23/12/2031	मिथु	19/04/2039	वृष	19/09/2049	मेष	19/09/2056		00/00/0000
मिथु	01/06/2033	वृष	01/06/2040	मेष	02/06/2050	मीन	01/06/2057		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - तुला		वृष - कन्या		वृष - कर्क		वृष - सिंह		वृष - मिथु	
26/10/2023		18/05/2026		26/10/2027		06/03/2031		23/12/2031	
18/05/2026		26/10/2027		06/03/2031		23/12/2031		01/06/2033	
तुला	24/03/2024	कन्या	04/07/2026	कर्क	10/07/2028	सिंह	21/03/2031	मिथु	09/02/2032
कन्या	16/06/2024	कर्क	23/10/2026	सिंह	09/09/2028	मिथु	16/04/2031	वृष	03/05/2032
कर्क	29/12/2024	सिंह	18/11/2026	मिथु	28/12/2028	वृष	02/06/2031	मेष	09/06/2032
सिंह	14/02/2025	मिथु	04/01/2027	वृष	13/07/2029	मेष	22/06/2031	मीन	31/07/2032
मिथु	09/05/2025	वृष	30/03/2027	मेष	07/10/2029	मीन	22/07/2031	वृश्चि	06/09/2032
वृष	06/10/2025	मेष	05/05/2027	मीन	06/02/2030	वृश्चि	11/08/2031	तुला	29/11/2032
मेष	10/12/2025	मीन	27/06/2027	वृश्चि	03/05/2030	तुला	27/09/2031	कन्या	16/01/2033
मीन	14/03/2026	वृश्चि	03/08/2027	तुला	16/11/2030	कन्या	23/10/2031	कर्क	06/05/2033
वृश्चि	18/05/2026	तुला	26/10/2027	कन्या	06/03/2031	कर्क	23/12/2031	सिंह	01/06/2033

मेष - मेष		मेष - मीन		मेष - वृश्चि		मेष - तुला		मेष - कन्या	
01/06/2033		27/11/2033		10/08/2034		05/02/2035		20/03/2036	
27/11/2033		10/08/2034		05/02/2035		20/03/2036		05/11/2036	
मेष	14/06/2033	मीन	23/12/2033	वृश्चि	23/08/2034	तुला	11/04/2035	कन्या	10/04/2036
मीन	02/07/2033	वृश्चि	10/01/2034	तुला	20/09/2034	कन्या	18/05/2035	कर्क	28/05/2036
वृश्चि	14/07/2033	तुला	20/02/2034	कन्या	06/10/2034	कर्क	12/08/2035	सिंह	09/06/2036
तुला	12/08/2033	कन्या	15/03/2034	कर्क	13/11/2034	सिंह	02/09/2035	मिथु	29/06/2036
कन्या	28/08/2033	कर्क	07/05/2034	सिंह	22/11/2034	मिथु	08/10/2035	वृष	05/08/2036
कर्क	05/10/2033	सिंह	20/05/2034	मिथु	08/12/2034	वृष	13/12/2035	मेष	21/08/2036
सिंह	14/10/2033	मिथु	12/06/2034	वृष	06/01/2035	मेष	10/01/2036	मीन	13/09/2036
मिथु	30/10/2033	वृष	23/07/2034	मेष	18/01/2035	मीन	20/02/2036	वृश्चि	29/09/2036
वृष	27/11/2033	मेष	10/08/2034	मीन	05/02/2035	वृश्चि	20/03/2036	तुला	05/11/2036

मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - मिथु		मेष - वृष		मीन - मीन	
05/11/2036		26/04/2038		01/09/2038		19/04/2039		01/06/2040	
26/04/2038		01/09/2038		19/04/2039		01/06/2040		01/06/2041	
कर्क	26/02/2037	सिंह	02/05/2038	मिथु	22/09/2038	वृष	23/06/2039	मीन	08/07/2040
सिंह	25/03/2037	मिथु	14/05/2038	वृष	28/10/2038	मेष	22/07/2039	वृश्चि	02/08/2040
मिथु	12/05/2037	वृष	03/06/2038	मेष	14/11/2038	मीन	01/09/2039	तुला	30/09/2040
वृष	06/08/2037	मेष	12/06/2038	मीन	07/12/2038	वृश्चि	30/09/2039	कन्या	01/11/2040
मेष	13/09/2037	मीन	25/06/2038	वृश्चि	23/12/2038	तुला	04/12/2039	कर्क	17/01/2041
मीन	05/11/2037	वृश्चि	04/07/2038	तुला	28/01/2039	कन्या	10/01/2040	सिंह	04/02/2041
वृश्चि	13/12/2037	तुला	25/07/2038	कन्या	18/02/2039	कर्क	05/04/2040	मिथु	09/03/2041
तुला	09/03/2038	कन्या	05/08/2038	कर्क	08/04/2039	सिंह	25/04/2040	वृष	07/05/2041
कन्या	26/04/2038	कर्क	01/09/2038	सिंह	19/04/2039	मिथु	01/06/2040	मेष	01/06/2041

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - वृश्चि		मीन - तुला		मीन - कन्या		मीन - कर्क		मीन - सिंह	
01/06/2041		12/02/2042		19/09/2043		13/08/2044		19/09/2046	
12/02/2042		19/09/2043		13/08/2044		19/09/2046		21/03/2047	
वृश्चि	19/06/2041	तुला	17/05/2042	कन्या	19/10/2043	कर्क	21/01/2045	सिंह	28/09/2046
तुला	30/07/2041	कन्या	08/07/2042	कर्क	27/12/2043	सिंह	01/03/2045	मिथु	15/10/2046
कन्या	22/08/2041	कर्क	08/11/2042	सिंह	12/01/2044	मिथु	09/05/2045	वृष	13/11/2046
कर्क	15/10/2041	सिंह	07/12/2042	मिथु	11/02/2044	वृष	08/09/2045	मेष	26/11/2046
सिंह	28/10/2041	मिथु	29/01/2043	वृष	04/04/2044	मेष	01/11/2045	मीन	14/12/2046
मिथु	20/11/2041	वृष	02/05/2043	मेष	27/04/2044	मीन	17/01/2046	वृश्चि	27/12/2046
वृष	31/12/2041	मेष	12/06/2043	मीन	30/05/2044	वृश्चि	11/03/2046	तुला	25/01/2047
मेष	17/01/2042	मीन	10/08/2043	वृश्चि	22/06/2044	तुला	12/07/2046	कन्या	10/02/2047
मीन	12/02/2042	वृश्चि	19/09/2043	तुला	13/08/2044	कन्या	19/09/2046	कर्क	21/03/2047

मीन - मिथु		मीन - वृष		मीन - मेष		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - तुला	
21/03/2047		13/02/2048		19/09/2049		02/06/2050		28/11/2050	
13/02/2048		19/09/2049		02/06/2050		28/11/2050		11/01/2052	
मिथु	19/04/2047	वृष	16/05/2048	मेष	07/10/2049	वृश्चि	14/06/2050	तुला	01/02/2051
वृष	11/06/2047	मेष	26/06/2048	मीन	01/11/2049	तुला	13/07/2050	कन्या	10/03/2051
मेष	04/07/2047	मीन	23/08/2048	वृश्चि	19/11/2049	कन्या	29/07/2050	कर्क	04/06/2051
मीन	06/08/2047	वृश्चि	03/10/2048	तुला	30/12/2049	कर्क	04/09/2050	सिंह	24/06/2051
वृश्चि	29/08/2047	तुला	05/01/2049	कन्या	22/01/2050	सिंह	13/09/2050	मिथु	31/07/2051
तुला	20/10/2047	कन्या	26/02/2049	कर्क	17/03/2050	मिथु	29/09/2050	वृष	04/10/2051
कन्या	19/11/2047	कर्क	29/06/2049	सिंह	30/03/2050	वृष	28/10/2050	मेष	02/11/2051
कर्क	27/01/2048	सिंह	28/07/2049	मिथु	22/04/2050	मेष	10/11/2050	मीन	13/12/2051
सिंह	13/02/2048	मिथु	19/09/2049	वृष	02/06/2050	मीन	28/11/2050	वृश्चि	11/01/2052

वृश्चि - कन्या		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष	
11/01/2052		28/08/2052		16/02/2054		24/06/2054		09/02/2055	
28/08/2052		16/02/2054		24/06/2054		09/02/2055		24/03/2056	
कन्या	31/01/2052	कर्क	18/12/2052	सिंह	22/02/2054	मिथु	14/07/2054	वृष	15/04/2055
कर्क	20/03/2052	सिंह	14/01/2053	मिथु	06/03/2054	वृष	20/08/2054	मेष	14/05/2055
सिंह	31/03/2052	मिथु	04/03/2053	वृष	26/03/2054	मेष	05/09/2054	मीन	24/06/2055
मिथु	21/04/2052	वृष	29/05/2053	मेष	04/04/2054	मीन	28/09/2054	वृश्चि	22/07/2055
वृष	28/05/2052	मेष	05/07/2053	मीन	17/04/2054	वृश्चि	14/10/2054	तुला	26/09/2055
मेष	13/06/2052	मीन	28/08/2053	वृश्चि	26/04/2054	तुला	20/11/2054	कन्या	02/11/2055
मीन	06/07/2052	वृश्चि	04/10/2053	तुला	16/05/2054	कन्या	11/12/2054	कर्क	26/01/2056
वृश्चि	22/07/2052	तुला	29/12/2053	कन्या	28/05/2054	कर्क	28/01/2055	सिंह	16/02/2056
तुला	28/08/2052	कन्या	16/02/2054	कर्क	24/06/2054	सिंह	09/02/2055	मिथु	24/03/2056

चर दशा

भोग्य दशा काल : धनु 6 वर्ष 0 मास 0 दिन

धनु 6 वर्ष	
15/08/1965	
16/08/1971	
वृश्चि	14/02/1966
तुला	15/08/1966
कन्या	14/02/1967
सिंह	16/08/1967
कर्क	14/02/1968
मिथु	15/08/1968
वृष	14/02/1969
मेष	15/08/1969
मीन	14/02/1970
कुंभ	15/08/1970
मक	14/02/1971
धनु	16/08/1971

वृश्चिक 11 वर्ष	
16/08/1971	
15/08/1982	
तुला	16/07/1972
कन्या	15/06/1973
सिंह	16/05/1974
कर्क	16/04/1975
मिथु	16/03/1976
वृष	14/02/1977
मेष	14/01/1978
मीन	15/12/1978
कुंभ	15/11/1979
मक	15/10/1980
धनु	15/09/1981
वृश्चि	15/08/1982

तुला 11 वर्ष	
15/08/1982	
15/08/1993	
वृश्चि	16/07/1983
धनु	15/06/1984
मक	16/05/1985
कुंभ	16/04/1986
मीन	17/03/1987
मेष	14/02/1988
वृष	14/01/1989
मिथु	15/12/1989
कर्क	15/11/1990
सिंह	16/10/1991
कन्या	14/09/1992
तुला	15/08/1993

कन्या 2 वर्ष	
15/08/1993	
16/08/1995	
तुला	15/10/1993
वृश्चि	15/12/1993
धनु	14/02/1994
मक	16/04/1994
कुंभ	16/06/1994
मीन	15/08/1994
मेष	15/10/1994
वृष	15/12/1994
मिथु	14/02/1995
कर्क	16/04/1995
सिंह	16/06/1995
कन्या	16/08/1995

सिंह 1 वर्ष	
16/08/1995	
15/08/1996	
कन्या	15/09/1995
तुला	16/10/1995
वृश्चि	15/11/1995
धनु	15/12/1995
मक	15/01/1996
कुंभ	14/02/1996
मीन	16/03/1996
मेष	15/04/1996
वृष	16/05/1996
मिथु	15/06/1996
कर्क	16/07/1996
सिंह	15/08/1996

कर्क 4 वर्ष	
15/08/1996	
15/08/2000	
मिथु	15/12/1996
वृष	15/04/1997
मेष	15/08/1997
मीन	15/12/1997
कुंभ	16/04/1998
मक	15/08/1998
धनु	15/12/1998
वृश्चि	16/04/1999
तुला	16/08/1999
कन्या	15/12/1999
सिंह	15/04/2000
कर्क	15/08/2000

मिथुन 1 वर्ष	
15/08/2000	
15/08/2001	
वृष	14/09/2000
मेष	15/10/2000
मीन	14/11/2000
कुंभ	15/12/2000
मक	14/01/2001
धनु	14/02/2001
वृश्चि	16/03/2001
तुला	15/04/2001
कन्या	16/05/2001
सिंह	15/06/2001
कर्क	16/07/2001
मिथु	15/08/2001

वृष 4 वर्ष	
15/08/2001	
15/08/2005	
मेष	15/12/2001
मीन	16/04/2002
कुंभ	15/08/2002
मक	15/12/2002
धनु	16/04/2003
वृश्चि	16/08/2003
तुला	15/12/2003
कन्या	15/04/2004
सिंह	15/08/2004
कर्क	15/12/2004
मिथु	15/04/2005
वृष	15/08/2005

मेष 6 वर्ष	
15/08/2005	
16/08/2011	
वृष	14/02/2006
मिथु	15/08/2006
कर्क	14/02/2007
सिंह	16/08/2007
कन्या	14/02/2008
तुला	15/08/2008
वृश्चि	14/02/2009
धनु	15/08/2009
मक	14/02/2010
कुंभ	15/08/2010
मीन	14/02/2011
मेष	16/08/2011

मीन 9 वर्ष	
16/08/2011	
15/08/2020	
मेष	16/05/2012
वृष	14/02/2013
मिथु	15/11/2013
कर्क	15/08/2014
सिंह	16/05/2015
कन्या	14/02/2016
तुला	14/11/2016
वृश्चि	15/08/2017
धनु	16/05/2018
मक	14/02/2019
कुंभ	15/11/2019
मीन	15/08/2020

कुम्भ 9 वर्ष	
15/08/2020	
15/08/2029	
मीन	16/05/2021
मेष	14/02/2022
वृष	15/11/2022
मिथु	16/08/2023
कर्क	16/05/2024
सिंह	14/02/2025
कन्या	15/11/2025
तुला	15/08/2026
वृश्चि	16/05/2027
धनु	14/02/2028
मक	14/11/2028
कुंभ	15/08/2029

मकर 11 वर्ष	
15/08/2029	
15/08/2040	
धनु	16/07/2030
वृश्चि	16/06/2031
तुला	16/05/2032
कन्या	15/04/2033
सिंह	16/03/2034
कर्क	14/02/2035
मिथु	15/01/2036
वृष	15/12/2036
मेष	15/11/2037
मीन	15/10/2038
कुंभ	15/09/2039
मक	15/08/2040

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - कन्या		कुंभ - तुला		कुंभ - वृश्चि		कुंभ - धनु		कुंभ - मक	
14/02/2025		15/11/2025		15/08/2026		16/05/2027		14/02/2028	
15/11/2025		15/08/2026		16/05/2027		14/02/2028		14/11/2028	
तुला	08/03/2025	वृश्चि	07/12/2025	तुला	07/09/2026	वृश्चि	08/06/2027	धनु	08/03/2028
वृश्चि	31/03/2025	धनु	30/12/2025	कन्या	30/09/2026	तुला	01/07/2027	वृश्चि	31/03/2028
धनु	23/04/2025	मक	22/01/2026	सिंह	23/10/2026	कन्या	24/07/2027	तुला	23/04/2028
मक	16/05/2025	कुंभ	14/02/2026	कर्क	15/11/2026	सिंह	16/08/2027	कन्या	16/05/2028
कुंभ	08/06/2025	मीन	09/03/2026	मिथु	08/12/2026	कर्क	08/09/2027	सिंह	07/06/2028
मीन	01/07/2025	मेष	31/03/2026	वृष	30/12/2026	मिथु	30/09/2027	कर्क	30/06/2028
मेष	23/07/2025	वृष	23/04/2026	मेष	22/01/2027	वृष	23/10/2027	मिथु	23/07/2028
वृष	15/08/2025	मिथु	16/05/2026	मीन	14/02/2027	मेष	15/11/2027	वृष	15/08/2028
मिथु	07/09/2025	कर्क	08/06/2026	कुंभ	09/03/2027	मीन	08/12/2027	मेष	07/09/2028
कर्क	30/09/2025	सिंह	01/07/2026	मक	01/04/2027	कुंभ	31/12/2027	मीन	30/09/2028
सिंह	23/10/2025	कन्या	24/07/2026	धनु	24/04/2027	मक	23/01/2028	कुंभ	22/10/2028
कन्या	15/11/2025	तुला	15/08/2026	वृश्चि	16/05/2027	धनु	14/02/2028	मक	14/11/2028

कुंभ - कुंभ		मक - धनु		मक - वृश्चि		मक - तुला		मक - कन्या	
14/11/2028		15/08/2029		16/07/2030		16/06/2031		16/05/2032	
15/08/2029		16/07/2030		16/06/2031		16/05/2032		15/04/2033	
मीन	07/12/2028	वृश्चि	12/09/2029	तुला	13/08/2030	वृश्चि	14/07/2031	तुला	13/06/2032
मेष	30/12/2028	तुला	10/10/2029	कन्या	10/09/2030	धनु	11/08/2031	वृश्चि	10/07/2032
वृष	22/01/2029	कन्या	07/11/2029	सिंह	08/10/2030	मक	08/09/2031	धनु	07/08/2032
मिथु	14/02/2029	सिंह	05/12/2029	कर्क	05/11/2030	कुंभ	05/10/2031	मक	04/09/2032
कर्क	08/03/2029	कर्क	02/01/2030	मिथु	03/12/2030	मीन	02/11/2031	कुंभ	02/10/2032
सिंह	31/03/2029	मिथु	30/01/2030	वृष	30/12/2030	मेष	30/11/2031	मीन	30/10/2032
कन्या	23/04/2029	वृष	27/02/2030	मेष	27/01/2031	वृष	28/12/2031	मेष	27/11/2032
तुला	16/05/2029	मेष	26/03/2030	मीन	24/02/2031	मिथु	25/01/2032	वृष	25/12/2032
वृश्चि	08/06/2029	मीन	23/04/2030	कुंभ	24/03/2031	कर्क	22/02/2032	मिथु	22/01/2033
धनु	01/07/2029	कुंभ	21/05/2030	मक	21/04/2031	सिंह	21/03/2032	कर्क	19/02/2033
मक	23/07/2029	मक	18/06/2030	धनु	19/05/2031	कन्या	18/04/2032	सिंह	19/03/2033
कुंभ	15/08/2029	धनु	16/07/2030	वृश्चि	16/06/2031	तुला	16/05/2032	कन्या	15/04/2033

मक - सिंह		मक - कर्क		मक - मिथु		मक - वृष		मक - मेष	
15/04/2033		16/03/2034		14/02/2035		15/01/2036		15/12/2036	
16/03/2034		14/02/2035		15/01/2036		15/12/2036		15/11/2037	
कन्या	13/05/2033	मिथु	13/04/2034	वृष	14/03/2035	मेष	12/02/2036	वृष	12/01/2037
तुला	10/06/2033	वृष	11/05/2034	मेष	11/04/2035	मीन	11/03/2036	मिथु	09/02/2037
वृश्चि	08/07/2033	मेष	08/06/2034	मीन	09/05/2035	कुंभ	08/04/2036	कर्क	08/03/2037
धनु	05/08/2033	मीन	06/07/2034	कुंभ	06/06/2035	मक	06/05/2036	सिंह	05/04/2037
मक	02/09/2033	कुंभ	03/08/2034	मक	04/07/2035	धनु	02/06/2036	कन्या	03/05/2037
कुंभ	30/09/2033	मक	31/08/2034	धनु	31/07/2035	वृश्चि	30/06/2036	तुला	31/05/2037
मीन	28/10/2033	धनु	28/09/2034	वृश्चि	28/08/2035	तुला	28/07/2036	वृश्चि	28/06/2037
मेष	25/11/2033	वृश्चि	25/10/2034	तुला	25/09/2035	कन्या	25/08/2036	धनु	26/07/2037
वृष	23/12/2033	तुला	22/11/2034	कन्या	23/10/2035	सिंह	22/09/2036	मक	23/08/2037
मिथु	19/01/2034	कन्या	20/12/2034	सिंह	20/11/2035	कर्क	20/10/2036	कुंभ	20/09/2037
कर्क	16/02/2034	सिंह	17/01/2035	कर्क	18/12/2035	मिथु	17/11/2036	मीन	18/10/2037
सिंह	16/03/2034	कर्क	14/02/2035	मिथु	15/01/2036	वृष	15/12/2036	मेष	15/11/2037

चर दशा - प्रत्यन्तर

मक - मीन
15/11/2037
15/10/2038

मेष	12/12/2037
वृष	09/01/2038
मिथु	06/02/2038
कर्क	06/03/2038
सिंह	03/04/2038
कन्या	01/05/2038
तुला	29/05/2038
वृश्चि	26/06/2038
धनु	24/07/2038
मक	21/08/2038
कुंभ	17/09/2038
मीन	15/10/2038

मक - कुंभ
15/10/2038
15/09/2039

मीन	12/11/2038
मेष	10/12/2038
वृष	07/01/2039
मिथु	04/02/2039
कर्क	04/03/2039
सिंह	01/04/2039
कन्या	29/04/2039
तुला	27/05/2039
वृश्चि	23/06/2039
धनु	21/07/2039
मक	18/08/2039
कुंभ	15/09/2039

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

मक - मक
15/09/2039
15/08/2040

धनु	13/10/2039
वृश्चि	10/11/2039
तुला	08/12/2039
कन्या	05/01/2040
सिंह	02/02/2040
कर्क	01/03/2040
मिथु	28/03/2040
वृष	25/04/2040
मेष	23/05/2040
मीन	20/06/2040
कुंभ	18/07/2040
मक	15/08/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	95%	दम्पति, स्वास्थ्य, सुख
मूंगा	मंगल	69%	धनार्जन, सन्तति सुख, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	61%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
नीलम	शनि	56%	पराक्रम, धन
गोमेद	राहु	47%	शत्रु व रोग, व्यावसायिक हानि
हीरा	शुक्र	44%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग, हानि
लहसुनिया	केतु	41%	व्यय, हानि
मोती	चंद्र	19%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पन्ना	बुध	12%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि

रत्न की शुभता

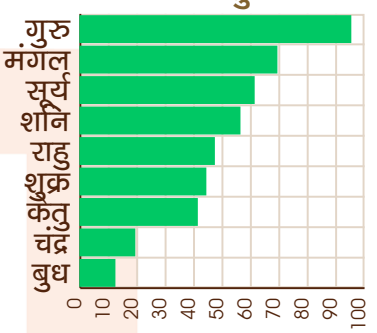

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	25/11/1983	47%	0%	56%	25%	95%	53%	68%	55%	16%
बुध	24/11/2000	67%	0%	69%	38%	95%	53%	56%	47%	41%
केतु	25/11/2007	47%	0%	75%	12%	95%	53%	37%	22%	58%
शुक्र	25/11/2027	47%	0%	69%	25%	95%	59%	62%	55%	52%
सूर्य	25/11/2033	73%	31%	75%	12%	100%	19%	37%	22%	16%
चंद्र	25/11/2043	67%	44%	69%	25%	95%	44%	56%	22%	16%
मंगल	25/11/2050	67%	31%	81%	0%	100%	44%	56%	22%	52%
राहु	24/11/2068	47%	0%	56%	12%	95%	53%	62%	61%	16%
गुरु	24/11/2084	67%	31%	75%	0%	100%	19%	56%	47%	41%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मूंगा, माणिक्य एवं नीलम रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद, हीरा व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती व पन्ना रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज शुभ रत्न धारण कर आप गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। पुखराज रत्न धारण करने के बाद लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। रत्न की शुभता से आप मिलनसार व्यक्ति बनेंगे। आपका जीवनसाथी आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। यह रत्न आपको काव्य साहित्य, कला प्रेमी और शास्त्र प्रेमी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। पुखराज रत्न से आपको सरकारी कामों, कचहरी के काम, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकते है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती है। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेगें। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यो से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज

हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते है। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको आर्थिक पक्ष को मजबूत करेगा। रत्न प्रभाव से आप धन कमाने के साथ-साथ आप धन की बचत भी कर पाएंगे। आपको जीवन साथी के माध्यम से धनागमन होगा। माणिक्य रत्न आपको एक सुखी जीवन देगा। यह रत्न आपके धैर्य को बनाये रखेगा। यह रत्न आपको अधिक से अधिक धन संचय करने में सहयोग करेगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपके पिता से संबंध मधुर बनायेगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न आपकी शरीर की अस्वस्थता को दूर करने का प्रयास कर सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। मित्र बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते है। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यो के मध्य आने वाली बाधाओं में कमी कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद आपको कुसंगति का शिकार कर सकता है। प्रतियोगिताओ में सफल होने के लिए आप कुमार्ग का प्रयोग कर सकते है। विपरीत धर्म के लोगों से आपकी मित्रता संबंध बढ़ सकते है। यह मित्रता आपको लाभ भी दे सकती है। रोग और आयु पक्ष के लिए गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहेगा। साहस की कमी आपको

बड़े बड़े कामों को अंजाम देने से रोक सकती है। गोमेद रत्न प्रभाव से आपको रोग, ऋण और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करना होगा। ऊपरी बाधाओं या कोई रहस्यमयी बीमारियों के प्रभाव में आप आ सकते है। गोमेद रत्न धारण से आपको मामा, मौसी या चाचा पक्ष से सुख कम प्राप्त होगा।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से तकनीकी क्षेत्रों में कार्य करना कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। यंत्रों के रख-रखाव और इंजीनियरिंग क्षेत्र में कार्य करने पर आप असुविधा महसूस करेंगे। आजीविका क्षेत्र की विपरीत परिस्थितियों का सामना आप सहजता के साथ नहीं कर पायेंगे। यह रत्न आपको असफलता का स्वाद भी चखा सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको राजनैतिक क्षेत्र में सफलता बहुत विलम्ब से प्राप्त होगी। रत्न प्रतिकूलता आपको अस्पष्ट परिणाम और कमजोर आर्थिक स्थिति प्रदान कर सकती है। साथ ही इस रत्न प्रभाव से आप अहंकारी और बातूनी स्वभाव के हो सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर कार्यक्षेत्र में आपको विपरीत लिंगियों के कारण कार्य करने में असुविधा हो सकती है। आप विवादों से बचने का भरसक प्रयास करेंगे. कार्यक्षेत्र की परेशानियां आपको अशांत और चिंतित रख सकती है। हीरा रत्न आपकी संकल्पशक्ति में कमी कर सकता है। हीरा रत्न भाग्योन्नति और धनलाभ में प्रतिकूल फल दे सकता है। जीवन साथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में प्राप्त नहीं हो पाएगा। गायन, वाहन, साहित्य रचना, कला, वास्तु सज्जा एवं सौंदर्य संबंधी विषयों से जुड़ा कार्यक्षेत्र होने पर यह रत्न आपको विशेष दिक्कतें दे सकता है। दान-पुण्य जैसे कार्यों में श्रद्धा की कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपका मान-सम्मान प्रभावित हो सकता है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। षष्ठेश शुक्र का हीरा रत्न आपको रोग, ऋण एवं शत्रुओं से कष्ट दे सकता है। इसे पहनने के बाद अपमान, चिंता, शंका, पीड़ा एवं असत्य भाषा की प्रवृत्ति आपमें जन्म ले सकती है। एकादश भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण हीरा आपमें लोभ, स्वार्थ एवं बेईमानी के अवगुण आ सकते है। यह रत्न आपके मामा-मौसी से सुखों में कमी दे सकता है। शत्रुओं को परास्त करने में आपको सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। शुक्र रत्न हीरा प्रभाव से आपको पिता से अल्पसुख प्राप्त हो सकता है। राज्य व कार्यक्षेत्र से अल्प लाभ व सम्मान न्यून मिलता है। हीरा रत्न आपको रोग एवं ऋण की समस्याएं दे सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आप अलौकिक विद्याओं की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के लिए आप जीवन के दायित्वों से पीछे हट सकते है। आपकी सोच में नकारात्मकता का भाव प्रभावी हो सकता है। यह रत्न

आपको आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। संतान सुख और धन दोनों पक्ष के लिए रत्न की प्रतिकूलता हो सकती है। यह रत्न विदेश स्थानों में मिलने वाली आपकी सफलता को सीमित कर सकता है। आपके रोग बढ़ सकते है। ऋणों का भुगतान आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त रत्न प्रभाव से आपके शत्रुओं में बढ़ोतरी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके साहस में कमी करेगा।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपका अपनी माता और परिवार से आत्मिक लगाव कुछ कम हो सकता है। उदारता, प्रसन्नता और मानसिक शांति की कमी आप महसूस करेंगे। यह रत्न आपकी माता के स्वास्थ्य को आंशिक कमजोर कर सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। मोती रत्न प्रभाव से आपको आराम, अच्छे वाहन, अच्छे मित्र और अचल संपत्ति की प्राप्ति के लिए सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड सकती है। इसके अलावा यह रत्न आपकी स्मरणशक्ति को भी कमजोर करेगा। रत्न शक्तियां आपमें परोपकार भावना के विकास को बाधित करेगी।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते है। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको त्वचा संबंधी रोग दीर्घकाल के लिए परेशान कर सकते है। आपके कष्ट दूसरों के कारण बढ़ सकते है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर कठिनाई से विजय प्राप्त कर सकेंगे। पन्ना रत्न प्रभाव से आपकी

स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है। शैक्षिक पक्ष से इस रत्न को धारण करने पर आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती हैं। यह रत्न आपको विलासिता के अवसर दे सकता है। आपको मस्तिषक और नसों से संबंधित रोग या कष्ट हो सकते हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। बुध रत्न पन्ना आपके वैवाहिक जीवन के सुखों में कमी कर सकता है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण इस रत्न को धारण करने के बाद आपका जीवन साथी अत्यधिक वाचाल होकर आपसे वादि-विवाद कर सकता है। कार्यक्षेत्र में जीवन साथी का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको मित्रों एवं साझेदारों के कारण हानि की स्थिति बना सकता है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको ससुराल पक्ष से धन हानि के योग बन सकते है। कर्मक्षेत्र में बुध रत्न पन्ना की शुभता प्राप्त न होने के कारण इस रत्न को धारण करने के बाद आपके साझेदारी व्यापार आर्थिक पक्ष से कमजोर हो सकते है। व्यापारिक स्थिति में गिरावट आ सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(25/11/2007 - 25/11/2027)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, नीलम, हीरा, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(25/11/2027 - 25/11/2033)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, हीरा, लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(25/11/2033 - 25/11/2043)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(25/11/2043 - 25/11/2050)

मंगल की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, नीलम व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व मोती रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(25/11/2050 - 24/11/2068)

राहु की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद, मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, पन्ना व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(24/11/2068 - 24/11/2084)

गुरु की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, लहसुनिया व मोती रत्न नेष्ट हैं और हीरा व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 25/11/1983

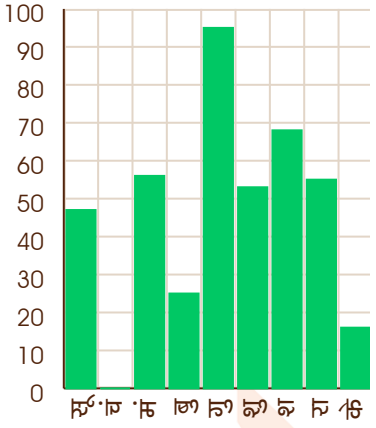

बुध - 24/11/2000

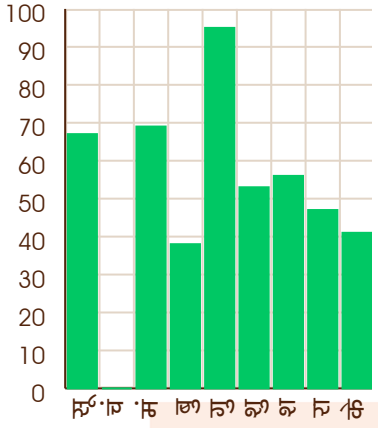

केतु - 25/11/2007

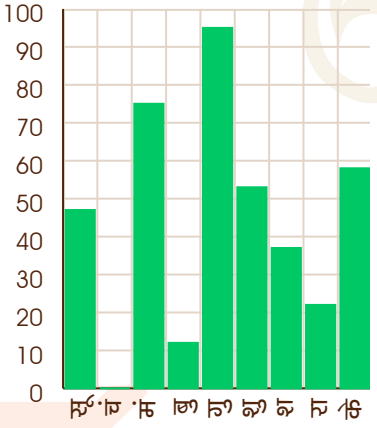

शुक्र - 25/11/2027

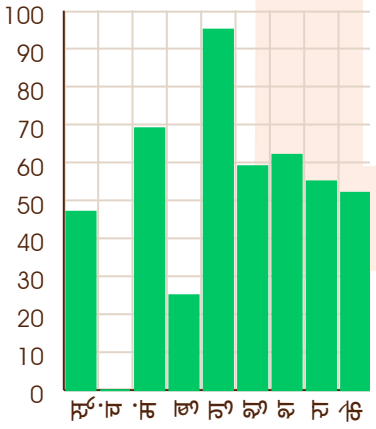

सूर्य - 25/11/2033

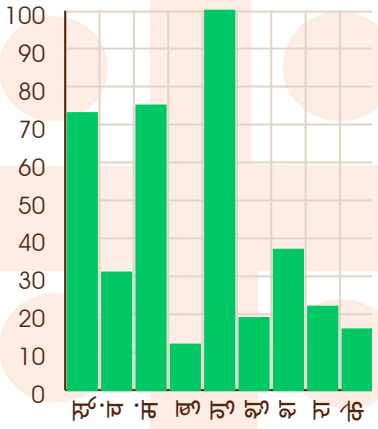

चन्द्र - 25/11/2043

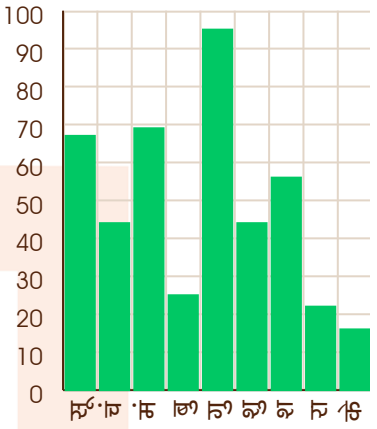

मंगल - 25/11/2050

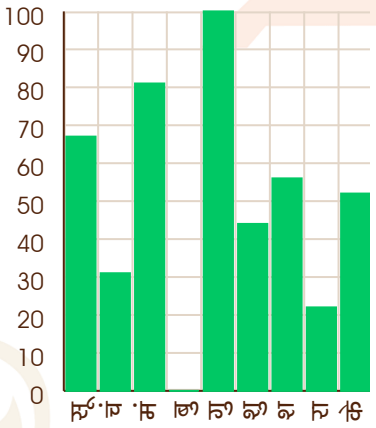

राहु - 24/11/2068

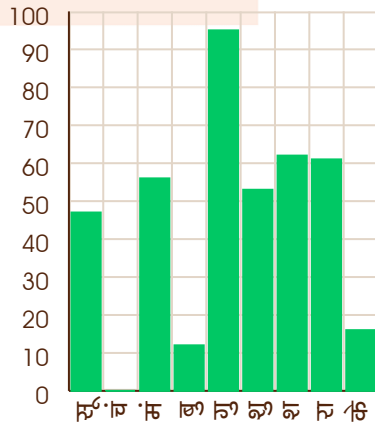

गुरु - 24/11/2084

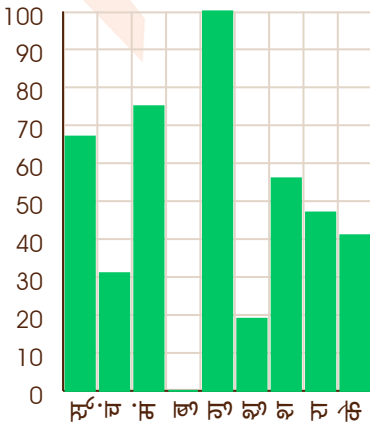

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टोपाज

आपका जन्म धनु राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी गुरु होता है। गुरु सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में सबसे शुभ ग्रह माना जाता है तथा गुरु को ज्योतिष में अमृत के समान माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः धनु राशि के लग्न वाले जातकों को धनु राशि के स्वामी ग्रह गुरु को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु ग्रह के लिये टोपाज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी गुरु सलाहकार एवं धन का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को सभा में वाणीपटुता के कारण मार्गदर्शक के रूप में सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा गुरुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। गुरु ग्रह ज्ञान एवं धन लाभ का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको लीवर या गुर्दे से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको धन आगमन में व्यवधान हो रहे हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से धन प्राप्ति करवाता है।

टोपाज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि तर्जनी अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में गुरु की अंगुली मानी जाती है । टोपाज रत्न गुरु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात गुरुवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल गुरु की होरा में श्रेष्ठ होता है। गुरुवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय गुरु की होरा का होता है। टोपाज को यदि गुरुवार के साथ-साथ गुरु के नक्षत्र अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टोपाज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर पीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, गुरु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र - ऊँ वृं वृहस्पतये नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि गुरु से संबंधित पदार्थ जैसे चने की दाल, गुड़, सवा मीटर पीले कपड़े का दान करें तो टोपाज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन गुरु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और केले की जड़ में जल दें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और उनकी उपासना करें तो यह टोपाज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक गुरुवार को विष्णु जी की उपासना करें तथा विष्णु जी को गुड़ व चने की दाल का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

धनु लग्न वाले जातक यदि टोपाज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते है। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यो में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते है। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ट भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ट भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता हैं। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठंवा भाव अष्टम कहलाता हैं। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते है। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते है। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता हैं। मगर इन संघर्षों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न

होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्न बाधाएं दे सकता हैं। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता हैं। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते है, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते है। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	15/08/1965-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
साढेसाती तृतीय ढैया	17/06/1968-17/06/1968	07/03/1969-28/04/1971	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	सन्तति कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 15 है। एक एवं पाँच के योग से आपका मूलांक 6 होगा। मूलांक 6 का अधिष्ठाता शुक्र है एवं एक का सूर्य तथा पाँच का बुध है। आपके जीवन में इन तीनों ग्रहों की काफी भूमिका रहेगी। मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक सौन्दर्य प्रेमी, सुरुचिपूर्ण व्यवहार करने वाले, जनता के मध्य लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं गान, वाद्य, गीत संगीत सुनने का शौक रहेगा। आप प्रत्येक कार्य में स्वच्छता पसन्द करेंगे। आपके अन्दर दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति रहेगी एवं उन्हें अपना बना लेने की कला रहेगी।

सूर्य के प्रभाव से आप जीवन में सदैव प्रकाशित रहना चाहेंगे। परोपकार में हिचकेंगे नहीं तथा अपने कार्य को निष्पक्ष एवं ईमानदारी से करेंगे। बुध के प्रभाव से आपमें वाणी चातुर्य का विकास होगा। आप सोच-समझकर वाणी व्यवहार करेंगे। तर्क शक्ति अच्छी होगी तथा दूसरों को अपनी बात सहज में समझाने की सामर्थ्य रहेगी। आपकी समाज सेवा के कार्यों में रुचि रहेगी। दान पुण्य के कार्य आपके हाथ से होंगे। विद्याध्यन आपके लिये हितकर है एवं अपने बुद्धि चातुर्य, विद्या बुद्धि के सहारे अपने जीवन में प्रारम्भ से ही सफलता अर्जित करेंगे। एकाध असफलताऐं भी मिलेंगी। लेकिन इनसे आप बिना विचलित हुये अपने जीवन के लक्ष्य पर पहुंचेंगे एवं घर परिवार, समाज में नाम कमायेंगे।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 8 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 8 का स्वामी शनि है। मूलांक 6 और भाग्यांक 8 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपको मूलांक का प्रभाव प्राप्त होगा, तो कभी भाग्यांक का और कभी दोनों के प्रभाव विस्मयकारी रहेंगे। शुक्र कला का दाता है एवं शनि धीरे-धीरे स्थिरता देता है। इन दोनों के संयुक्त प्रभाववश आपके रोजगार-व्यापार में कला एवं श्रम का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। प्रारंभ में आपकी आर्थिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं होगी। लेकिन मध्य अवस्था से उत्तरोत्तर आर्थिक स्थिति में वांछित सुधार होता चला जाएगा। आप अपनी मेहनत-परिश्रम तथा कला के

द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करेंगे। आपको जो भी उपलब्धियां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त होंगी, उनमें आपके द्वारा किये गये परिश्रम की स्पष्ट झलक देखने को मिलेगी। आपके कार्यों में अवरोध उत्पन्न होंगे तथा उन अवरोधों को पार करने मे आपकी तन-मन-धन की शक्ति काफी मात्रा में व्यय होगी। जीवन के मध्य युग से आपको उच्च कोटी की सफलताएं भी मिलनी प्रारंभ होंगी, जो अंत तक स्थायी रहेंगी। समाज में आप एक कर्मठ व्यक्ति केरूप में अपनी पहचान बनाएंगे।

आपका भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 35 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 44 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है तथा आपके भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 8 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि आपकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन आपके लिए विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

शुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

अशुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें में शुभ नहीं है। अतः आप इन दिवसो में कोई भी कार्य प्रारंभ करने की भूल न करें। यही आपके लिए उचित रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखें जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा आपके रोजगार-व्यापार में भी सहायक होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं आपके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा आपके रोजगार आदि में भी आपको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो आपके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

वास्तु एवं निवास

यदि आप स्वयं का भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि आप सही दिशा का चयन करें। आपके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। आप शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह आपके लिए उत्तम रहेगा। अतः आप अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ वाहन नं

यदि आप चाहते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो आपके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः आप यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर आप स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिए। जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन आपको अच्छा फलेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको कार्त्तवीर्यार्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

व्यवसाय

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य।

व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप हीरा धारण करें। यदि आप हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। 51 सेंट का हीरा आप शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र - ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

वनस्पति धारण

आप शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

वास्तव में कुछ व्यक्तियों का जन्म भाग्यशाली होता है। उनमें से एक आप भी हैं। ज्योतिषीय आकृति स्वरूप आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में धनु लग्नोदय एवं धनु नवमांशोदय काल। आपका जन्म सिंह राशि के द्रेष्काण में हुआ था। आपका जन्म प्रभाव यह व्यक्त करता है कि आप लब्ध प्रतिष्ठित हो कर, धन संपत्ति से युक्त पूर्ण स्वस्थ एवं प्रसन्नतम जीवन का आनंद प्राप्त करेंगे।

आपके जीवन का प्रथम भाग ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी सफलता हेतु एक छोटा सहयोगात्मक योगदान ही पर्याप्त होगा। आपके जीवन में थोड़ा विलम्ब से धनोपार्जन कर के सुव्यवस्थित होंगे। आपकी अच्छी संपत्ति आपमें विद्यमान सहन शक्ति एवं आत्मकारिता के गुण हैं। आप यह जानते हैं कि किस प्रकार धनी व्यक्ति बना जा सकता है। आप इन बातों को बहुत महत्व देते हैं। आप धन का समुचित उपयोग करेंगे। आप बहुत धन संग्रह करेंगे। परंतु आपके मस्तिष्क में अहंकारिक भावना से युक्त नहीं होंगे तथा कोई भी प्रतिकूल कार्य नहीं करेंगे। जो आप पर विश्वास करेगा। आप उसकी सहानुभूति अवश्य लौटाएंगे। क्योंकि आप बाधा रहित होकर जीवन निर्वाह करना चाहते हैं। आप एक चतुर एवं बुद्धिमान प्राणी हैं। अतः आप अपने अनेक मित्रों को आकर्षित कर लेंगे क्योंकि वे आपको कला में प्रवीनता के प्रशंसक हैं। वे लोग अभावग्रस्त होने पर आपका संरक्षण अभिलाषा प्रकट करेंगे।

आपके पास एक सुखद भवन होगा जिसमें अपनी कुशल एवं प्रिय गृहणी के साथ आनंद प्राप्त करेंगे तथा होनहार सुशील बच्चों से युक्त होंगे। आप इन से अलग रहकर प्रसन्न नहीं रहेंगे। आपका घर अन्यों की अपेक्षा इर्ष्यारहित होगा। आप अपने जीवन में उत्तरोत्तर विकास हेतु, उद्यृत व्यवसायों में से कोई भी पसंदीदा रोजगार सुनिश्चित कर सकते हैं। यथा अंतर्राष्ट्रीय आयात-निर्यात् विकास का कार्य, न्यायधीश अथवा मध्यस्थता करने का कार्य, अथवा भूमि भवन से संबंधित दलाली का कार्य यथा वास्तविक भूमि के क्रय-विक्रय, खनिज खदान कार्य, कृषि कार्य अथवा वास्तुकला से संबंधित कार्य आपके लिए अनुकूल एवं लाभजनक प्रमाणित होगा।

आपके स्वास्थ्य की उत्तमता हेतु शान्ति पूर्वक अंहकारिक भावनाओं से विरक्त तथा किसी भी प्रकार की अतिशय से अलग रहना लाभदायक होगा। आपके अपने स्वास्थ्य रक्षा हेतु अच्छी प्रकार नियमित रहना आवश्यक है। कालांतर में किसी भी प्रकार की आकस्मिकता के कारण कतिपय रोग यथा गैस रोग की दिक्कते, पक्षाघात, चर्म रोग यथा फोड़ा-फुंसी अथवा खुजली रोग से प्रभावित होने की आशंका है। यदि आप समय पर इसके रोकथाम की चहल कदमी प्रारंभ कर लिए तो आप रोग मुक्त हो सकते हैं।

भविष्य की अनुकूलता हेतु आप अंकों में अंक 3, 5, 6 एवं 8 अंक का व्यवहार अपने जीवन में शुभता हेतु करें तो उत्तम रहेगा। परंतु अंक 2, 7 एवं 9 अंक आपके लिए प्रतिकूल प्रमाणित है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुभ दिन रविवार, सोमवार एवं मंगलवारका दिन

प्रतीत होता है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके लिए अशुभफलदायी है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग क्रीम रंग, सफेद, नारंगी, नीला, हरा रंग एवं सूआपंखी रंग लाभदायक प्रमाणित होगा। परंतु रंग काला, लाल एवं मोतिया रंग सर्वथा त्याज्यनीय है।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सटटे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली पुरूष होंगे तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा जीवन में निहित उददेश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगे तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों के पुरूष होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगे तथा अपना अधिकाशं समय अनावश्यक वार्तालाप में ही व्यतीत करेंगे। आप इतनी बातूनी प्रकृति के व्यक्ति होंगे कि अन्य लोग आसानी से आप पर काबू नहीं पा सकते हैं। आपका स्वभाव आधुनिक विचारों से युक्त रहेगा तथा विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप किसी को भी अनावश्यक रूप से अपना मित्र नहीं बनाएंगे तथा अत्यंत ही सोच समझकर ही किसी से मित्रता करेंगे जब आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाएंगे।

आप आंतरिक मन से पारिवारिक जनों की पूर्ण चिंता करेंगे परन्तु प्रत्यक्ष में उपेक्षा के भाव को ही प्रदर्शित करेंगे। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य अनावश्यक मतभेद की भी संभावना रहेगी तथापि उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलता रहेगा तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्न तथा परिश्रमशील रहेंगे। आप विभिन्न स्वादों के प्रिय रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका आस्वादन करते रहेंगे। वृद्धावस्था में आपको नेत्र संबधी कष्ट की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप इच्छित मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही विदेश भ्रमण आदि से भी लाभ की संभावना रहेगी। इस प्रकार वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में आप समर्थ रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को आसानी से नहीं भूल पाएंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा वे बुद्धिमान आदर्श तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी एवं सामाजिक मान सम्मान से भी युक्त रहेंगे। साथ ही परस्पर कमियों या गलतियों की आप उपेक्षा करेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा खुशहाली बनी रहेगी तथा सभी परिवार की मर्यादा तथा सम्मान के लिए चिन्तित रहेंगे। मित्र एवं संबंधियों से भी आपके सामान्यतया मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग मिलता रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं विद्वता से उपलब्धियां अर्जित करेंगे। साथ ही यदि कोई परेशानी या समस्या उत्पन्न होगी तो दृढ़ता पूर्वक उसका सामना करेंगे। जो आप कहेंगे वहीं करेंगे भी यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता रहेगी। आप एक सिद्धांतवादी पुरूष होंगे तथा अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहेंगे चाहे उनका फल कुछ भी हो। साथ ही वाहन, दूरदर्शन या टेलीफोन आदि संचार तथा भौतिक साधनों की भी आपको प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इनका उपभोग करते रहेंगे। संगीत एवं कला आदि के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा रिक्त समय में इनसे मनोरजंन करेंगे। आप की दूर समीप की यात्राएं होंगी तथा इनसे यथोचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त होगी साथ ही अध्ययन में सूचना संबंधी लेखों में आपकी रूचि रहेगी। आप स्वयं भी लेखक या संपादक हो सकते है। इसके अतिरिक्त आपकी मित्रता कीर्तिवान, क्षमाशील, सत्यवक्ता तथा उत्तम शील स्वभाव के व्यक्तियों से होगी। साथ ही जीवन में सुखोपभोग करके आप एक आदर्शवादी पुरूष होंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा चन्द्रमा भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से आप युक्त होंगे तथा आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। समाज में आपका यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को अवश्य प्राप्त करेंगे। माता के सहयोग या प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा आप अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से धन सम्पत्ति अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपको अचल संपत्ति की अपेक्षा चल संपत्ति से विशेष एवं शीघ्र लाभ होगा। अतः इस पर समयानुसार निवेश करते रहें।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी। आपका घर विस्तृत एवं आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होगा तथा भौतिक उपकरणों से भी सुशोभित रहेगा। घर में आप स्वच्छता का विशेष ध्यान रखेंगे। आपका घर अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर, सुशिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होंगी तथा उनके आकर्षक, व्यक्तित्व एवं उत्तम कार्य कलापों से सभी लोग प्रभावित होंगे। परिवार के सदस्यों का वह स्नेह पूर्वक लालन पालन करेंगी तथा परिवार की सुखशांति एवं समृद्धि में उनका महत्वपूर्ण योगदान होगा। आपके प्रति उनके मन विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल आपको अपना नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदन होगा। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपकी रूचि होगी तथा प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं को उतीर्ण करेंगे। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छी श्रेणी में पास करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर अग्रसर होने में तत्पर होंगे। इससे स्वजनों एवं सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में डिग्री भी प्राप्त कर सकते है।

अष्टमेश चन्द्रमा की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आप न्यूनाधिक रूप से रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकते है। इसके लिए यदि आप प्रारंभ से ही खान-पान पर विशेष ध्यान दे तो ऐसी समस्याओं से सुरक्षा होगी तथा आपका समय सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकते है। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रूचिशील होंगे। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रूचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगे। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकते है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विद्वान के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगे। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगे। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सद्भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोंनो का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेंगे जिससे उनका भविष्य उज्जवल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चोंको वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप का शत्रु या विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा इसका मुख्य कारण यह रहेगा कि आप अपनी ही इच्छा से अधिकाशं कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा अन्य जनों की इच्छा या सलाह को कोई महत्व नहीं देंगे। आपका उच्च स्तर, कार्य प्रणाली तथा अन्य प्रकार से खुशहाली आपके शत्रुवर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण होगी। साथ ही आपको अपने सम्बन्धियों तथा सहयोगियों से भी समय समय पर विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप सामान्यतया दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में लिप्त रहेंगे तथा इन पर आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे जिससे आपको इनमें सफलता प्राप्त हो सकें। आप एक चतुर चालाक तथा बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा साम दाम दण्ड भेद से किस प्रकार से कार्य सिद्ध किया जाता है इसके विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। इस प्रकार अपनी इस कार्य प्रणाली से आप शत्रु वर्ग तथा मुकद्दमे बाजी में विजय प्राप्त कर सकेंगे।

आपको सेवक वर्ग की सामान्यतया अत्यधिक आवश्यकता रहेगी आप एक व्यस्त व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यो को सम्पन्न करने में असमर्थ रहेंगे अतः नौकरों की नियुक्ति आपके लिए आवश्यक कार्य होगा लेकिन यदा कदा सेवक वर्ग आपके गुप्त रहस्यों को उजागर करेंगे फलतः समाज में आपके मान सम्मान में न्यूनता रहेगी। साथ ही वे चोरी आदि से भी हानि प्रदान कर सकते है अतः इनके चुनाव में सावधानी का परिचय दें।

आपके पास आराम दायक जीवन व्यतीत करने के लिए पर्याप्त मात्रा में धन रहेगा लेकिन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आपका अनावश्यक व्यय भी होगा जिससे ऋण आदि के भार से दब सकते है। आप एक सम्मानीय परिवार के सदस्य होंगे तथा आपके मामा मामियों का स्तर भी उच्च रहेगा। यद्यपि वे आपको पसंद करेंगे परन्तु आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्रदान कम ही करेंगे तथा आपकी कार्य प्रणाली से भी वे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे लेकिन अत्यधिक आवश्यकता के समय वे आपको अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के लिए खान पान का पूर्ण ध्यान रखें तथा अनावश्यक रूप से भोजन में अनियमिता न रखें नहीं तो प्रौढ़ावस्था में आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया मिथुन राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कलाप्रेमी तथा हास्य प्रिय प्रवृति का व्यक्ति होता है। बृहस्पति के प्रभाव से वह विद्वान साहित्य प्रेमी उत्तम कार्यो को करने वाला तथा चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं विनम्र स्वभाव की महिला होंगी तथा सांसारिक कार्यो को करने में दक्ष रहेंगी। उनकी वाणी मधुर होगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के प्रति अध्ययन की रूचि होगी। वह हास्य युक्त प्रवृति की भी महिला होंगी जिससे सभी लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्य मान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। बृहस्पति के प्रभाव से आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला के प्रति उनका प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह किसी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे आप प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप जीवन में नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें पितृवत सम्मान प्रदान करेंगे तथा महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी सलाह एवं सहमति अवश्य लेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार तथा मधुरवाणी से प्रभावित होंगे एवं उन्हें यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको यथोचित लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें इच्छित लाभ एवं उन्नति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आपके पास आध्यात्म या ज्यौतिष के ज्ञान संबन्धी प्रतिभा जन्म से ही रहेगी तथा इनके प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी साथ ही परिश्रम पूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करके इस क्षेत्र में सम्मान एवं ख्याति अर्जित करेंगे। आप स्वाभाविक रूप से अन्तर्प्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से युक्त रहेगे। आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां सामान्यतया सत्य ही सिद्ध होगी। साथ ही इस विद्याओं के द्वारा अपनी परेशानियों में भी न्यूनता करने में समर्थ रहेंगे तथा इन शास्त्रों में इच्छुक व्यक्तियों को अपना मित्र बनाएंगे। इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से भी आप जीवन में इसका उपयोग कर सकते हैं।

आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा इसके द्वारा आप धनऐश्वर्य से युक्त होकर आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। प्रौढ़ावस्था में आपको और अधिक चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। मित्रों के द्वारा भी कुछ लाभ होने की संभावना रहेगी। शादी के समय में आप प्रचुर मात्रा में दहेज प्राप्त करेंगे जो धन आभूषण वाहन तथा आधुनिक घरेलू सामान के रूप में होगा। यदि आप चाहे तो इसी धन से आराम से अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। बीमा कराने में आप शीघ्रता करेंगे क्योंकि आप सर्वप्रथम किसी भी वस्तु की पूर्ण सुरक्षा चाहते है तथा अनावश्यक हानि न हो इसका प्रबन्ध पहले ही कर देते हैं। आप को जीवन में चोरी या डकैती का सामना कम ही करना पड़ेगा तथा ऐसी घटनाएं होगी भी तो उससे कोई हानि नहीं होगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने धर्म का श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगे। साथ ही पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का आचरण करेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा नेतृत्व के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही आपकी प्रवृति स्वतंत्र होगी तथा धर्म गुरूओं का आप आदर करेंगे तथा उनका अनुसरण भी करेंगे। अध्ययन के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा प्रसिद्ध धार्मिक तथा तीर्थ स्थानों की समय समय पर यात्रा करते रहेंगे। लेकिन आप मुख्य रूप से अपने धर्म से संबन्धित तीर्थ स्थान की यात्रा करने के ही विशेष इच्छुक रहेंगे। ध्यान एवं योगिक क्रियाओं को भी समय समय पर करते रहेंगे तथा अध्यात्म के द्वारा अपनी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि करेंगे। साथ ही भविष्य वाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे जिससे क्षेत्रीय या राष्टीय स्तर पर आपको सम्मान मिल सकता है।

आप समाज से अपने आपको एक दम जुडे हुए लगते हैं। आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा किसी अन्य के साथ या नियंत्रण में आपको कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा इससे यदा कदा आपको अन्य जनों की आलोचना का भी सामना करना पड़ सकता है लेकिन सामजिक जीवन में सफल रहेंगे तथा लोग आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। धार्मिक एवं व्यवसाय संबंधी कार्यो के लिए आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं हो सकती है तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति एवं धन ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी । आप प्राणिमात्र के लिए कई लेख लिखकर तथा उनकी सेवा एवं सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। वास्तव में आप अपने पूर्वजन्म के कार्यो से ही इस जीवन में सुखऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही शुक्र भी दशमभाव में ही स्थित है। कन्याराशि भूमितत्व एवं शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा। साथ ही समय समय पर आप परिवर्तन भी करते रहेंगे जिनमें यदा कदा आपको लाभ भी हो सकता है तथापि आपको ऐसी प्रवृति की उपेक्षा करनी चाहिए।

दशमभाव में कन्याराशि में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आप कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, काव्य लेखन सम्पादन, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में अपनी आजीविका का प्रारंभ कर सकते है। साथ ही राजनीति के क्षेत्र में भी आपको सफलता मिल सकती है अतः आपको क्षेत्रों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए। इससे आप इसमें उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए फिल्म निर्माण एवं वितरण कार्य, काव्य प्रकाशन, कला एवं संगीत केन्द्र का स्वामित्व या संस्थापक सोना चांदी तथा रत्नों का कार्य, वाहन संबंधी व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधनों एवं आलंकारिक वस्त्रों का व्यापार अथवा आयात निर्यात तथा मूल्यवान मदिरा के व्यापार से आपको इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी साथ ही स्वतंत्र लेखन के कार्य से भी आप लाभान्वित हो सकते है अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं वस्तुओं का व्यापार ही सम्पन्न करना चाहिए।

दशमभाव में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आप सामाजिक मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेंगे। साथ ही किसी सम्मानित पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। जिससे समाज में आपके यश में अभिवृद्धि होगी। आप किसी क्लब या संस्था के सम्मानित सदस्य भी हो सकते है। लेकिन नीचस्थ शुक्र के प्रभाव से उपरोक्त सम्मान प्रतिष्ठा एवं यश में विलम्ब तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। अतः इसके लिए आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम एवं ईमानदारी से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता बुद्धिमान शिक्षित एवं कलाप्रिय व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य वे प्रतिष्ठित होंगे आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहेंगे तथा उच्चस्तर पर यथोचित प्रबंध करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी वे पूर्ण सहयोग देंगे तथा उनके सहयोग से आपको वांछित उन्नति मिलेगी। साथ ही अपने परिश्रम एवं बुद्धिमता से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके परस्पर संबंधों में विशेष मधुरता नहीं होगी तथा नीचस्थ शुक्र के प्रभाव से सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद बने रहेंगे इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यो में भी एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही लेंगे। अतः आपको अप्रिय स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय मैं एकादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक दूरदर्शी व्यावहारिक तथा न्यायप्रिय व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के साथ साथ अपने पराक्रम एवं योग्यता से अपने जीवन की अधिकांश आकाक्षांओं तथा उमंगों को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। धन धान्य एवं भौतिक सुख साधनों से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही जीवन में पत्नी या किसी अन्य स्त्री के सहयोग से वांछित धनार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही विलासमय वस्तुओं के क्रय विक्रय, इलक्ट्रोनिक्स उपकरण तथा कम्प्यूटर आदि के क्षेत्र में भी आपको आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार आजीवन आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया सुदृढ़ ही रहेगी।

आपको बड़ी बहनों से जीवन में वाँछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही वे आपको पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह प्रदान करेंगी। वे आपको समय समय पर आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में भी सहायता देंगी तथा आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे एवं अवसरनुकूल उनकी इच्छा के अनुसार ही सामान्य कार्य सम्पन्न करेंगे। आप मित्रता प्रिय व्यक्ति होंगे अतः आपके मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। मित्र मंडल में आप आदरणीय रहेंगे सभी मित्रजन आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपको एकांत पसन्द नहीं रहता तथा किसी न किसी मित्र की आवश्यकता हमेशा रहती है। इसके अतिरिक्त आप स्वयं भी ईमानदार एवं उदार व्यक्ति होंगे तथा समाज से आपको पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा एवं प्रौढ़ावस्था में किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। साथ ही समाज एवं पड़ौसियों की सेवा एवं सहायता करने के लिए भी आप सदैव तत्पर रहेंगे। अतः सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। इसके प्रभाव से आप भौतिक वादी पुरूष होंगे तथा धनार्जन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव अन्य जनों के परोपकार के लिए भी व्यय करने का रहेगा। अतः आपको अधिक धन की समय समय पर आवश्यकता पड़ेगी लेकिन अपनी योग्यता तथा पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप हमेशा धनवान एवं ऐश्वर्यशाली होने के इच्छुक रहेंगे साथ ही आर्थिक सुरक्षा के भी इच्छुक होंगे तथा इसमें सफल रहेंगे ।

आपका मुख्य रूप से व्यय, दया दान एवं मित्रों तथा बन्धुवर्ग पर रहेगा। आपको इसका जब भी अवसर मिलेगा प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे। साथ ही भौतिक साज समान पर भी व्यय होगा लेकिन कभी कभी आपको ऐसे मामलों में सावधान भी रहना चाहिए क्योंकि आपकी प्रवृति को देखते हुए लोग आपसे झूठ मूठ धन भी ऐंठ सकते है।

आप दूर समीप की यात्रा के शौकीन रहेंगे तथा इनसे आपको नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी तथा अन्य नई चीजों को भी आप सीखेंगे। अतः यात्रा से आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। साथ ही युवावस्था में आप कई साहसिक कार्यो को भी सम्पन्न करेंगे। आप किसी नये सिद्धांत को भी प्रतिपादित कर सकते है। आपकी देश की यात्राओं के अतिरिक्त विदेश संबंधी कोई यात्रा भी होगी यह कार्यवश या स्वास्थ्य के कारण भी हो सकती है। इसके साथ ही बाएं आंख में भी कोई परेशानी रहेगी या किसी चोट आदि का होगा। लेकिन सामान्य रूप से आप सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रफल

आप का जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, योनि गौ, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दु" या "दू" अक्षर से होगा यथा- दुष्यन्त आदि।

आप अपने परिवार या कुल में सर्वश्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी परिवारिक जनों से यथोचित स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेक्षा। आप शुभकर्यों को करने के लिए हमेशा रूचिशील रहेंगे। आपके सत्कार्यों से अन्य सामाजिक लोग भी लाभान्वित रहेंगे। आप विपुल धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में एक धनाढ्य व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। साथ ही आपमें अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरूष होंगे एवं समाज में पूर्ण रूप से दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप विविध प्रकार के सत्वगुणों से हमेशा सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक इनका पालन करते रहेंगे। साथ ही आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी एवं अवसरानुकूल परिवार या समाज के मध्य अपनी इस प्रवृति का आप अनुपालन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे एवं नाना प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। फलतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप निपुण दौरान आपकी- ओजस्वी वक्तव्यों से सभी लोग प्रभावित एवं प्रसन्न रहेगे। जीवन में आवश्यक सुखसंसाधनों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे एवं पुत्र आदि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप शत्रुओं को पराजित करने में भी सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा नियम पूर्वक धर्माचरण में तत्पर रहेंगे।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

आप एक गौरव शाली व्यक्ति होंगे एवं अपने अच्छे कार्यों से समाज में गौरव प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के विषय में भी आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा समाज में आप एक श्रद्धेय एवं सम्मानित व्यक्ति होंगे। साथ ही आपका समाज में प्रभुत्व भी स्थापित रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी व्यक्ति होंगे एवं शौर्ययुक्त कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वदा उत्सुक एवं तत्पर रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

मीन राशि में पैदा होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा नासिका उन्नत रहेगी। आपके नेत्र अत्याधिक सुन्दर होंगे तथा शरीर के सभी अंग सुडौल एवं सुन्दरता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। शिल्प या चित्रकारी के क्षेत्र में आप विशेष योग्यता एवं यश प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगे। आपके शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे एवं उन्हे पराजित करने में आप सर्वदा सक्षम रहेंगे। आप कई शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ज्ञान प्राप्त करेंगे एवं एक विद्वान के रूप में समाज में पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा भी अर्जित करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी एवं इसका आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा समस्त धार्मिक कृत्यों का यत्नपूर्वक आचरण करने

के लिए उद्यत रहेंगे। स्त्री वर्ग में भी आप पूर्ण रूप से प्रिय एवं आदर के पात्र होंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रायः प्रसन्न ही रहेंगे। जीवन में आप समस्त सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप सरकारी सेवा में भी तत्पर रहेंगे एवं खान से निकाले गये द्रव्यों से आजीविकार्जन तथा लाभ प्राप्त करेंगे। लेकिन स्त्री से आप प्रायः पराजित रहेंगे एवं समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के निर्देश तथा कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव भी अच्छा रहेगा एवं अन्य जनों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नावादि में सैर करने में आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप एक दानी पुरूष भी रहेंगे एवं यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप समुद्र या जल से निकाले हुए पदार्थो से यथा शंख, मोती आदि रत्नों से पूर्ण रूपेण लाभ अर्जित करते रहेंगे। साथ ही आप अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी की धन सम्पत्ति को भी प्राप्त कर सकेंगे एवं सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। स्त्रियोचित वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग की भावना रहेगी। साथ ही आपके शरीर का कद भी सामान्य ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

जल पीने की इच्छा आपकी बार बार होती रहेगी तथा दिन में कई बार इसका उपयोग करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप एक उत्तम श्रेणी के विद्वान होंगे एवं कृतड़ता के भाव से हमेशा युक्त रहेंगे तथा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उसका उपकार स्वीकार करेंगे एवं हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। आपके इन सद्गुणों से अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक सौभाग्यशाली पुरूष होगे तथा आपके अधिकांश कार्य भाग्यबल से ही सिद्ध होते रहेंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप जितेन्द्रिय पुरूष होंगे एवं इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से संयम रखकर संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। आप एक चतुर तथा बुद्धिमान व्यक्ति होंगे एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने सभी सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जल क्रीड़ा में भी आपकी इच्छा रहेगी एवं इससे आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी एवं धोखा या छल का इसमें आभाव रहेगा। कई प्रकार के शस्त्रों को चलाने में भी आप निपुण रहेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप अपना अधिकांश समय आजीविकार्जन पर ही सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे। साथ ही कभी कभी आपके आय स्त्रोतों में भी बाधा आएगी जिससे आपको आर्थिक रूप से कष्ट प्राप्त करेंगे। आप को पिता से पूर्ण धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा जीवन में आनन्द पूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगे आप में साहस का अभाव नहीं रहेगा एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए आप प्रायः इच्छुक एवं तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप में सन्तुष्टि के भाव की प्रधानता रहेगी एवं जो कुछ भी आपके पास हो उसी में ही आप प्रसन्न रहेंगे एवं सन्तोष प्राप्त करेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही गम्भीरता से युक्त रहेंगे एवं शौर्यादि गुणों से भी आप सर्वदा सुशोभित रहेंगे। समाज में आप का आदर एक सर्वमान्य प्रधान पुरूष के रूप में किया जाएगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे। साथ ही आपकी प्रवृति कंजूसी से भी युक्त रहेगी एवं धन संचय करने में विशेष रूचिशील रहेंगे। आपकी कृपणता से अन्य लोग आपसे अप्रसन्न भी होंगे। आप अपने परिवार या कुल में सर्वसम्माननीय एवं श्रेष्ठ समझे जाएंगे तथा सभी पारिवारिक लोग आपसे स्नेह रखेंगे। आपकी सेवा कार्यों में भी रूचि रहेगी तथा इनको करने में आप सर्वदा उद्यत रहेंगे। आपकी गमन गति तीव्र होगी तथा तेज चलना आपको रूचिकर लगेगा। आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा तथा बन्धुवर्ग के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।

मानसागरी

आपका व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा। साथ ही विद्वता की भी आप में प्रवलता रहेगी। अतः सभी लोग आपका आदर करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आप धार्मिक व्यक्ति होंगे तथा विप्र एवं देवताओं के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु यदा कदा आप अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। आप एक दयावान पुरूष होंगे एवं दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों के प्रति आप यथाशक्ति इस भावना का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप शारीरिक रूप से पूर्ण रूपेण बलशाली रहेंगे। साथ ही कई प्रकार के कार्यों को करने एवं कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे। इससे आप समाज में ख्याति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा अपने परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

आप समाज में हमेशा एक आदरणीय व्यक्ति रहेंगे एवं धनैश्वर्य से युक्त रहकर प्रसन्नतापूर्वक उसका जीवन में उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी बड़ी होंगी एवं निशाने बाजी की कला में आप हमेशा निपुण तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के लोग पूर्ण रूप से आपके प्रभाव में रहेंगे एवं आपकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे अतः समाज में आप एक उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के हमेशा प्रिय रहेंगे एवं उनसे यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगे। आप में हमेशा उत्साह का भाव बना रहेगा एवं समस्त कार्यों को अपनी उत्साही प्रवृति से सम्पन्न करेंगे। साथ ही आप में वाक्चातुर्य की भी प्रधानता रहेगी एवं अपनी चतुराई पूर्ण बातों में सबको आप प्रभावित करने में सफल रहेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला,

वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए फाल्गुनमास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि का चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फल प्रदान

करने वाला होगा। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा वृहस्पति वार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत पुष्प, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए एवं वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी एवं सर्वप्रकार के अनिष्ट प्रभाव दूर होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य आठवें खाने में है। इसकी वजह से आप बहुत गुस्सा करेंगे। आप अधीर, स्त्रियों के लिए लालायित, सच्चाई से आगे बढ़ने वाले, तपस्वी होंगे। मरने के वक्त आपको भयानक रोग या कष्ट नहीं होगा। आपकी आयु की रक्षा होगी। बहन की ससुराल में रह कर चोरी न करें तो अच्छा फल मिलेगा। यदि आप चोरी न करें तो भाग्यशाली होंगे। आपके सामने किसी की मौत नहीं होगी। आप बीमार व्यक्ति के पास बैठें तो रोगी स्वस्थ हो जाएगा। आमतौर पर आपका जीवन सुखी रहेगा। आप सच्चे और नर्म स्वभाव के होंगे। कभी तिरस्कृत भी होना पड़ सकता है। आप हर काम करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपके धन का दूसरे लोग भी उपयोग करेंगे। आपका साधु स्वभाव होगा तो अपने लिये किये कार्यों को संसार को समर्पित करने की आप में भावना भी रहेगी।

यदि आपने स्त्रियों से झगड़ा किया, ससुराल वालों को धन के लिए तंग किया, चोरी ठगी की नियत रखी, दक्षिण दिशा के मुख्य दरवाजे वाले मकान में रिहाईश की तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से गुप्त रोग से दुःखी, अस्वस्थ रहेंगे। सरकारी विभाग से परेशानी, आर्थिक स्थिति खराब और आंखों की रोशनी कम हो सकती है। गंदी सोहबत में पड़ कर आप तबाह हो जाएंगे। आप पत्नी के अलावा दूसरी औरत से संबंध रखेंगे तो आपके भाग्य में धोखा लिखा है। जहरीले जीव-जंतुओं से सावधान रहें ये आपके मौत के कारण हो सकते हैं। आपको पीठ में दर्द, रक्तचाप की बीमारी हो सकती है। आपको आर्थिक नुकसान की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रसोई को अपवित्र न बनायें।
2. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।

उपाय :

1. बड़े भाई या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा चौथे घर में है। आपका भाग्य जागेगा। आपको जमीन, जायदाद, भवन और वाहन का उम्दा सुख मिलेगा। पैतृक कारोबार से लाभ होगा। आपको कपड़े के व्यवसाय से लाभ होगा। आपको माता-पिता का पूर्ण सुख मिलेगा। बुढ़ापा सुखपूर्वक गुजरेगा। पैतृक संपत्ति अवश्य प्राप्त होगी। सरकारी खर्चे से विदेश की यात्रा करेंगे। आपके पास धन का दरिया होगा जितना खर्च करोगे उतना ही धन बढ़ेगा। माता और लोगों की

सेवा करने से माया का दरिया समुद्र बन जाएगा। आपकी उम्र लंबी होगी आपके पास कोई व्यक्ति अमानत रखे तो लेने के लिए वापस नहीं आएगा। पुत्र पैदा होने के बाद आपकी हालत अच्छी हो जाएगी। आप सरकारी नौकरी या सरकारी ठेकेदारी करेंगे तो दौलत अच्छी मिलेगी। समुद्री सफरों में भी लाभ प्राप्त होगा। माता व पत्नी दोनों से सहयोग प्राप्त होगा। आप राजसी ठाठ भोगेंगे। आपको बुजुर्गों का व्यापार बदलना हानिकारक होगा। आप न्यायमूर्ति या जज भी हो सकते हैं। अच्छे सलाहकार साबित होंगे और आप अपना कोई भी कार्य करने से पहले किसी की सलाह जरूर लेवें। यह आपके परिवार के लिए हानिकारक है।

यदि आपने दूध-पानी बेचने का काम किया, माता या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा किया, दादा-पिता के समय का कारोबार बदला, घर आये मेहमान की सेवा न की तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से यदि आप माता को कष्ट देंगे और उनका विरोध करेंगे तो धन की खराबी और मन की शान्ति भंग होगी। बुजुर्गों की संपत्ति नष्ट होगी। आप किसी का एहसान नहीं मानोगे, माता को कष्ट देना या उसका विरोध करने से, वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। यदि आप बुजुर्गों का व्यापार बदलेंगे तो हानि होगी, दूध का बेचना या डेयरी फार्म के काम में हानि होगी और संतान सुख न होगा। मेहमानों की सेवा करने की बजाए उनसे कुछ धन व समान की आशा रखेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माता का विरोध न करें।
2. दूध-पानी मोल न बेचें।

उपाय :

1. शुभ कार्य शुरु करते या जाते समय पानी या दूध का कुंभ रखें।
2. घर में आये मेहमानों को दूध या मीठा पानी जरूर पिलायें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगे। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाले होंगे। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगे। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दरजे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद

के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बंधुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगे, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू होंगे या परिवार में बच्चा गोद भी लेना पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. जीजे-साले-भांजे या दोहते की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको परिश्रम करते रहना पड़ेगा। आप गुप्त विद्या के जानकार या गुप्त विद्या से लगाव रखने वाले हैं। 34 वर्ष के बाद समय अच्छा हो जाएगा। राजदरबार से सम्मान मिलेगा, ससुराल से लाभ मिलेगा।

यदि आपके घर में लाल, गुलाबी, महरून आदि रंग के कोरे कपड़े होंगे या मिट्टी का कोरा बर्तन होगा घर की सीढ़ियां टूटी हुई होंगी, परस्त्री संबंध रखेंगे तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपका धन रोग-बीमारी में बहुत खर्च होगा। गुप्त रूप से तबाह होते रहेंगे। कुछ हानिकारक समय आ सकता है। आपको काफी सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए अन्यथा जेल भी जाना पड़ सकता है। अस्पताल, वीरान अथवा घर से बाहर समय बिताना पड़ सकता है। नौकरी या व्यवसाय में अचानक बाधा आ सकती है। आय में आधे की क्षति हो जाएगी जो समझ में नहीं आएगी। दंत या नाड़ियों में बीमारी हो सकती है। पत्नी का मारक योग या दो पत्नी रखेगे। धन-दौलत भी खतरे में पड़ सकती है। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। 32 से 34 वर्ष की आयु में धनाभाव के कारण अन्य स्रोत में रुकावट ही होगी। 16 से 21 वर्ष तक की आयु का समय एकदम बेकार रहेगा। उम्र के 34 वर्ष तक अच्छा विकास नहीं होगा। धन-सम्पत्ति पर बुरा असर पड़ेगा। आलस्य के कारण उल्टा प्रभाव पड़ेगा और आर्थिक नुकसान होगा। जीवन में दीमक लग जाएगा अर्थात् आपके सुख के साधन खराब हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लाल, गुलाबी, महरुन रंग के कोरे कपड़े न रखें।
2. घर में धर्म स्थान की जगह न बदलें।

उपाय :
1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. काला अंडरवियर पहनें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति सातवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से अधिक उम्र में या विवाह के बाद देर से संतान सुख प्राप्त होगा। पुत्र प्राप्ति के बाद पिछले कष्ट दूर हो जाएंगे। आप पूर्ण सुखी हो जाएंगे। पत्नी नौकरी करेगी उसकी कमाई से धन में वृद्धि होती रहेगी। आप स्वस्थ एवं पत्नी से सुखी रहेंगे। आप पिता से अलग होकर, साझेदारी का व्यवसाय चलाएंगे। संतान का भी सामान्य सुख ही मिलेगा। आप 40 वर्ष की उम्र तक ऐय्याशी करेंगे। ससुराल से मिली चीजों में बरकत होगी। आप धार्मिक कामों में हमेशा रुचि रखेंगे। आप ज्योतिष विद्या के जानकार और माहिर होंगे और ज्योतिष के द्वारा धन की प्राप्ति भी होगी। आपको दलाली या व्यापार के कामों से लाभ होगा। आपके धन से दूर के रिश्तेदार लोग सुख पायेंगे परंतु आपके जीवन में आराम नही मिलेगा। आपको लोहे, मशीनरी, काली चीजों का व्यापार, मकान बनाने की चीजें (लोहा, ईट, पत्थर सीमेंट, लकड़ी आदि) का व्यापार शुभ फल देगा। आप जीवन में अपनी जवानी में खूब ऐशो-आराम करेंगे। पिता और ससुर से लाभ और सुख मिलेगा।

यदि आपके घर के मंदिर में मूर्तियां होंगी (तस्वीरों का वहम नहीं), चांदी आदि धातु की मूर्तियों वाले सिक्के होंगे या धार्मिक ग्रंथ बंद पड़े होंगे, रत्तियां (जिससे पहले समय में सुनार सोना आदि तोलते थे) पड़ी होंगी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप भाई से दुःखी रहेंगे। घूमने-फिरने वाले साधू की संगति से भाग्य मंदा हो जाएगा। आपको आमदनी होने के बावजूद आप पर कर्ज का बोझ भी पड़ेगा। आपके जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आयेंगे। पत्नी के अतिरिक्त दूसरी औरत से हानि होगी। पिता का सुख कम मिलेगा। आप संगति के प्रभाव से चोर या डाकू भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घूमने-फिरने वाले पीले वस्त्र धारी साधू से दूर रहें।
2. घर में तुलसी, घंटी, ठाकुर न रखें।

उपाय :
1. सोना और रत्तियां पीले कपड़े में बांध कर रखें।

2. आपके ससुराल वाले आपको कुछ न कुछ देते रहेंगे तो इससे दोनों परिवारों का कल्याण होगा।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के दसवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आप लोभी, शक्की दस्तकारी के कामों में रुचि लेंगे। आप शक्ति संपन्न होंगे। आप कामुक होंगे। आप कामवासना के अधीन रहेंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आप बाग-बगीचों के मालिक होंगे। आप अपने जीवन में दुर्घटना के शिकार नहीं होंगे। आपको अच्छा धन प्राप्त होगा। बुढ़ापा आराम से बीतेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आपकी जवानी प्रेम संबंधों में उलझी रहेगी। आपकी चालाकी, शैतानी और होशियारी की अधिकता से अधिक लाभ, आंशिक क्षति भी हो सकती है। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। पत्नी के साथ रहते आपके साथ कभी भी कोई हादसा नहीं होगा।

यदि आपने शराब, बीयर आदि पीना और मांस खाना शुरु किया, मछली का शिकार किया, स्त्री पर अधिक विश्वास किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपको पत्नी से दब कर रहना होगा। पराई स्त्री से संबंध रहने से संतान को दुःख पहुंचेगा। संतान सुख के लिए जीवन में बाधा आ सकती है। विवाह के 13 वर्ष बाद पत्नी बीमार हो सकती है या पत्नी अस्वस्थ रहेगी जिसके कारण आपको दुःख भी झेलने पड़ सकते हैं। आपको पेशाब की बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. शराब-मछली का सेवन न करें।
2. आधिक मिजाज न बनें।

उपाय :
1. कपिला गाय का दान करें।
2. पत्नी शरीर पर दूध-दही मल कर स्नान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि तीसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप स्वस्थ, विद्वान, विवेकी और खर्चीले स्वभाव के होंगे। धन की कमी नहीं रहेगी। आपके पास बहुत धन आएगा। आप पराए लोगों की मदद करेंगे। आपको चोरी और धन नाश की तरफ से सतर्क रहना चाहिए। आप सबकी मदद करेंगे मगर वह व्यक्ति दूसरों का काम बिगाड़ेगा, और खुद आराम पाएगा। आपके जीवन में अड़चने भी पैदा हो सकती हैं। आप साहसी होंगे। भाई-बहन से सामान्य सुख के आसार हैं। आप दुःसाहस करने में भी बाज नही आएंगे। लोहा/मशीनरी से संबंधित कामों से धन लाभ होगा।

यदि आपने चोरी-ठगी की, घर का मुख्य दरवाजा पूर्व या दक्षिण दिशा में हुआ, दूसरे लोगों के काम बिगाड़े तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से शराब पीना, मांस खाना अच्छा फल नहीं देगा। नगद धन का अभाव रह सकता है। नर संतान को कष्ट की आशंका है। आपकी आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। छोटे भाई से दूरी या उसका सुख न होगा। भाई-बंधु आपकी नेकी को भूल जाएंगे। चोरी-ठगी करने पर भी धन की कमी रहेगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। मकान बनाने में बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें। मछली का शिकार न करें।
2. कीकर-बेरी का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :

1. तीन कुत्तों को भोजन का हिस्सा देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी बनावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शत्रुहंता होंगे। आप भाग्यवान और धनवान होंगे। आप बहादुर होंगे। आप किसी व्यक्ति को फांसी की सजा से बचाने में मदद्गार होंगे। आप स्वयं शक्तिशाली होंगे। आपके मान-सम्मान, धर्म-ईमान के लिए राहु का शुभ प्रभाव रहेगा। आप विदेश की यात्रा करेंगे। आपमें अहंकार की भावना रहेगी। ऐशो आराम की सभी चीजें प्राप्त होंगी। किसी प्रकार की मुसीबत का असर आप पर लंबे समय तक नहीं रहेगा। आपकी दिमागी हालत ऊंचे दर्जे की होगी।

यदि आपने चाचा से झगड़ा किया, बिना लाइसेंस की पिस्तौल-बंदूक रखी, भाई की हत्या की या भाई से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारणवश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से घर में किसी की आपके जन्म के कुछ दिन के बाद मृत्यु हो जाये ऐसी शंका है। भाई का अहित करने से आपकी औलाद पर बुरा असर पड़ेगा। आपकी आवारा और बदमाश लोगों से दोस्ती होगी। नीच स्तर की स्त्री का साथ आपको नीच बना सकता है। आप अचानक धन-संपत्ति को बर्बाद करेंगे या लुटा देंगे ऐसी शंका है। बड़े भाई या बहन से लड़ाई-झगड़ा करें तो खुद बर्बाद हो जाएंगे। आपके जीवन में अग्नि, रोगभय या धन नाश की आशंका है। आप नामी चोर भी, सजा का भय क्यों, ऐसी कहावत आप पर लागू हो सकती है। आपको गोली लगने का भय है। आपके चाचा की मौत के बाद आपका घर बर्बाद हो जायेगा। यदा-कदा आप अपने हितैषी का भी नाश करने पर तुल जाएंगे। यदि आप कभी बीमार हो जायें जो आपकी खबर लेने आयेंगे वह भी बीमार होकर जायेंगे। संतान से दुःखी होंगे या संतान को क्या कष्ट है उसका पता न चलेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चोरी न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप ऐश्वर्य संपन्न, सुखी वैवाहिक जीवन और जमीन-जायदाद के सुख से पूर्ण होंगे। आप सरकारी पक्ष की सेवा करेंगे। समयावधि में तबदीली की अपेक्षा तरक्की के अवसर अधिक आयेंगे। आप शुभ कार्यों में खर्च करेंगे। आपके जीवन के 24वें वर्ष में पुत्र प्राप्ति के योग बनेंगे। पुत्र जन्म के बाद घर में बहुत मात्रा में धनागम शुरू हो जाएगा। आपकी संतान भी धनवान होंगी। आपको भवन निर्माण एवं विदेश प्रवास से लाभ मिलेगा। आप आध्यात्मिक भावना के प्राणी होंगे। मन में त्याग की भावना रहेगी। निःसंतान व्यक्ति से मकान या भूमि न खरीदें। आपमें कामवासना अधिक रहती है। कई संतान का सुख प्राप्त होने की संभावना है। आपके जीवन में हमेशा ही भोग और सुख प्राप्त होंगे। आपका ससुराल पक्ष सुखी रहेगा और दौलतमंद होगा। आपके परिवार की तरक्की होगी। आप अय्याश होंगे, यह आपके लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने कुत्ते मारे या मरवाये, भाई-बंधुओं से झगड़ा किया समाज विरोधी कार्य किये, आवारा फिरना शुरु किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से पिता की जायदाद बर्बाद होगी। भाई-बंधुओं से और समाज में अपमानित हों, ऐसी आशंका है। कुत्तों को मारने से या कुत्ते से नफरत करने से संतान को कष्ट या संतान सुख से महरुम, निःसंतान या बच्चा गोद लेने की नौबत आ सकती है। संतान प्राप्ति में कुछ बिलंब हो सकता है। ठगी-धोखेबाजी से कमाया धन कफन का सबूत बनेगा और धन की कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. कुत्तों को चोट न मारें।
2. ठगी-धोखेबाजी से दूर रहें।

उपाय :
1. घर में हमेशा काला-सफेद कुत्ता पालें।

2. दोहता-जमाई-साले या जीजा की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि चतुर्थ भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि अष्टम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि सप्तम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए आप अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले जातकों का स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय आप अपने व्यवसाय में अच्छा विस्तार करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करें, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा व साझेदारी में लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। 14 मई के बाद एकादश स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी। आप बचत कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

आपको मित्र या पत्नी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। माता के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। अतः उस समय आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

14 मई के बाद आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। राहु के गोचर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्षारम्भ में गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। उसका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है, परन्तु मई के बाद आपके बच्चे के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

उस समय उनको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। उस समय आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा, जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

14 मई के बाद समय बहुत अनुकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में यदि प्रतियोतगता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपके छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा। 14 मई से गुरुग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे आपको परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति का अनुभव होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- शनिवार को लोहे का तवा दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभफल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।साथ ही इस मास आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। इस समय आपके लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति अत्यंत ही सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे एवं कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी काफी समय से आप प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इस समय सांसारिक कार्यो में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ आप समय समय पर अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे। इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे ।साथ ही समाज में सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी कार्य करने में तत्पर रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उन्हें इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने संकल्पों तथा मानसिक विचारों को मूर्त रूप देने में भी आप सफल सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी अर्जित करेंगे। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फल दायक रहेगा।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए ।साथ ही आपके व्यापार या नौकरी आदि के क्षेत्र में शिथिलता रहेगी तथा कई अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय आपका कोई कार्य परिवर्तन हो सकता है या छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी दुर्घटना आदि से रूधिर विकार भी हो सकता है अतः इस मास में आप सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि

रहेगी तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके प्रभुत्व में इस मास में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ अर्जित करेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह समय आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा सुख प्रदान करने वाला होगा जिससे आप मानसिक रूप से पूर्ण शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे।अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं।साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अल्प मात्रा में घटित होंगे। इस समय स्त्री तथा स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे या पत्नी को किसी प्रकार के कष्ट होने की संभावना रहेगी। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत

रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी कमजोर रहेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा बैचेन रहेंगे। शारीरिक अस्वस्थता के साथ साथ आपके मन में लोलुपता के भाव की भी वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा। ऐसे समय में मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अलावा समाज में अन्य लोगों के साथ वाद विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता का भाव रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभफल भी घटित होंगे।अतः आप महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय परिश्रम पूर्वक धनार्जन एवं लाभ प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा फलतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में भी न्यूनता आएगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में भी कई प्रकार से व्यवधान आएंगे तथा उनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी दूर समीप की भी कोई यात्रा हो सकती है। आपके सांसारिक कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन अधिक मात्रा में व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः इस मास को सावधानी तथा संयम पूर्वक व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतःआप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रमपूर्वक सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी नवीन द्रव्य या वस्त्र की भी प्राप्ति करने में भी आप सफल रहेंगे। इस प्रकार मध्यम रूप से आप अपने समय को इस मास में व्यतीत करेंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वग! आपसे पूर्ण प्रसतथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे।साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान मिलेगा एवं उनसे आप वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे तथा आपसे वे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे इच्छित सहयोग की आपको प्राप्ति होगी। साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। सन्तति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे आप वांछित सुख भी प्राप्त करेंगे। साथ ही बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्ति आपके पूर्व संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे जिससे मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा धर्मानुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल दायक रहेगा परन्तु न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इस समय आप स्त्रीवर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर पूर्ण होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा तथा मन में भी शान्ति रहेगी। अध्ययन के प्रति भी आप की रूचि

उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस मास में आप को मनोवांछित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पितरोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ अधिक तथा शुभ अल्प मात्रा में रहेगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति प्राप्त होगी जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगे।साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी जिससे मन में अशान्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं होंगे। इस मास में धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि होती रहेगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुओं से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसी में असफलता मिलेगी। अतः संयम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से वांछित सहयोग अर्जित करेंगें तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि को भी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगेऔर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगा। आपके माता पिता कास्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों कीउन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकीशिक्षा-दिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता हैपरन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जूनके बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते है। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैपरन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकि शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरणमनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाऐंगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्ठान्न के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे।स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही

सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे।साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न

करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्ति समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे।अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते है जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते है। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना

रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे।साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त

होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा।साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान केगुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र मेंगुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियोंको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते है। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चो की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरुके कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों मेंरूचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते है। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यदि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे ।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियां को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं ।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते है। नौकरी करने वालो के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपक सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरो या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने माता पिता की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। साल की शुरुआत में आपके कार्यों में देरी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्य को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। शनि का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा। आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी और इस ओर ध्यान देना होगा। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर से यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आने वाला है। आपको पहले महीने में प्रतीत नहीं होगा क्योंकि इस दौरान राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं है। आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपको इस दौरान यही सलाह दी जाती है कि इस समय अपनी वित्तीय योजनाओं को निर्धारित कर आगामी समय के लिए खुद को तैयार रखें। अप्रैल के बाद समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल हो रहा है। आप बड़े काम करने में सफल होंगे।

23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः पहले से ही कुछ अतिरिक्त धन का संचय करें। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचम भाव का शनि संतान सुख में कमी कर सकता है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

आपको बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु के गोचर के बाद आपके घरेलू वातावरण में अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शान्ति का वातावारण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। पंचमस्थ शनि आपके बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे उसकी शिक्षा व उन्नति में रूकावटें आ सकती हैं। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

मई के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में दवा से अधिक दुआ आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी।

23 सितम्बर के बाद द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत अच्छा है।

शनि एवं गुरु के गोचर के बाद समय काफी उत्तम हो जाएगा। आप सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने करियर में आगे रहेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। बेरोजगार लोगों को इच्छित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

मई के बाद आप ज्यादातर यात्रा पर ही रहेंगे दूर की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य करेंगे। 1 मई से आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख-शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्र का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को कार्यस्थल पर ही मान सम्मान मिलेगा।

द्वादशस्थ राहु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे परन्तु आपके पराक्रम के डर से कुछ कर नहीं पाएंगे। 8 अगस्त के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

यदि वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक वृद्धि होगी जिससे आपके पुराने चले आ रहे सारे कर्जे से मुक्ति मिल सकती है। द्वादशस्थ राहु के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं।

8 अगस्त के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। अचानक आय के सोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे आने शुरु हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलो में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई बहनों

के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल संतान के लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 15 अक्टूबर से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो गलत संगत में पड़ सकते हैं, जो कि उनकी उन्नति में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है परन्तु 18 फरवरी के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे परन्तु 15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं। इसलिए उस समय के अंतराल में सावधानी बरतना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 18 फरवरी के बाद समय श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है।

8 अगस्त से समय बहुत अच्छा हो रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। जो जातक रोजगार की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय में आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगा। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

15 अक्टूबर को द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का मन्त्र पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं छठे भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुलग्न स्थान में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्तर के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप सपनों को पूरा करने के लिए अथकपरिश्रम करेंगे और सफल होंगे। ग्रहगोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकाल कर अपने अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

12 अगस्त के बाद अचानक आपके कार्यों में उन्नति होगी। आपके कार्य व्यवसाय में पत्नी का पूरा सहयोग मिलेगा। अपने मित्र के साथ मिलकर कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उस काम में आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्धआर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। आय के स्रोत खुलेंगे।रुके हुए या फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी।निवेश करने के लिए भी यह समय एकदम उपयुक्त होगा।द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद अचानक आर्थिक स्थितिमें वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके जीवनसाथी का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपने पारिवारिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव आपको अच्छा नहीं लगेगा। आप अपनी सहनशक्ति बढ़ाएं और बुद्धिविवेक के द्वारा पारिवारिक स्थिति अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

आप सामाजिक गतिबिधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों कीउन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

12 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबहटहलने जाना।

मई के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। आप आने अन्दर धैर्य बनाए रखें व कार्य के प्रति एकाग्रता बनाए रखें एवं स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकीशिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी के तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहें क्योंकि अभी की मेहनत आने वाले समय में काम आएगी और उस समय आप अपने लक्ष्यको प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण लम्बी यात्रा होगी। धार्मिक यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

मई के बाद यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। क्योकि लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि पभाव से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में चोरी होने के प्रबल संकेत बन रहे हैं। 12 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकीरुचि बढ़ेगी जिसके चलते आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आर्थिक उन्नति के लिए लक्ष्मी जी पूजा करें या संतोषी का व्रत व उपासना आपके लिए लाभप्रद रहेगी।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें।

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं एकादश भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में रोजी-रोटी के नये आयाम तलाशने का आप प्रयास करेंगे जिसमें आपको सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को जल्दवबाजी में कोई निर्णय नहीं लेने चाहिए। किसी प्रकार का परिवर्तन या बदलाव करने से पहले उस पर विषेश ध्यान दें। नहीं तो आने वाले समय के लिए यह निर्णय अच्छा नहीं होगा।

18 मार्च से सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रही है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धि किसी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती है। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट भी रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों से सलाह अवश्य लें।

18 मार्च के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है। फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। उसमें आप धन व्यय करेंगे। साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन क्रय-विक्रय व भूमि क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की युति अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 18 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो इस वर्ष विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चे विवेक व बुद्धि से अपनी उन्नति के मार्ग बनाएंगे। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को आलसी बना सकती है। उनका रहन सहन व दिनचर्या खराब कर सकती है तथा उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। अतः आपको उनकी दिनचर्या पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी और उसके साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे। परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है, क्योंकि कोई स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। 18 मार्च के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक ही आपको सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष आनन्ददायक रहेगा। इच्छित सभी यात्राओं का भरपूर लाभ उठाएंगे। 18 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

व्यवसाय से संबंधित आपकी अनेक यात्राएं होंगी और सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

अधिक व्यस्तता के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 18 मार्च से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपका दैनिक पूजा पाठ नियमित रूप से होगा। धार्मिक कृत्य व दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यापार में आपको नए भागीदार भी मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

13 जुलाई से अष्टम भाव में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। लंबे समय से रुका हुआ धन वापस मिलने का योग है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादस्थ राहु के कारण आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे ऋर्ण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

13 जुलाई के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकूश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। माता-पिता की बीमारी में में भी आपका धन खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष के पूर्वार्द्ध में अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति

बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाये बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बन्धित है धोखा दे सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवन साथी का सहयोग तो मिलेगा परन्तु वैचारिक मतभेद बहुत अधिक रहेगा जिसके कारण आप बहुत असहज महसूस कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भवनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रथम भाग बहुत ही शुभ है। बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। दूसरी संतान यदि विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

13 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे आप रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमे भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे। जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा मे सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 28 मार्च के बाद नौकरी में अवसर मिलेंगे। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये यह समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं। तो वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए श्रेष्ठ हैं। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो आपको नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 28 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है, इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवर के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको शनि की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिव की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ नमः शिवाय।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि अष्टम भाव में और सिंह राशि का राहु नवम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 6 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कामों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं। लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव करते रहेंगे। कुछ लोगों को अपने नौकरों से नुकसान भी हो सकता है और कुछ लोगों को कम, लेकिन नुकसान का होना तय है। इसलिए आपको अपने नौकरो पर ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। मित्र या साझेदार विश्वासघात कर सकते हैं या फालतू की रणनीतियों के कारण भी हानि होने की संभावना है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धनागम के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। परन्तु शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको हमेशा सावधानी पूर्वक लाभकारी अवसरों का फायदा उठान चाहिए।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्कृष्ट रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घर परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बना रहेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप बहुत से ऐसे कार्यों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए बहुत ही लाभप्रद रहने वाला है। आपके माता के लिए समय काफी शुभ है।

6 अप्रैल के बाद अचानक पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी उम्दा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 6 अप्रैल से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उनके लिए यह समय अति श्रेष्ठ है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है। अतः पहले से ही सावधानी बरतें। शनि के कारण घटना-दुर्घटना का योग लगातार बना हुआ है अतः यात्रा के दौरान और वाहन चलाते समय बहुत सावधान रहें।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी जिससे आपकी समस्त शारीरिक व्याधियां दूर होंगी। आप अपने दैनिक कार्य में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

6 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उसके लिए यह समय अनुकूल है।

रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा होंगी। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि

छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभ प्रद रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- शनि चालीसा का पाठ करें एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन तांबे के लोटे में अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर सूर्य को जल दें।
- रुद्राक्ष की माला धारण करें एवं अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय से लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आप लगातार प्रयास करेंगे, जिससे आपको सफलता तो मिलेगी परन्तु अधिक परिश्रम करने के पश्चात् मिलेगी।

15 अप्रैल के बाद आप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिल कर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी वाले व्यक्ति को मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 27 अगस्त के बाद फिर से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु 15 अप्रैल के बाद समय आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः उस समय आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा।

जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य या माता की शारीरिक बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। अगस्त के बाद समय काफी अनुकूल है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति मे सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियो को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई व बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी अच्छा है।

15 अप्रैल के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं, जिससे आपके पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। उस समय के अंतराल में परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए और अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी चाहिए।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही अनुकूल है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आप अपने बच्चों से जितना उम्मीद रखते हैं वे उससे भी अच्छा करने वाले हैं।

15 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

15 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। नहीं तो आपका स्वास्थ्य और प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आपकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती है। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको अगस्त तक इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने

वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं। उस समय मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ मे आपका मन नहीं लगेगा। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमान जी चोला चढ़ाएं।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के कारण आपके कार्य व्यवसाय में कुछ शत्रु व्यवधान डाल सकते हैं। अतः बिना किसी पर विश्वास किए अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे तरीके से चलाएं। अष्टम स्थान के राहु अचानक परेशानी व कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। जिसका शीघ्र कोई समाधान भी नहीं निकल पाएगा। आप अधिक परेशान हो सकते हैं। परन्तु अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके व्यापार में कुछ उन्नति होगी। साझेदारी में काम करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा।

आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न होगा यही आपकी व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे खुश रहेंगे। सितम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नहीं तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। परिवार में रोग बीमारी के चलते भी आपके व्यय अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे। सितम्बर के बाद बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से बचें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकती है। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नहीं होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। पिता के साथ कुछ कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें।

26 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। जिससे घर में खुशी का माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु अक्टूबर के बाद अचानक आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उनको किसी प्रभार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

संतान

छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बहुत ही उत्तम रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगा। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। 26 अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य धीरे धीरे अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य बने रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। षष्ठस्थ गुरु पर शनि

ग्रह के दृष्टि प्रभाव के चलते प्रतियोगिता परीक्षार्थी अवश्य सफलता होंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उन्हें अप्रैल से पहले नौकरी मिल जाएगी। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

अप्रैल के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं। उसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्राएं आपकी अचानक होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्यता के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। 26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन चीटियों को दाना डालें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं नवम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं अष्टम में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए बहुत ही उत्तम रहेगा। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। इस अवधी मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। 11 मई के बाद समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। यदि किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो आपके लिए अच्छा नहीं है।

कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा भी आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। इस समय के अंतराल में बड़े ही विवेक से काम लेना होगा नहीं तो आपको हानि हो सकती है। हालांकि अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उस में सफलता मिलेगा। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस स्थान परिवर्तन से आप असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप बांछित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 11 मई के बाद लेन-देन के मामले में सावधान रहें। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के रोग-व्याधि में भी आपका पैसा खर्च होगा।

यदि कोई बडा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं। जिससे आप कुछ परेशान भी होंगे। अतः इस समय के अंतराल में अपना आत्म शक्ति बनाए रखें। अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु एवं राहु के प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। पिजा के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अक्टूबर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं गुरु की युति अचानक संतान की उन्नति रोक देगी। उनकी पढ़ाई लिखाई भी प्रभावित हो सकती है, जिससे आप मानसिक अशान्त रह सकते हैं। मई के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन पर विशेष ध्यान देना होगा।

अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के साथ साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

11 मई से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आप स्वस्थ व तंदरुस्त रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप अपने को हल्के में लेंगे, जिससे आपके प्रतिद्वंदी आप से आगे निकल जाएंगे। मई के बाद विद्यार्थियों लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको सफलता मिलने की उम्मीद कम है।

अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। नवम स्थान के शनि लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। छोटी मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। आपकी धार्मिक यात्राएं प्रभावित होंगी। मई के बाद सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है।

अक्टूबर के बाद नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे। द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा का भी योग बना रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष पूजा पाठ के लिए सामान्य रहेगा। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। राहु के साथ गुरु की युति आपकी आस्था एवं विश्वास में भी किंचित कमी कर सकती है। 11 मई के बाद तन्त्र मन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना के प्रति आप आकर्षित होंगे। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और वीरवार का व्रत करें।
- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। दशमस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी में पदोन्नति व कार्यों में सफलता का योग बन रहा है। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। लेकिन 3 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। परन्तु 2 जून के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर फिर से अग्रसर होंगे।

लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगी, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सफल बनाएंगे, जिससे आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होगी। 4 नवम्बर के बाद भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें क्योकि 3 मार्च के बाद आपका अनावश्यक खर्च बढ़ने वाला है। 2 जून तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक हानि होने के प्रबल योग बन रहे हैं। लेन देन के मामले में सावधान रहें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए फिर से शुभता का संकेत ले कर आ रहा हे। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना बन रही है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगो की सलाह अवश्य लें। 4 नवम्बर के बाद अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं है। अतः परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपके माता पिता के लिए भी यह समय शुभ नहीं है। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ भी संबंध खराब हो सकते हैं। 3 मार्च के बाद आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। मित्रता व दोस्ती में भी दरार आ सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा तथा अपने धैर्यशक्ति को बढ़ाना होगा।

2 जून से समय कुछ अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं समाजिक दोनों पक्षों के लिए समय शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। 4 नवम्बर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा तथा घरेलू वातावरण भी अनुकूल होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए उत्तम रहेगा। वे अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। नवविवाहित दम्पतियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में उनके रहन सहन व स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

2 जून के बाद आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे तथा आपकी उम्मीदों से बढ़कर अच्छे कार्य करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। 3 मार्च के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान रहेंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

2 जून से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे भी वृद्धि होगी, जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 2 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 4 अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। परन्तु 3 मार्च के बाद अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में भी आपका मन कम ही लगेगा। 2 जून से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला, बेसन के लड्डू व पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रभाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं। ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। पुरे वर्ष राहु वृष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह साल कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा आप सारे प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़कर आगे निकल जाएंगे। यदि आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए और भी शुभ हो रहा है। रातनीति से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। कानून से जुड़े लोगों, वकील, पुलिस आदि को अच्छा लाभ मिलेगा। आपके उच्च अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। भूमि, वाहन से संबंधित कार्य करने वाले लोगों को वांछित सफलता मिलेगी। 3 दिसम्बर के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको उम्मीद से ज्यादा सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

धन सम्पत्ति के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा। आपके आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है फिर भी यदि कोइ बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक उन्नति के लिए और भी श्रेष्ठ हो रहा है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को विशेष लाभ मिलेगा। आप का व्यापार खूब चमकेगा। अकस्मात् धन मिलने का योग बन रहा है। संचित धन में वृद्धि होगी तथा पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 3 दिसम्बर के बाद शेयर बाजार, जुआ, सट्टा व लॉटरी इत्यादि से धन प्राप्ति का प्रबल योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर होंगे। आपके माता पिता के

लिए समय बहुत ही शुभ है। संतान का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में मान सम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप अपनी बुद्धि मत्ता एवं विद्वता से किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे, जिससे आप अत्यधिक संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 6 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 जून के बाद कुछ परेशानियां आ सकती हैं। लेकिन आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। 6 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान एवं दिनचर्या सुव्यवस्थित करें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध भी स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने के कारण आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं, परन्तु 3 दिसम्बर को गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता तथा करियर में अच्छी उन्नति मिलेगी। विद्यार्थियों को इच्छित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। बेरोजगारों को वांछित नौकरी मिलने के प्रबल योग बने हुए हैं।

यदि आप डॉक्टर, इंजीनियर, वकील व ज्योतिषी हैं तो आपका चौमुखी विकास होगा तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। वर्षान्त विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। अचानक उन्नति रुक सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। छोटी मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 6 अप्रैल के बाद लम्बी यात्राओं का योग बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अनुकूल रहेगा।

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि अचानक विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी व व्यवसाय से संबंधित भी यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी। यह यात्रा सुखद व आनन्ददायक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। 6 अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग के प्रति रुझान ज्यादा होगा। माता पिता व बुजुर्गों की सेवा अधिक करेंगे। गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों की साधना भी कर सकते हैं। उत्तरार्द्ध में आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने घर मे देशी घी का दीपक जलाएं तथा लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन चींटियों, मछलियों एवं चिड़ियों को दाना डालें।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष बहुत ही उत्तम रहने वाला है। कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी तथा अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। आमदनी के नये स्रोत बढ़ेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपको बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें वांछित सफलता मिलेगी। बहुत सारे नये व्यक्ति आपसे जुड़ेंगे जो आने वाले समय में सफलता की कुंजी बन सकते हैं। व्यक्तिगत संबंधों में सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।

धन संपत्ति

गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए शुभ है। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा आय के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाएं दूर होंगी। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

मई से जुलाई के अंतराल में आपको अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा। संतान के स्वास्थ्य पर अधिक व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण के लिए यह साल सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा। पिता जी के लिए यह साल अच्छा नही है परन्तु आपके भाईयो का उन्नति होगा और वे आपको पूर्ण सहयोग करेंगे। मित्रता व दोस्ती के लिए यह समय काफि शुभ है।

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि समाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। इस वर्ष आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी

ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

संतान पक्ष के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का राहु अचानक बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। संतान संबंधित चिंताएं बढेगी। आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

गर्भवती स्त्रियों को बड़े ध्यान से रहना होगा नहीं तो गर्भपात हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। वे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे वृद्धि होगी। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा।

राहु के कारण मौसम संबंधित बीमारियां परेशान कर सकती हैं। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। रहन सहन व दिनचर्या में सुधार करें तथा सुबह शाम व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं अधिक होंगी। 6 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा होने की संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु का प्रभाव मानसिक भ्रम उत्पन्न करता है, जिससे आपके मन में धर्म के प्रति विश्वास कम होगा तथा तन्त्र मन्त्र के प्रति विश्वास बढ़ेगा। सितम्बर के बाद आपका गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षण बढेगा तथा आप आध्यात्मिक विद्या अर्जित करने की कोशिश करेंगे और योग, साधना करने में आपका समय अधिक व्यतीत होगा।

- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं एकादश भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यावसायिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यवसाय में सफलता के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। आप नया उद्यम शुरु करेंगे। आपको मित्रों और परिजनों से खूब मदद मिलेगी। व्यापार द्वारा अच्छा खासा लाभ होना चाहिए। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही उत्तम रहने वाला है। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। पिछले साल की अपेक्षा इस वर्ष ज्यादा मुनाफा होगा। जो लोग कारोबार या रियल एस्टेट से जुड़े हैं उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होने वाला है।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 10 जून को गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए शुभ है। यदि आप थोड़ा प्रयास भी निष्ठा के साथ करते हैं तो आपको आर्थिक परेशानी नहीं होगी। आपकी आमदनी में बढ़ोत्तरी के प्रबल योग बने हुए हैं साथ ही आप धन की बचत भी कर पाएंगे।

व्यापार, व्यवसाय के माध्यम से आपका धनार्जन होगा। आपके व्यावसायिक जीवन में स्थिरता आएगी। आपका यह सुदृढ़ीकरण आपको अपने व्यापार में नये निवेश के लिए प्रोत्साहित करेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में भूमि, भवन व वाहन खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान में राहु का गोचर प्रोपर्टी व वाहन के लिए शुभ नहीं होता।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति के लिए इस वर्ष का पूर्वार्द्ध सुखद रहने वाला है। आपका गृहस्थ जीवन खुशहाली के साथ व्यतीत होगा। कुछ सामान्य से उतार चढ़ाव हो सकते हैं जो कि एक बेहतर रिश्ते के लिए जरूरी भी है। भाई-बहन और दोस्तों की संगत में आप खुद को प्रफुल्लित महसूस करेंगे तथा उन लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे और वे लोग बिना किसी शर्त आपकी मदद करेंगे। किसी निकट संबंधी के बारे में कुछ अच्छी खबर मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू मामलों के लिए अच्छा नहीं है। आपके गृहस्थ जीवन में कुछ उतार-चढ़ाव आ सकता है। लेकिन समय रहते सबकुछ ठीक हो जाएगा। निजी और पेशेवर

जिन्दगी को एक साथ न जोड़ें अन्यथा विवादों का सामना करना पड़ सकता है। अपने स्तर पर इसके समाधान का पूरा प्रयास करें। माता पिता के साथ कुछ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

संतान

इस वर्ष आप संतान के मामले में अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हो सकती हैं। परंतु 10 जून के बाद विवाह की संभावनाएं व योजनाएं बनेंगी जो फलीभूत भी हो जाएंगी।

द्वितीय संतान के लिए समय अपेक्षाकृत बेहतर होगा। उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उसके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भपात के योग बनेंगे इसलिए सावधानी बरतें।

स्वास्थ्य

आपके स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध थोड़ा कमजोर रहने वाला है। शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे कम होती प्रतीत होगी। आपको पेट की तकलीफ परेशान कर सकती है। खासकर 10 जून तक शारीरिक दिक्कतों के साथ-साथ मानसिक परेशानी भी हो सकती है। जांघ, पाचन, चेहरा और गैस से सम्बन्धित समस्याएं हो सकती हैं। ऐसी बीमारियों से बचने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करें और खान पान का विशेष ध्यान रखें। पुरानी बीमारी आपको फिर से परेशान कर सकती है। इसे नजर अंदाज करने की कोशिश न करें, डॉक्टर की सलाह लें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके स्वास्थ्य, लाभ, व्यक्तिगत प्रभाव, आकर्षण तथा कार्य क्षमताओं के विकास की पूर्ण संभावनाएं हैं। वजन भी बढ़ सकता है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

नौकरी करने वाले जातकों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यापारियों की उन्नति का प्रबल योग बना हुआ है। किसी विशेष पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए यह समय शुभ है। घर से दूर जाकर पढ़ाई करने का योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में आपकी यात्राएं होंगी। विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। यात्रा के दौरान आपको छोटी मोटी परेशानियों का भी

सामना करना पड़ सकता है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से ज्यादा दूर हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष राहु के पंचम भाव में गोचर के चलते आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि अधिक नहीं रहेगी। घर में साफ-सफाई, पूजा पाठ, पवित्र माहौल व माता की सेवा करने से राहु के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों से तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में दान पुण्य व तीर्थ यात्राएं अधिक करेंगे। योग, ध्यान, पूजा पाठ, प्राणायाम आदि की ओर रुझान होगा। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

- बृहस्पतिवार के दिन पीली वस्तुओं जैसे हल्दी, केला, बेसन के लड्डू, चने की दाल, पीला वस्त्र आदि का उपयोग अधिक से अधिक करना चाहिए जो आपके लिए शुभ रहेगा।
- दुर्गाबीसा यंत्र गले अथवा बाजू में धारण करने से दुर्गति से मुक्ति मिल जाएगी।
- गुरुवार के दिन पीली वस्तुओं का दान करें।
- बुधवार को राहु मंत्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में कुछ अच्छा करेंगे, जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न का गुरु नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। इस समय आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्यों में कुछ व्यवधान व परेशानियां आ सकती हैं। परन्तु आप अपने विवेक से उन सभी परेशानियों से बाहर निकल आएंगे तथा आपके शत्रु भी परास्त होंगे। सितम्बर के बाद आप किसी नए कार्य में धन निवेश करें तो अच्छा लाभ मिलेगा।

वर्षान्त में कोई बड़ा निवेश करने से बचें। पैसों के लेन-देन में भी सतर्कता बरतें क्योंकि किसी भरोसेमंद व्यक्ति से धोखा मिल सकता है। शेयर बाजार से जुड़े जातकों के लिए समय अच्छा नहीं है। भावनाओं में बहकर किसी भी प्रकार का निवेश करने से बचें। वर्ष के मध्य से आपको अच्छी प्रगति मिलने की संभावना है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। अगर आपका स्थानान्तरण होता है, तो उसे स्वीकार कर लें क्योंकि आगे इससे आपको बहुत लाभ मिलने की संभावना है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान का शनि आपके भाईयों से लाभ प्राप्त करा सकता है। आर्थिक प्रगति के लिए आप कोई नई योजना सोच सकते हैं। पुराना कर्ज अचानक वापस मिलने की भी संभावना है। विदेश या दूर स्थल से धन लाभ होने की भी संभावना है, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। परिवार में किसी सदस्य की सेहत खराब हो सकती है, जिसके इलाज में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का परामर्श अवश्य लें। इस वर्ष अचानक कोई बड़ा निर्णय न लें। योजनाबद्ध तरीके से ही कोई

कार्य संपन्न करें।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में भावनात्मक लगाव की कमी बनी रहेगी, जिससे परिवार में वैमनस्य व वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपकी माताजी के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होती रहेगी, परन्तु आपके भाईयों के लिए समय शुभ है। उनकी उन्नति होगी। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे।

जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। 19 सितम्बर के बाद तृतीयस्थ राहु सामाजिक उत्थान के लिए श्रेष्ठ है। अतः आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके बच्चों की बौद्धिक शक्ति काफी अच्छी रहेगी। करियर का चुनाव करने के लिए वे विशेषज्ञों की सलाह लेंगे एवं इस दिशा में फैसला लेने के लिए सक्रिय रहेंगे।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। उसके बाद पुनः अनुकूल हो जाएगा। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय और ज्यादा अनुकूल है। वे कुछ ऐसे कार्य करेंगे जिसके कारण आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

30 जुलाई के बाद स्वास्थ्य के मामले में आपको थोड़ा सा संभलकर चलने की जरुरत है। कार्यों की अधिकता की वजह से आप शारीरिक तौर पर कमजोरी व थकान का अनुभव करेंगे। मौसम के बदलाव से पैदा होने वाली बीमारियों के प्रति सतर्क रहें। मोटापे से पीड़ित लोगों को मांसपेशियों में दर्द की शिकायत रह सकती है। छोटी-छोटी बीमारियों को नजरअंदाज करने की भूल न करें। जो लोग लंबे समय से बीमार हैं, उन्हें अपनी सेहत का खास

खयाल रखना होगा। योग एवं ध्यान पर विशेष जोर दें। सितम्बर के बाद समय पुनः अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

सितम्बर के बाद आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में मनोवांछित सफलता प्राप्त करेंगे परन्तु सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील बने रहें। निश्चित तौर पर सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने कार्यक्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त करेंगे एवं अपनी संस्था में सम्मान प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

चतुर्थ स्थान का राहु प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण करा सकता है, जिससे आपका मन विचलित रह सकता है। लेकिन धैर्य बनाए रखें क्योंकि कुछ दिन बाद उसी स्थान पर आपको आनन्द की अनुभूति होने लगेगी एवं नया स्थान आपके लिए सुखदायी रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

30 जुलाई के बाद आपके कार्य से सम्बन्धित यात्रा हो सकती है। जो व्यक्ति विदेश में रहकर कार्य करने की योजना बना रहे हैं इस अवधि में उनकी यह योजना कार्यान्वित हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। आप कोई बड़ा धार्मिक कार्य या धार्मिक यात्रा करेंगे। धर्मस्थल में जाकर दान-पुण्य एवं गुरुजनों एवं वृद्धो के प्रति आप अपनी भावनाओं को आदर सहित प्रदर्शित करेंगे जिससे गुरुजनों एवं वृद्ध लोगों का आपको आशीर्वाद प्राप्त होगा। पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि बढ़ेगी।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डाल कर खिलाएं।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले के धारण करें।
- प्रतिदिन सूर्य का जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदि आप कोई कार्य मेहनत के साथ शुरु करेंगे तो उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। सकारात्मक दृष्टिकोण से यह वर्ष आपके लिए कारगर सिद्ध होगा। आप कोई नई तकनीक या विधा सीखने की कोशिश कर सकते हैं, जिससे आपके कार्यों में विस्तार हो। द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके व्यापार में कुछ परेशानियां आएंगी लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्व ारा सभी परेशानियों का हल निकाल लेंगे। 16 फरवरी के बाद नौकरी करने वालों के लिए समय शुभ हो रहा है। ऑफिस में बॉस और सहकर्मियों का पूरा साथ मिलेगा तथा सभी लोग आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे।

आपको व्यापार में लाभ मिलेगा लेकिन बहुत से कामों को एक साथ करने से बचें। अपने व्यवसाय में आप सम्मान और प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। आपका आत्मविश्वास आपको लगातार विजय दिलाएगा। व्यवसाय से सम्बन्धित लंबी दूरी की यात्रा आपके लिए लाभदायक रहेगी। आप कुछ नया करेंगे तथा अपनी आमदनी में बढ़ोत्तरी करेंगे। इस वर्ष आपको व्यापार में पैसों के लेन-देन करते समय सतर्क रहना होगा क्योंकि द्वादश स्थान का शनि नुकसान या हानि करा सकता है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक रूप से आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। धन संचय करने और कमाने में आप सक्षम रहेंगे। 16 फरवरी के बाद धन की चिंता से मुक्ति मिलेगी तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई या मित्र से लाभ प्राप्त होगा। परिजनों व मांगलिक कार्यों में आपका अधिक खर्च होगा तथा आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर भी खूब खर्च करेंगे।

निवेश व लेन देन के मामले में आपको सावधानी बरतने की जरूरत है क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण धोखा-धड़ी होने की संभावना बन रही है। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर भी नियंत्रण रखना होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। परिजनों के साथ आप आनन्दित रहेंगे। 16 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

पत्नी के साथ सम्बन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सभी कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहेगा। वर्ष का हर एक दिन आप प्रफुल्लित महसूस करेंगे तथा किसी भी घरेलू समस्या का समाधान सुगमता से करने में सफल रहेंगे। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उत्तम समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह प्रभाव के कारण मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी तथा आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। यदि किसी कार्य में विलम्ब भी हो तो उसे ईश्वर के शुभ संकेत के रूप में स्वीकार करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

16 फरवरी के बाद कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता हैं जननांगों और मस्तिष्क में कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। यदि स्वास्थ्य की उचित देख भाल नहीं करेंगे तो सरदर्द, बदहजमी और आखों में दर्द की संभावना बन सकती है। द्वादश स्थान का शनि आपको कोई बड ा रोग दे सकता है। अतः अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें तथा अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आप पढ़ाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है तथा 16 फररवरी के बाद आपको वांछित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की पूर्ण संभावना है। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। कार्य में विस्तार हेतु या विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं।

तृतीयस्थ राहु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी हो सकती हैं। इस वर्ष आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण आप निःस्वार्थ भाव से पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे। 16 फरवरी के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वृद्धाश्रम एवं मंदिर के निमार्ण हेतु दान भी करेंगे।

- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन शाम के समय पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- पांच मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(25/11/2007 - 25/11/2027)

शुक्र की महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 25/11/2007 को आरंभ और 25/11/2027 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है और अच्छे स्वाद, संगीत, नाटक, ऐंद्रिय सुखों का द्योतक है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में नीच का तथा मीन में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर उसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् दशम् भाव सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम और यश, सफलता और प्रतिष्ठा, ख्याति, लक्ष्य अधिकार, कर्त्तव्य, पदोन्नति, आधुनिकता, उच्च पद तथा राजकी सम्मान एवं जाँघों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र दशम् भाव में स्थित है जहां से यह आपकी जन्मकुण्डली के चतुर्थ भाव, जो परिवार का भाव और सुख स्थान है, को, एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र तक देखता है। इसके फलस्वरूप आपकी इस दशा काल में कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप सभी तरह का पारिवारिक आनन्द उठाएँगे।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र जीवनचर्या तथा व्यवसाय के दशम भाव में स्थित है, जो आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने के अनेक अवसर प्रदान करेगा। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी स्थिति के कारण सम्मान प्राप्त करेंगे तथा शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको नया घर तथा वाहन प्राप्त होने की संभावना है।

व्यवसाय :

आप जो कोई भी व्यवसाय अपनाएंगे उसमें सफल होंगे। आपको आदर और प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सुखी और तेज होंगे और आपको व्यवसाय के सिलसिले में यात्रा से लाभ होगा। आपके भाई-बहन आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

अपने व्यवसाय तथा नौकरी के प्रति समर्पित होने के कारण आप अपने जीवन साथी का अनजाने में तिरस्कार करेंगे जिससे आपके परिवार में दरार पैदा हो सकती है और घरेलू जीवन बरवाद हो सकता है।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(25/11/2023 - 25/09/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/11/2007 को प्रारंभ हुई थी और वद 25/11/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 25/11/2023 जो आपके लिए 25/09/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और ज्ञानवान बनेंगे। छात्रवृत्ति प्राप्त हो सकती है। धन का संचय होगा, विरासत में भी धन मिल सकता है। योग्यता और मृदु स्वभाव के लिए प्रशंसा मिलेगी।

आप दीर्घायु होंगे मगर स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है। स्वस्थ रहने के लिए अधिक प्रयास करना श्रेयस्कर रहेगा।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(25/09/2026 - 25/11/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/11/2007 को प्रारंभ हुई थी और 25/11/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 25/09/2026 को प्रारंभ होकर 25/11/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न यह किसी राशि का स्वामी होता है।

द्वादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 6ठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बेचैन रहेगे, बिना उद्देश्य के विभिन्न स्थानों पर भटकेंगे। विदेश भी जा सकते हैं। निम्न श्रेणी के लोगों से मित्रता हो सकती है जो हानिकारक साबित हो सकती है। व्यर्थ की यात्राओं के कारण पैतृक धन का नाश हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- भूरा कुत्ता पालें।

• गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

महादशा :- सूर्य
(25/11/2027 - 25/11/2033)

सूर्य की महादशा 25/11/2027 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 25/11/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य अष्टम भाव में अवस्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, राजकीय कृपा, साहस तथा क्रोध का प्रतिनिधित्व करता है जबकि अष्टम भाव अप्रत्याशित लाभ, छुपी प्रतिभा, आध्यात्मिक लक्ष्य तथा लाभ का सूचक है। अतः इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, साझेदारों से लाभ तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हागी।

स्वास्थ्य :

आपकी जीवन शक्ति में वृद्धि होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपको आपके मार्ग में आनेवाली सभी समस्याओं का सामना करने की शक्ति तथा उत्साह प्राप्त होगा। आप में प्रतिरोध की क्षमता प्रबल है। कभी-कभी आप सरदर्द, लू, प्रदाह आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इन सभी समस्याओं से बचाव के लिये आपको सन्तुलित आहार लेना चाहिए। सभी अतिशयताओं का परित्याग करें।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं ओर आपके साधन पर्याप्त हैं। फिजूल खर्ची से बचें अन्यथा आपका बैंक बैलेंस प्रभावित हो सकता है। आपको पैतृक अथवा अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। सट्टेबाजी और निवेश का परित्याग करें। आपको सेवा-अवकाश से लाभ, बोनस तथा ग्रैच्यूइटी की प्राप्ति हो सकती है। कुल मिलाकर आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी।

व्यवसाय :

आपको सफलता, यश ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। सूर्य की अष्टम भाव में स्थिति के कारण कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, किन्तु वे लाभदायक सिद्ध होंगे। आप किसी उच्च सरकारी पद पर आसीन होंगे क्योंकि आपमें प्रशासकीय क्षमता विद्यमान है। आप संस्थाओं, निगमों और अन्य संगठनों के प्रबन्धक पद के लिये अति उपयुक्त हैं। आप सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी-वैज्ञानिक सेवाओं का चयन अपनी जीवन वृत्ति के लिये कर सकते हैं। पेशेवर खेल भी लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। सेवारत व्यक्तियों को सफलता, आमदनी, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ की प्राप्ति होगी जबकि व्यापारियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको अपने विकल्पों के प्रति हठधर्मी नहीं होना चाहिए और अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिएं। अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो सकता है। आपके जीवन साथी को आर्थिक लाभ मिलेगें और उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आप कैसा व्यवहार करें यह आप पर निर्भर करता है। आपकी माता को सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा और बच्चों से सुख मिलेगा। आपके पिता की आध्यात्मिक कार्यों में रुचि हो सकती है। आपके छोटे भाई-बहनों को उनके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी, और मातृ-पक्ष से लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को जीवन-वृत्ति में

सफलता मिलेगी। आप स्वभाव से उदार तथा स्वामिभक्त हैं अतः आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी।

शिक्षा :

आप अपनी परीक्षाओं में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विद्युत-अभियंत्रण, भौतिकी, प्रशासनिक सेवा आदि में आपकी रुचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(25/11/2027 - 14/03/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/11/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 14/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य और ऊर्जा उत्तम रहेंगे। अगर किसी बीमारी से ग्रस्त हैं तो लाभ प्राप्त करेंगे। अचानक धन मिल सकता है। बीमे की रकम, सेवानिवृत्ति निधि, विरासत आदि से धन मिल सकता है। अध्यात्म, तंत्र-मंत्र आदि में रुचि बढ़ सकती है।

संतान अपने कार्य, विशेषकर शोध में प्रगति करेगी। जीवनसाथी को लाभ मिल सकता है। आपको भागीदारी, संघ या अनुबंध आदि से लाभ हो सकता है। पिता के लिए समय प्रतिकूल हो सकता है। माता के धन में वृद्धि होगी। छोटे भाई-बहनों का भाग्य मध्यम हो सकता है परंतु बड़े भाई-बहन सफलता प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य के लिए सामान्य सावधानियों का पालन करें। आंखों के रोग, ज्वर आदि कष्ट दे सकते हैं। अशुभ से बचने के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें और रविवार के दिन व्रत करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(14/03/2028 - 12/09/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 25/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 12/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप धन, जायदाद, वाहन आदि प्राप्त करेंगे। आप धन-धान्य से पूर्ण होकर प्रसन्न रहेंगे। आपके फैसलों पर आपकी माता का प्रभाव पड़ेगा। आप सुख-शांति और सब सुविधाओं से युक्त रहेंगे। वाहन की प्राप्ति संभावित है। आप मकान का निर्माण या वर्तमान मकान का नवीनीकरण करेंगे। जायदाद संबंधी गतिविधियां अधिक रहेंगी।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी। जीवनसाथी के व्यवसाय में बदलाव आ सकता है। सेवारत जातकों को लाभ होगा, मगर उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। आपके विरोधी अधिक हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। आपके पिता के भाग्य में अचानक परिवर्तन हो सकता है। आपका निवास खुशियों और शांति से भरपूर रहेगा। आपकी रुचि बागबानी में हो सकती है।

स्वास्थ्य आपका उत्तम रहेगा मगर खांसी से बचने के लिए एलर्जी वाले पदार्थों से दूर रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सोमवार के दिन व्रत रखें और सफेद वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(12/09/2028 - 18/01/2029)

आपकी सूर्य की महादशा 25/11/2027 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 18/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ प्राप्त होगा। साहस, प्रसन्नता और धन की वृद्धि होगी। व्यवसाय/कार्य, सरकार, मातहतों और शुभेच्छुओं से लाभ प्राप्त होगा। मुकदमें में विजय प्राप्त होगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धन सरलता से आएगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की मेहनत की कमाई में वृद्धि होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती हैं। छोटे भाई-बहनों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं। बड़े भाई-बहनों को सफलता मिलेगी। सेवारत जातक विरोधियों को परास्त कर देंगे। परामर्शदाता मेहनत से धन कमाएंगे। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे। आपके बच्चे सक्रिय और स्फूर्तिवान रहेंगे और पढ़ाई में प्रगति करेंगे। अगर वे सेवाकार्य में हैं तो प्रगति करेंगे।

मामूली व्याधियां जैसे बायां कान या बायें ऊपरी अंग के रोग, ज्वर, घाव आदि आपको परेशान कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(18/01/2029 - 13/12/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 18/01/2029 को प्रारंभ होकर 13/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। विरोधिओं और शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। मुकदमे में जीत होगी। यात्राएं होंगी, विदेश भी जा सकते हैं। अप्रत्याशित खर्चे बढ़ सकते हैं। कार्यों और प्रतिस्पर्धा में सफल रहेंगे। जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता को विदेशियों से संपर्क द्वारा लाभ होगा। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी। भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आएंगे, अप्रत्याशित घटनाएं घटेंगी, मगर धन का लाभ होगा। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, उनकी शिक्षा में उन्नति होगी। अगर वे सेवारत हैं तो घर से बाहर जा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो बहुत भाग्यशाली रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। व्यापारियों का समय भी उत्तम रहेगा। परामर्शदाताओं के प्रयास फलीभूत होंगे। राजनीतिज्ञ भी खूब उन्नति करेंगे।

फोड़ा, घाव, दांतों की मामूली समस्याओं के प्रति सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के

लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(13/12/2029 - 01/10/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 13/12/2029 को प्रारंभ होकर 01/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप धनवान, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। अनुबंधों से लाभ होगा। मुकदमें में विजय मिलेगी। विवाह संभव है। ससुराल से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन-धान्य से युक्त रहेंगे। लघु यात्राएं हो सकती हैं। कला और साहित्य में रुचि हो सकती है। सब प्रकार से धन मिलेगा, पुरस्कृत होंगे, इच्छाओं की पूर्ति होगी।

जीवनसाथी को समृद्धि मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; यात्राएं होंगी, सर्जनात्मक कार्यों में रुचि और सट्टेबाजी में लाभ संभावित हैं। उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपके पिता को धन की प्राप्ति होगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, निवेश से लाभ मिलेगा। माता की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी होगी। भाई-बहनों का समय समृद्ध रहेगा। उन्हें सफलता प्राप्त होगी। आपकी संतान वाक्शक्ति में पटु होगी और शिक्षा में प्रगति करेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे। व्यापारीवर्ग को यथास्थिति बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। पेट की शिकायतों, मधुमेह और मोटापे से बचाव करें। दुखों से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(01/10/2030 - 13/09/2031)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 01/10/2030 को प्रारंभ होगी और 13/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी धर्म और सेवा कार्य में रुचि होगी। छोटे भाई-बहनों का विवाह हो सकता है। पिता के साथ मधुरता बनाये रखने के लिए प्रयास करना होगा। संतान के साथ भी संबंध बिगड़ सकते हैं। इस अवधि में किये निवेश की समीक्षा सावधानीपूर्वक करनी होगी। आपकी संन्यास और योग में रुचि होगी। खर्चे अधिक होंगे, मगर आय भी बनी रहेगी।

जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे, धन प्रचुर होगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ होगा, उच्च पद प्राप्त करेंगे। माता को धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के विवाह हो सकते हैं या शिशु का जन्म संभव है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। परामर्शदाता स्पर्धा में विजयी रहेंगे। व्यापारियों को ठोस लाभ होगा।

कान और श्वसन तंत्र के रोगों से सावधान रहें। कष्ट से छुटकारे के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(13/09/2031 - 20/07/2032)

आपकी सूर्य की महादशा 25/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 13/09/2031 को प्रारंभ होकर 20/07/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदार के माध्यम से धन और जायदाद प्राप्त हो सकते हैं। आपकी किसी आध्यात्मिक शोध में रुचि हो सकती है। आपको सुख और सफलता की प्राप्ति होगी और शत्रुओं पर विजय होगी। उच्चाधिकारी सहयोग करेंगे। दूसरों की जायदाद और संपत्ति के प्रबंधन से सम्मान प्राप्त हो सकता है। परिवार से लाभ मिलेगा। दिया गया कर्ज़ वापस मिल जाएगा। व्यापार में अच्छी कमाई होगी। वृहत्तर परिवार के सदस्यों से सुख मिलेगा।

जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की मदद से व्यापार में धन कमाएंगे। पिता की अवांछित यात्राएं हो सकती हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। माता को निवेश से लाभ होगा। भाई-बहनों को शत्रुओं पर सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय में बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। आपको निवेश से लाभ होगा।

सेवारत जातकों को कठोर परिश्रम करना होगा, सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा और विचारों का आदान-प्रदान उत्तम रहेगा। व्यापारी जातक अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, नये भागीदार मिल सकते हैं। परामर्शदाताओं के लाभ में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली व्याधिओं, पेट की गड़बड़ी, चक्कर आने, स्नायुतंत्र के रोगों से बचें। कष्टों से बचने के लिए बुध के मंत्र का जाप करें और हरी वस्तुओं का दान दें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(20/07/2032 - 24/11/2032)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 20/07/2032 को आरंभ होकर 24/11/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में यात्रा, निवास में परिवर्तन आदि की संभावना है। आपकी अध्यात्म और गूढ़ विद्या में रुचि हो सकती है। शत्रु सिर उठा सकते हैं। परंतु अंततः आप विजयी रहेंगे। भलाई के कार्य करेंगे। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। हिम्मत, उत्साह और स्वास्थ्य उत्तम रहेंगे। पालतू जानवरों से खुशी मिलेगी। मामापक्ष के लोग सहायता करेंगे।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी; वाहन सुख रहेगा। माता भाग्यशाली रहेंगी, उनकी यात्राएं होंगी, अध्यात्म में रुचि रहेगी। भाई-बहनों की कार्यस्थल पर व्यस्तता बढ़ेगी, धन का लाभ होगा। आपकी संतान अपने क्रियाकलापों में कुछ परिवर्तन की इच्छुक होगी। अगर वे नौकरी में हैं तो अप्रत्याशित धन का लाभ होगा, परिवर्तन होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा, वांछित कार्य पूरे होंगे, लाभ और सम्मान प्राप्त होंगे। व्यापारियों को धनलाभ होगा। परामर्शदाताओं की यात्रा होगी, सहकर्मियों से सहायता प्राप्त होगी।

बायें कान या पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। नेत्रों की देखभाल जरुरी है। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की आराधना करें और श्वान को भोजन दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(24/11/2032 - 25/11/2033)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप लोकप्रिय और सफल होंगे। धनार्जन उत्तम होगा। व्यापार में लाभ और प्रगति का संकेत है। माता से बहुत लाभ होगा। तीर्थयात्रा कर सकते हैं। आपको अचल संपत्ति, वाहन और मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी को भूमि, जायदाद, वाहन, आभूषण आदि प्राप्त होंगे। आपके पिता का प्रभाव बढ़ेगा, उत्तम भोजन-वस्त्र नसीब होंगे। माता को घरेलू सुख और साझेदार से लाभ होगा। भाई-बहनों के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी, कार्य में परिवर्तन हो सकते हैं। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धा में सफलता मिलेगी, विरोधियों पर विजय होगी, मामाओं से लाभ मिलेगा, उन्हें नौकरी मिल सकती है या बेहतर नौकरी में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को सफलता और लाभ प्राप्त होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे; प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। हाथ-पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

महादशा :– चन्द्र
(25/11/2033 - 25/11/2043)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 25/11/2033 को आरम्भ और 25/11/2043 को समाप्त होगी।

चन्द्र मानसिक शान्ति और सुख का कारक है इसलिए दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति, समृद्धि तथा मानसिक शांति की प्राप्ति होगी। इस अवधि में आप पूरी तरह सक्रिय रहेंगे, आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और धर्म-ईश्वर की ओर आपका झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुखी, शान्तिपूर्ण व उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों और दैनिक गतिविधियों को पूरे उत्साह के साथ पूरा करेंगे।

किसी बड़े रोग अथवा किसी अप्रिय दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

इस अवधि में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। गाड़ी और जमीन-जायदाद के क्रय की सम्भावना है। आपके बैंक बैलेन्स में पर्याप्त वृद्धि होगी और आप सुख-सुविधा के साधनों पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

नये विषयों और कार्यों की खोज में आपकी रुचि होगी। फलस्वरूप आपकी रचनात्मकता में वृद्धि होगी जिसकी आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे। आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति मज़बूत होगी और सम्मान में वृद्धि तथा पद में उन्नति होगी। आपको यश और ख्याति प्राप्त होगी और आपका सर समाज में ऊँचा रहेगा। आपकी कुण्डली में यात्रा का संकेत है जो आपकी भलाई के लिए होगी। आपको यात्रा के अनेक अवसर मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक है जो परिवार, सम्पत्ति, माता तथा वाहन का द्योतक है। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। सगे-संबंधियों तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। मामा या नाना के साथ भी आपका संबंध मधुर रहेगा और उनसे लाभ मिलेगा।

इस दशा के दौरान आपके मामा को भी लाभ होगा तथा संभव है कि आपके और आपके मामा के बीच परस्पर मधुर संबंध के कारण आप दोनों को लाभ होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के भाव का कारक होने और अपने ही भाव में स्थित होने के कारण चन्द्र

आपकी शिक्षा में वृद्धि करेगा। आप किसी भाषा अथवा साहित्य का अध्ययन कर सकते हैं। ज्योतिष अथवा खगोल जैसे दैविक विषय का अध्ययन भी कर सकते हैं क्योंकि इस दशा के दौरान आपकी रुचि ज्ञान की प्राप्ति अथा साहित्य में होगी।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(25/11/2033 - 25/09/2034)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 25/11/2033 को प्रारंभ होकर 25/11/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/11/2033 को प्रारंभ होकर 25/09/2034 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी राशि में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

मन के कारक चंद्र के चतुर्थ भाव में स्थित होने से आपके माता-पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचल संपत्ति और वाहनसुख का योग है। नये आवास या संपत्ति का उपयोग कर सकते हैं या नया वाहन खरीद सकते हैं। शैक्षणिक योग्यता में वृद्धि के लिए किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र के 11000 जाप करें। केवल भावनाओं में बहकर कार्य न करें, बुद्धि का प्रयोग करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(25/09/2034 - 26/04/2035)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 25/11/2033 को प्रारंभ होकर 25/11/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 25/09/2034 को प्रारंभ होकर 26/04/2035 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। इसे लाभ भाव भी कहते हैं। मंगल ऊर्जा और अचल संपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 2,5,6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा के दौरान आपके भाषणों में ओज रहेगा, मगर आप क्रोधी हो सकते हैं। आप धनवान बनेंगे और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। आप साहसी होंगे और उच्चवर्ग में धाक होगी। धन प्राप्ति की आपकी लिप्सा संतृप्त नहीं होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र का जाप 108 बार करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(26/04/2035 - 25/10/2036)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 25/11/2033 को प्रारंभ हुई और 25/11/2043 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18

मास रहेगी। आपके लिए यह 26/04/2035 को प्रारंभ होकर 25/10/2036 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अंतर्दशा के दौरान शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं। मानसिक और शारीरिक रुप से बीमार हो सकते हैं। प्रत्येक कदम संभल कर रखें, क्योंकि किसी कांड में फंस सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें और 7 (रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(25/10/2036 - 24/02/2038)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 25/11/2033 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 25/10/2036 को प्रारंभ होकर 24/02/2038 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरे का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। सप्तम में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1 और 3 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है और इनके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है।

इस अवधि में आप नीतिज्ञ और दयालु होंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से लाभ होगा। दूसरों की भावनाओं की कद्र करेंगे। तीथयात्राएं संभव हैं। धर्म में रुचि रहेगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 (रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(24/02/2038 - 25/09/2039)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 25/11/2033 को प्रारंभ हुई और 25/11/2043 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 24/02/2038 को प्रारंभ होकर 25/09/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर

दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप साहसी और धनी होंगे, मगर कुछ एकांतप्रिय हो सकते हैं। उच्चाधिकारी आपको सम्मानित करेंगे। स्थानीय संस्थाओं के अध्यक्ष आदि बन सकते हैं। बहुत से व्यक्तियों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता बाधाओं को पार करने के बाद मिलेगी। मन उदास रह सकता है, पर कुछ समय बाद सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा नीलम शनिवार के दिन पूजा के बाद दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में अंगूठी को कच्चे दूध या गंगाजल से धोने के बाद शनि का वैदिक मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(25/09/2039 - 24/02/2041)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 25/11/2033 को प्रारंभ हुई थी और 25/11/2043 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 25/09/2039 को प्रारंभ होकर 24/02/2041 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। इस अवधि में आप सुगुणसंपन्न रहेंगे। नम्रता और सौम्यता के लिए प्रशंसित होंगे।

धन-संपदा का आगमन होगा। यह विरासत में भी प्राप्त हो सकती है। ज्ञान-विज्ञान में प्रगति करेंगे। छात्रवृत्ति भी प्राप्त हो सकती है। दीर्घायु होंगे, मगर स्वास्थ्य कुछ नरम रहेगा। सावधानी आवश्यक है अन्यथा कोई कठिन रोग हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि करने के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(24/02/2041 - 25/09/2041)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 25/11/2033 को प्रारंभ हुई ओर 25/11/2043 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 24/02/2041 को प्रारंभ होकर 25/09/2041 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। केतु और राहु छायाग्रह हैं जिनकी कोई राशि नहीं होती। वास्तव में

वे चंद्रमा के दो पात हैं। मनुष्य के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस अवधि में आपका मष्तिष्क बेचैन हो सकता है; आप इधर-उधर भटक सकते हैं। विदेश भी जा सकते हैं। गरीब लोगों की सहायता करेंगे। अपने स्तर के लोगों के साथ व्यवहार में सावधानी की आवश्यकता है। भटकने के कारण संचित धन में कमी आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(25/09/2041 - 27/05/2043)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 25/11/2033 को प्रारंभ होकर 25/11/2043को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/09/2041 को प्रारंभ होकर 27/05/2043 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि, धन और समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आपका प्रभाव रहेगा। स्त्रियों से संबंधित उत्पाद में लाभ होगा। व्यापार में आप प्रवीण होंगे। उपचार करने की शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। धर्मगुरुओं और संतों का सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(27/05/2043 - 25/11/2043)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 25/11/2033 को प्रारंभ होगी और 25/11/2043 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 27/05/2043 से प्रारंभ होकर 25/11/2043 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। सूर्य सर्वाधिक बली ग्रह है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। वाक्शक्ति प्रबल रहेगी, परंतु आर्थिक तंगी और निराशा की आशंका है। सट्टेबाजी या अन्य माध्यम से अचानक लाभ हो सकता है।

महादशा :- मंगल
(25/11/2043 - 25/11/2050)

मंगल की महादशा 25/11/2043 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 25/11/2050 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्योग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो

सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी। आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(25/11/2043 - 22/04/2044)

आपके लिए मंगल की महादशा 25/11/2043 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 25/11/2043 को प्रारंभ होकर 22/04/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धनी, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। जीवन में खुशियां रहेंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। संतान सुखकारी होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप शक्तिशाली और सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा, मगर खर्चे भी बढ़ेंगे। कटु वचन बोलने से बचें।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा; जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम करना होगा; उन्हें छोटी-मोटी बीमारियों से बचाव करना चाहिए। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। भाई-बहन धन कमाएंगे; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी; परीक्षा में सफल होंगे, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, हाथ-पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। मंगल के गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(22/04/2044 - 11/05/2045)

आपके लिए मंगल की महादशा 25/11/2043 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 22/04/2044 को प्रारंभ होकर 11/05/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके धन और सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। शारीरिक और मानसिक कार्यक्षमता उत्तम रहेगी; सब बाधाएं पार करेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके कर्मचारी या मातहत वफ़ादार रहेंगे। अगर आप नौकरी करते हैं तो बहुत लाभ होगा। खर्चे बढ़ सकते हैं। पराविद्या या समाजकार्य में रुचि ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं या विदेशियों से संपर्क बढ़ सकता है। आपके पिता कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे। आपकी माता लक्ष्य को प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहन

भौतिक सुख-साधन क्रय करेंगे, उनके जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी संतान अगर शिक्षारत हैं तो घर से दूर जा सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यो में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता सुखी रहेंगे। व्यापारियों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं; विदेश से लाभ संभव है।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। चोट आदि से बचाव करें। रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्तम रहेगी। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार को शिवजी की पूजा भैरव रूप में करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

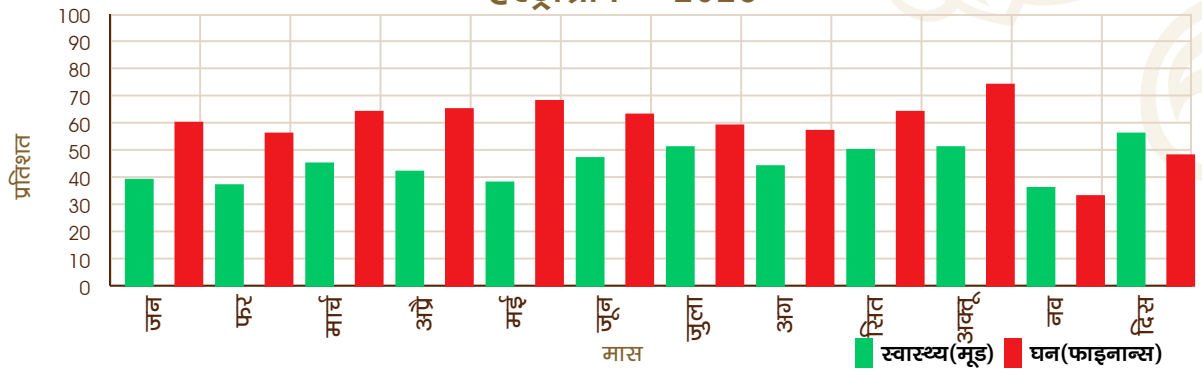

एस्ट्रोग्राफ - 2026

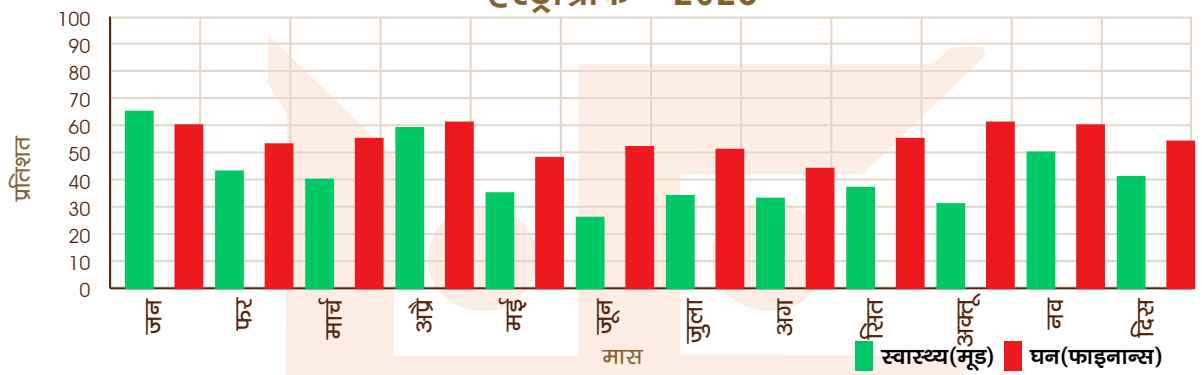

एस्ट्रोग्राफ - 2027

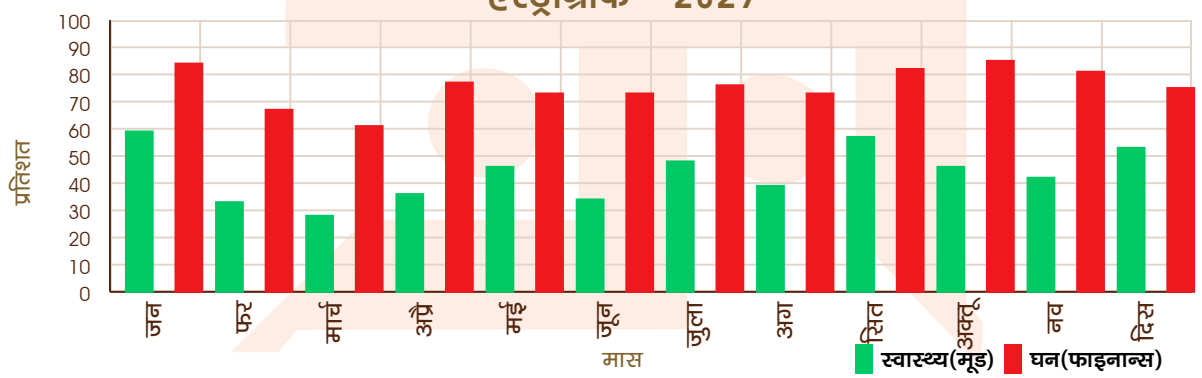

एस्ट्रोग्राफ - 2028

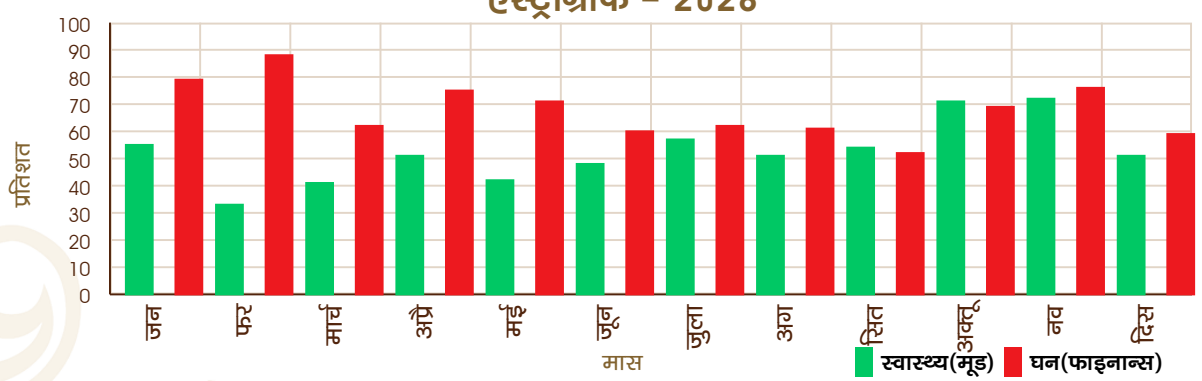

एस्ट्रोग्राफ - 2029

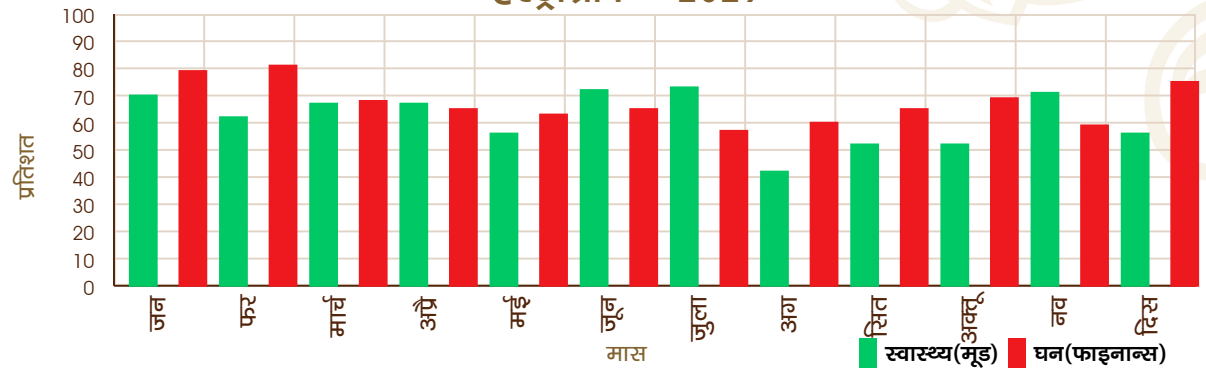

एस्ट्रोग्राफ - 2030

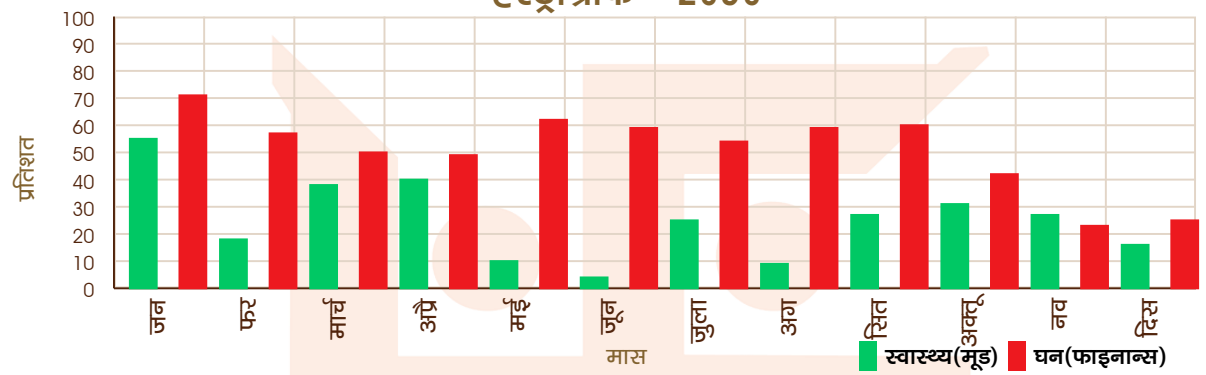

एस्ट्रोग्राफ - 2031

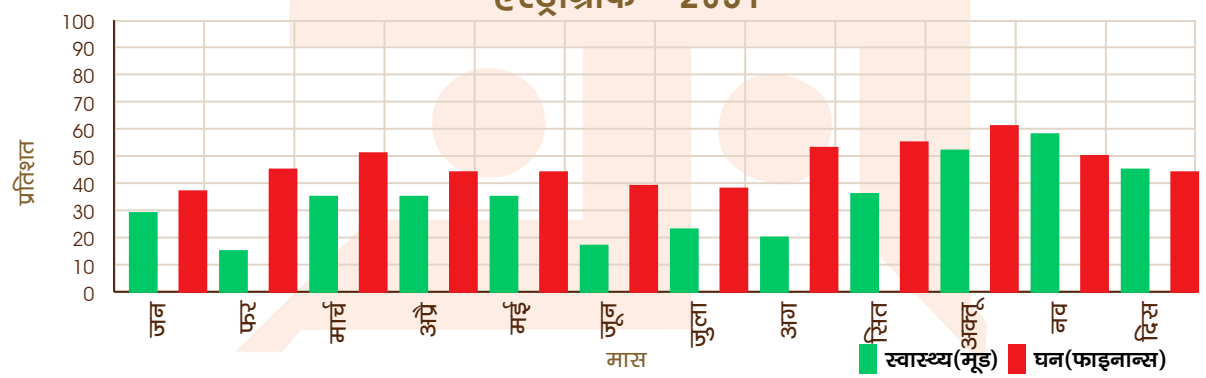

एस्ट्रोग्राफ - 2032

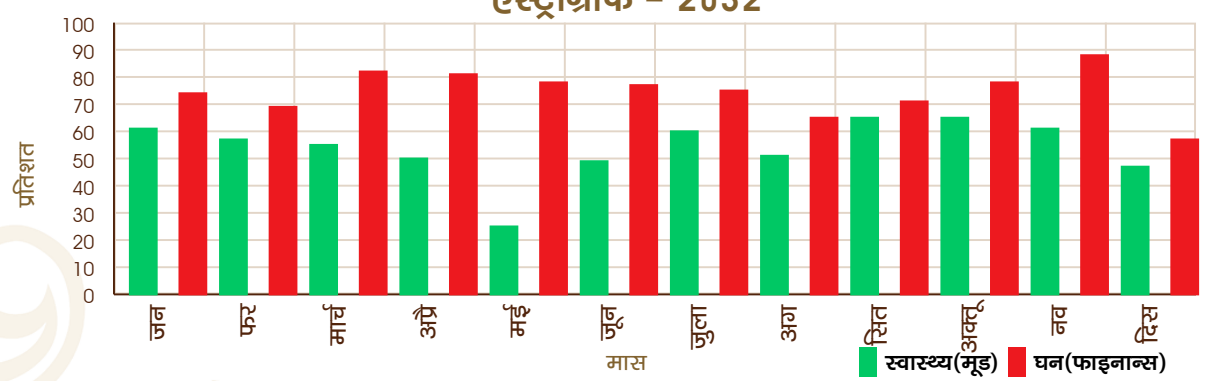

एस्ट्रोग्राफ - 2033

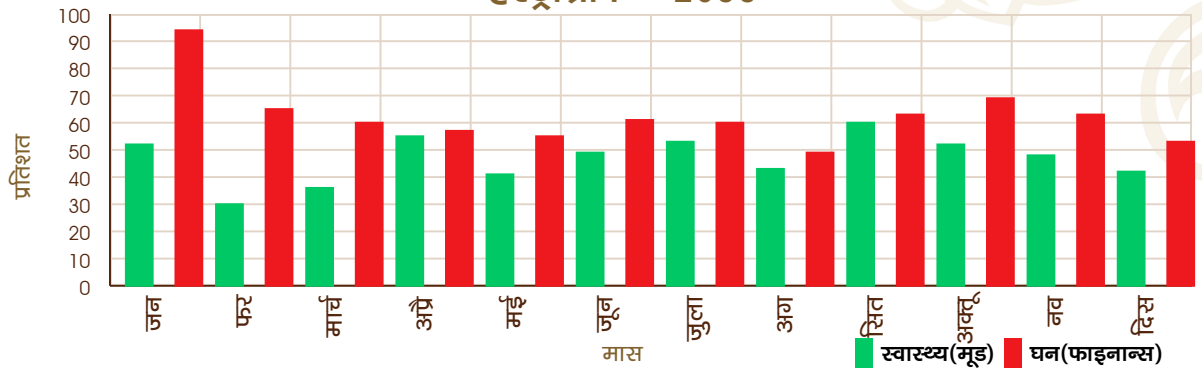

एस्ट्रोग्राफ - 2034

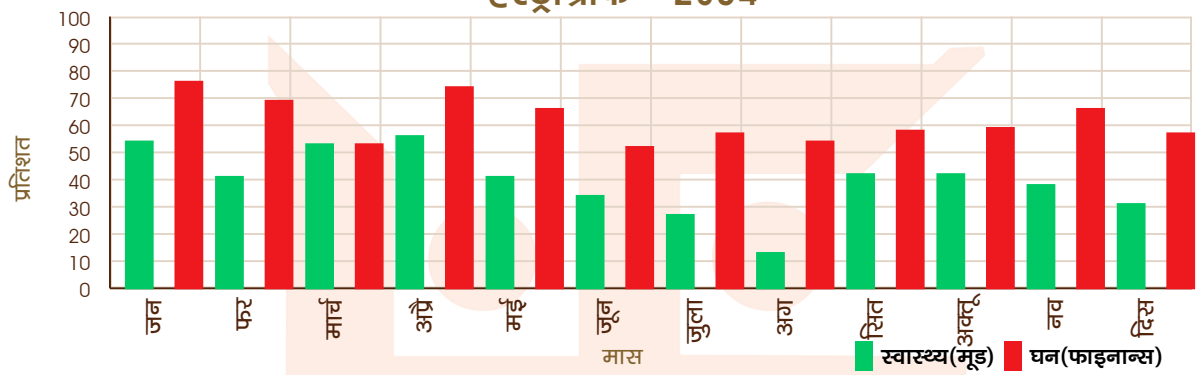

एस्ट्रोग्राफ - 2035

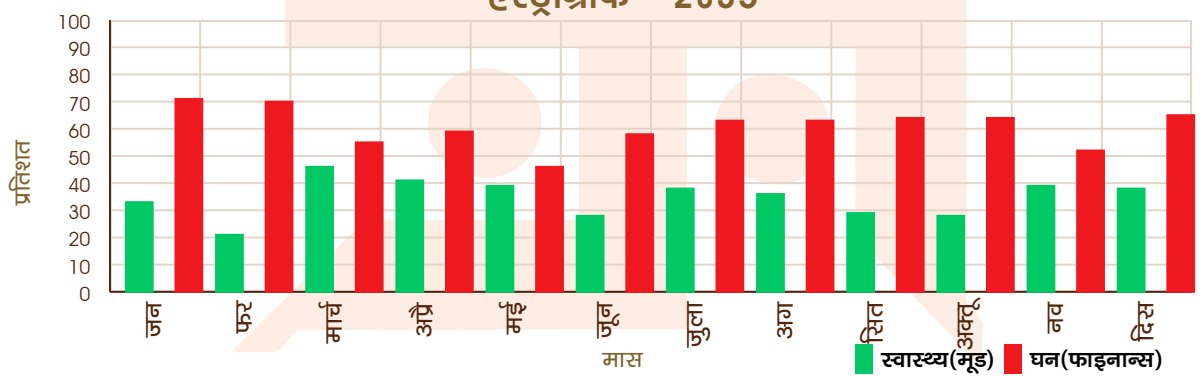

एस्ट्रोग्राफ - 2036

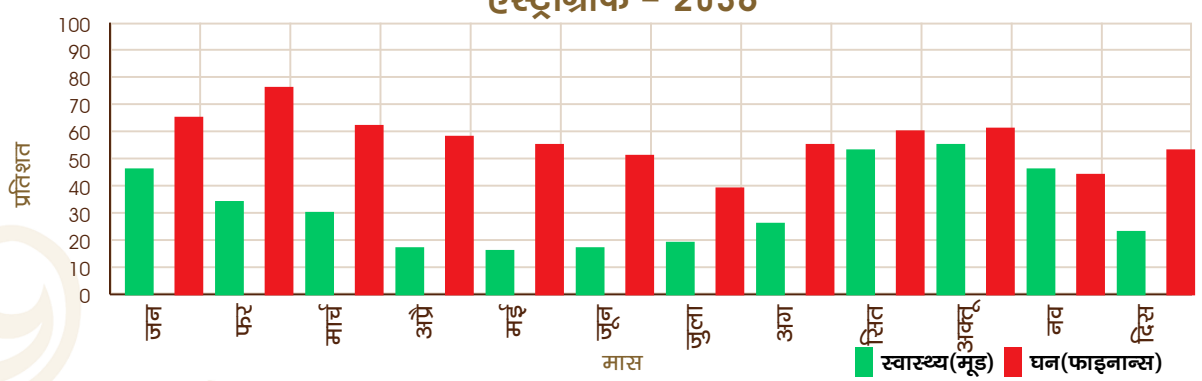

एस्ट्रोग्राफ - 2037

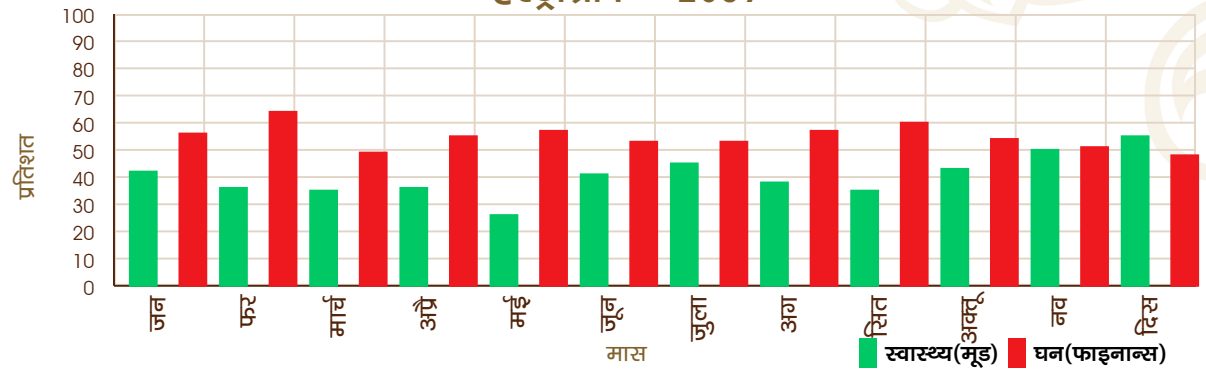

एस्ट्रोग्राफ - 2038

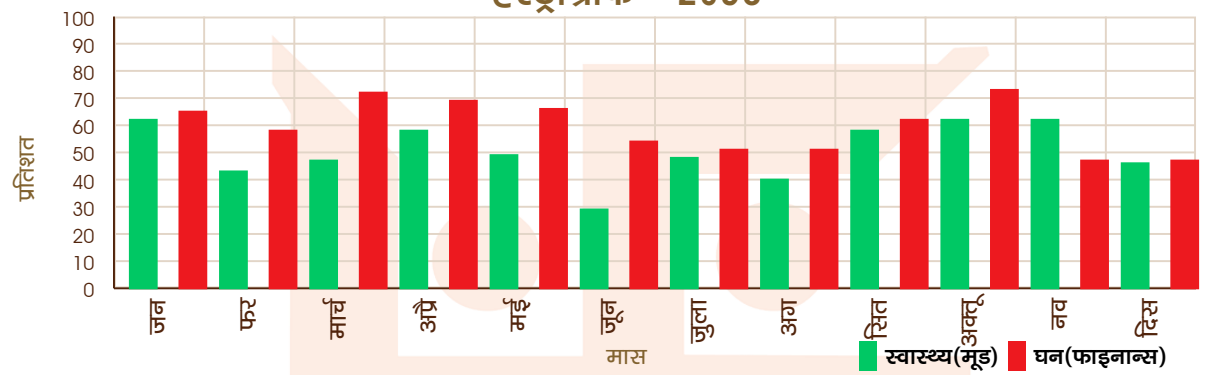

एस्ट्रोग्राफ - 2039

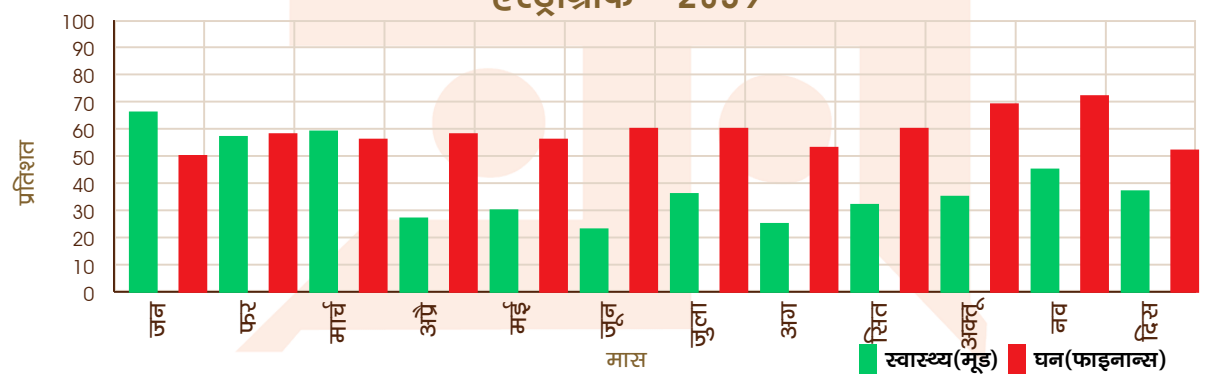

एस्ट्रोग्राफ - 2040

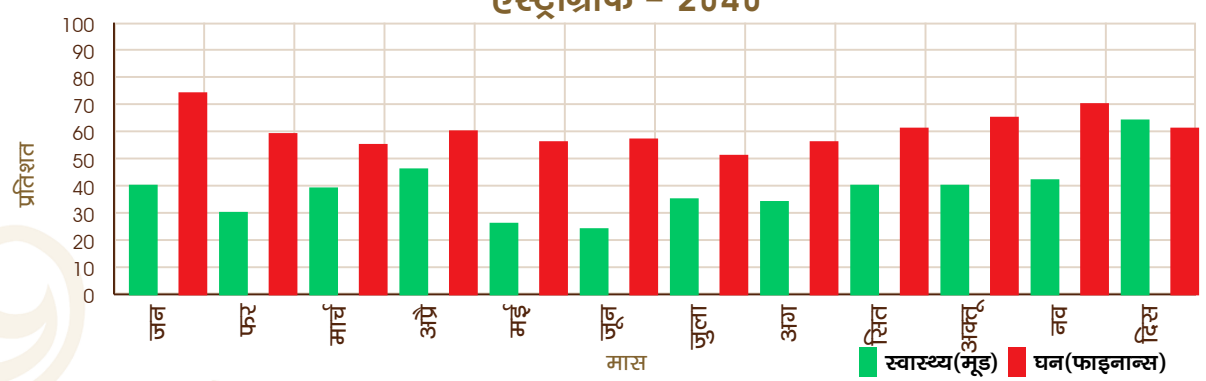

एस्ट्रोग्राफ - 2041

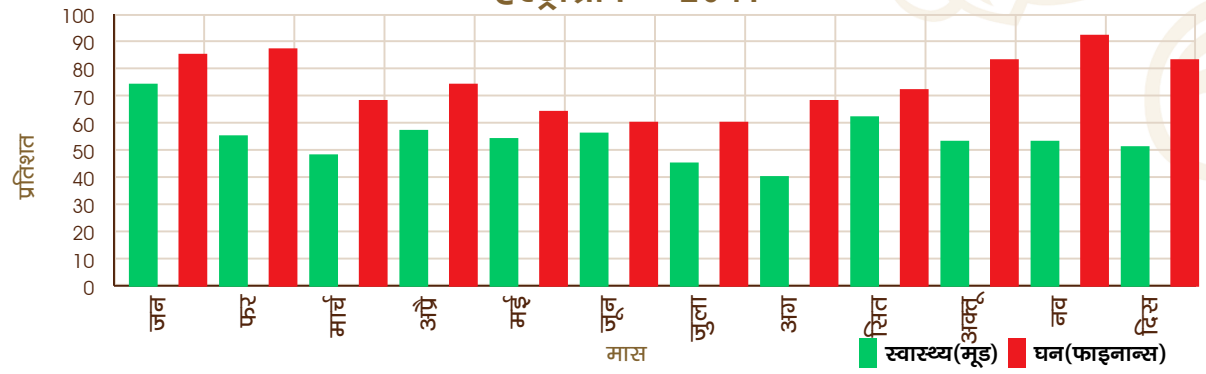

एस्ट्रोग्राफ - 2042

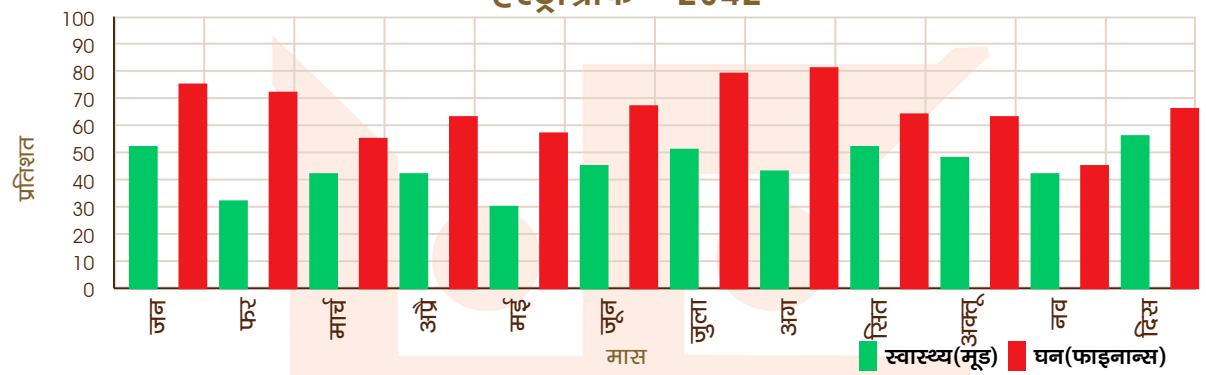

एस्ट्रोग्राफ - 2043

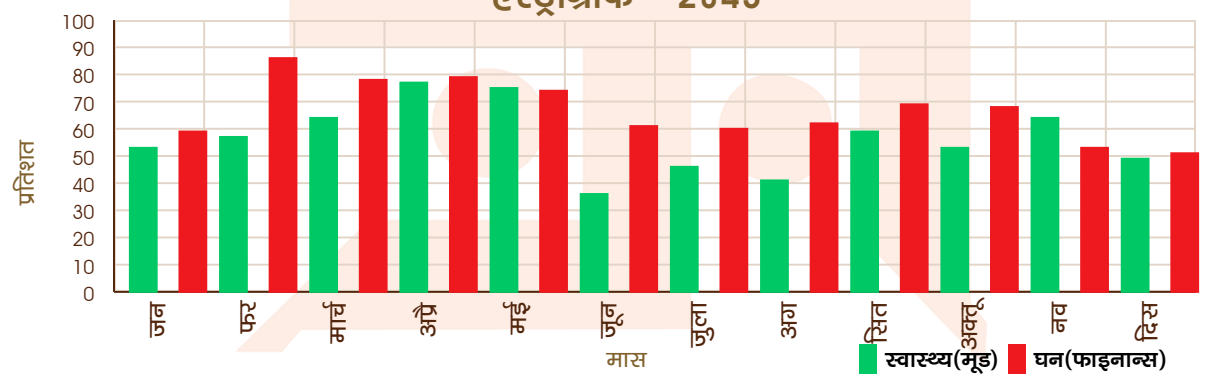

एस्ट्रोग्राफ - 2044

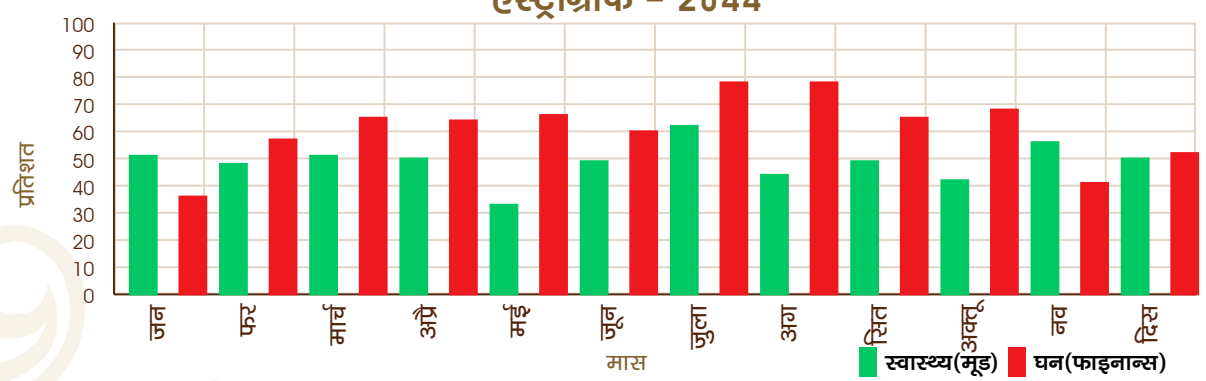

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नपान्नविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।
।। फलदीपिका।। अ.6/श्लोक 44, 46।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्भिरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वदारा में आसक्त योग

गुरौ कलत्रे स्वदारसक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-2।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमभाव में गुरु स्थित हो तो जातक अपनी स्त्री में आसक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मात्र अपने जीवनसाथी में आसक्त रहेंगे।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,राहु — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,चंद्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 303-8 ।।

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र पाप ग्रह के साथ हो अथवा नीच का हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह हो। यह संभाव्य है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।